मूल्य-20

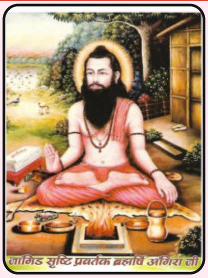

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN

अंगिराऽसि जंगिडः

वर्षः 119, अंकः 02, फरवरी-2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

26 जनवरी को देश के 77 वें, गणतंत्र दिवस के अवसर पर, महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने सूरत में, राष्ट्रीय ध्वज फहराया और राष्ट्रीय गान गाया।

उन्होंने इस अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि, गणतंत्र दिवस समानता, न्याय और समानता के मूल सिद्धांतों पर आधारित है और इस राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव के प्रतीक, गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश, उन असंख्य वीर, देशभक्तो के महान त्याग और बलिदान का ऋणी है, जिन्होंने देश की एकता अखंडता को बनाए रखने के लिए, आजादी के परवानों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया, ऐसे वीर शहीदों के प्रति मैं, श्रद्धापूर्वक वंदन और कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

प्रधान रामपाल शर्मा।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की महिला प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश और जिला सभा इंदौर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न

शुभलाभ GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT & SHOPS

शुभलाभ VINTAGE VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE VINTAGE by शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living & Penthouse

शुभलाभ SQUARE
Showrooms | Corporate Entertainment

शुभलाभ GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

25 जनवरी 2026, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की महिला प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश और जिला सभा इंदौर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह धूम-धाम के साथ सम्पन्न

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

With its existence over three and half decades, we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

Our Management Team

Rampal Sharma | Deepak Sharma | Jagmohan Sharma | Amith Sharma

OUR STRENGTHS
- QUALITY OF WORK
- SERVICE COMMITMENT
- ON TIME COMPLETION
- PRICING

Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE
- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE
- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL

Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients

FLYING MACHINE, U.S. POLO ASSN., AÉROPOSTALE, ARROW, LP LOUIS PHILIPPE, PETER ENGLAND, NAUTICA, GAP, trueblue, GANT, Allen Solly, VAN HEUSEN, lifestyle, max, homecentre, ZOYA, TANISHQ, TANEIRA, TITAN, Helios, fastrack, TITAN eyeplus, Mia, MELORRA, CENTRO, BIRKENSTOCK, THIRD WAVE COFFEE, SWAYAMVAR, SHOPPERS STOP, BLUESTONE, S3EAUTY, SWISH, TASVA, Manyavar

''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित पंजीकृत सं. एस.-27/1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाष:- 9990070023

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड'' - 09844026161

महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड'' - 09414003411

सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड'' - 09814681741

सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''- 08140229679

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता	रुपये
प्लैटिनम सदस्य	-1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	- 51,000/-
रजत सदस्य	- 25,000/-
विशेष सम्पोषक	- 21,000/-
सम्पोषक सदस्य	- 11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	- 2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	- 500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	- 240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	- 20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182 , (IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 25000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्त्ता से अनुरोध है कि जमापर्ची की काउण्टर फाईल मय सम्पूर्ण विवरण (पाने वाले का नाम **''अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा''** अवश्य लिखें) सहित महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें तथा प्रत्येक लेन-देन पर 60/- रूपये बैंक चार्जेज के रूप में अतिरिक्त जमा करायें, अन्यथा महासभा उस कार्य को करने में असमर्थ रहेगी। क्योंकि बैंक चार्जेज का आर्थिक बोझ महासभा पर पड़ता है। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी में दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

अरूण कुमार (अनिल जांगिड)
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553

॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अनुक्रमणिका

03. महासभा दिल्ली की महिला प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश.चित्रावली
07. संपादकीय...
09. प्रधान की कलम से...
11. हनुमान प्रसाद जांगिड, निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए।
13. गणतंत्र दिवस पर सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने बादली में
14. जिला सभा कोटा की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण और.
16. महिला प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश की त्रैमासिक बैठक और..
19. रंगो के त्यौहार होली और धुलेंडी पर हार्दिक बधाई...
21. देश के 77वें गणतंत्र दिवस के ... पर प्रधान रामपाल शर्मा
22. गुजरात प्रदेश सभा की प्रथम त्रैमासिक बैठक ....
24. गुजरात जिला सभा की सूरत का शपथ ग्रहण समारोह..
25. सुखदेव जांगिड ने राजस्थान में 60 हजार करोड़ के पूंजी.
28. रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के आश्वासन के बाद.....
29. हिसार की सुमन जांगिड को हरियाणा प्रदेश महिला...
30. नाशिक में 2027 में लगने वाले सिंहस्थ कुंभ मेले की..
32. भगवान विश्वकर्मा : सृष्टि के शिल्पकार और श्रम-संस्कृति
33. इस जीवन में अपनेपन और अहम को मिटा देना ही -
34. भगवान शिव की आराधना का प्रमुख दिन है..शिवरात्रि.
35. जीवन में भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा और विश्वास..
36. 13 फरवरी को राष्ट्रीय महिला दिवस पर अन्त:करण से.
37. असीम प्रतिभा का धनी निखिल जांगिड ने अपने जज्बे..
39. एक कारपेंटर की बेटी मन्नु जांगिड ने, स्कूल प्रतियोगिता
40. झज्झर के रक्षित जांगिड, पहले प्रयास में ही लेफ़्टिनेंट..
41. राजकोट की नव्या जांगिड ने कार्ड मेकिंग व स्केचिंग में..
42. जांगिड समाज क्रिकेट प्रतियोगिता में बाड़मेर की टीम..
43. अहमदाबाद में भी भगवान श्री विश्वकर्मा का जन्मोत्सव.
44. दुर्ग में विश्वकर्मा जयंती का उत्सव मनाया गया...
45. राजस्थान के पोकरण में भगवान विश्वकर्मा की जयंती ..
46. नीमच में विश्वकर्मा जन्मोत्सव पर विश्वकर्मा की भक्ति में.
47. जांगिड ब्राह्मण समाज समिति ट्रस्ट गांधीधाम द्वारा..
48. शरीर को जिंदा रखने के लिए भोजन पर ध्यान देना..
49. रामेश्वर ज्योतिर्लिंग और देश के चार धामों में विख्यात
52.अनुकरणीय मिसाल - बिना दहेज एवं वैदिक मंत्रोचार...
53. महासभा के एक लाख रुपये के प्लैटिनम ..
59. शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रुपये के..
60.वैवाहिक विज्ञापन..
61.17 जनवरी को कोटा जिला सभा कार्यकारिणी.चित्रावली

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)
शुभ लाभ ग्रुप
कृष्णा इंटीरियर
भारत व्हील
शर्मा एंड कंपनी
भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्ववानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6) अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

- सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सम्पादकीय - -------

विश्वास वह अंकुरित बीज है, जिसको आत्मसात करके, हर असम्भव कार्य को सम्भव बनाया जा सकता है।

सम्पादक, राम भगत शर्मा।

जीवन में आत्मविश्वास, निश्चय और दृढ़ संकल्प वह रामबाण रुपी दवा है, जिनका सत्यनिष्ठा पूर्वक तरीके से पालन करने से ही जीवन का कोई भी कठिन निर्धारित लक्ष्य हासिल किया जा सकता है और आत्मविश्वास इस जीवन का वह अंकुरित बीज है, जिसके पुष्पित और पल्लवित होने पर आनन्द और इच्छा पूर्ति के फल लगते हैं और **इन फलों के रूप में ही, सफलता का रहस्य छिपा हुआ है और निश्चय और आत्मविश्वास को आत्मसात करके ही, जीवन में हर असंभव कार्य को, संभव किया जा सकता है।**

इस जीवन की यात्रा में, सबसे पहला मूल मंत्र है कि आत्मविश्वास और भरोसा और **जिसका, अपने ऊपर खुद पर भरोसा और विश्वास होगा तो, रास्ते में आने वाली सभी विघ्न बाधाएं स्वयं ही, तिरोहित होने लगती हैं और सफलता के मार्ग अपने आप ही खुलने लगते हैं। कोई भी काम करने से पहले अपने आप में आत्मविश्वास पैदा करना परमावश्यक है।** लेकिन बीच में आने वाली संदेह की दीवार, हमारा ध्यान लक्ष्य से विचलित कर सकती है और इसके साथ ही संदेह और अविश्वास की ऊर्जा भी, कई बार ध्यान बिखेरती है, इसके विपरित, **विश्वास की ऊर्जा जीवन में एक दूसरे के साथ जोड़ने का काम करती है। इसीलिए कहा गया है कि अन्त:करण आत्मविश्वास का प्रेरणा स्थल है, जोकि अनुभूत है तथा इस जीवन में उस आत्मविश्वास की आत्मानुभूति की जा सकती है।**

जैसे सूर्य की किरणों की ऊर्जा से भरपूर होकर, पौधा खिल उठता है, लेकिन वह सूर्य कि किरणों के समक्ष झुकता है, वैसे ही हमारी आत्मा, आत्मविश्वास की ऊर्जा में खिलती उठती है। इसलिए जिस व्यक्ति ने अपने **जीवन में आत्मविश्वास को अपना आधार बना लिया है और आत्मविश्वास रखना सीख लिया है तो, वह सफलता के नजदीक है क्योंकि, उसने मुसीबत और व्यवधान रुपी पर्वत को पार कर लिया है।** इसलिए कहा गया है कि **आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प में , वह असीम और अपार शक्ति है, जो नियति का भी रास्ता बदल देने की शक्ति रखता है।** आपको बस अपने आत्मविश्वास के साथ मन से एक संकल्प लेना होगा कि और कहना होगा कि **मैं सक्षम और समर्थ हूँ और आप देखेंगे कि उसी समय से आपके भीतर चमत्कार होना शुरू हो जाता है। इस आत्मविश्वास के सफर में, जो आपको आता भी नहीं है और जिसमें आप निपुण और पारंगत नहीं है, तो भी उसी आत्मविश्वास के कारण ही, आपकी चेतना ऊर्जा से अलंकृत होने लगती है और उस असंभव कार्य में आप निपुण होने लगते हैं और यही आत्मविश्वास की असली ताकत और परिभाषा है।** इसलिए जीवन में आप किसी भी क्षेत्र में आशातीत सफलता हासिल करना चाहते हैं तो **उस पहाड़ रुपी लक्ष्य को हासिल करने के लिए, अपने आत्मविश्वास को ही अपना हथियार बनाकर आगे बढ़ना चाहिए, यह दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास ही वह मूल मंत्र है, जो सफलता का असली मार्ग प्रशस्त करती है।** सफलता हासिल होने से आत्म संतुष्टि के साथ ही आत्मा को भी सुखानुभूति प्राप्त होती है।

लेकिन इस जीवन में आत्मविश्वास हासिल करने का मार्ग क्या है?, वह कौन सा मंत्र है, **जिसका उच्चारण करने और आत्मसात करने से, आत्मविश्वास की दीवार पर चढ़ कर सफलता हासिल की जा सकती है। अगर एक शब्द में इसका उल्लेख करना है तो, ईश्वर पर अगाध आस्था और अटूट विश्वास करने से ही यह मंजिल हासिल की जा सकती है। इस जीवन में जिनको भी आत्मविश्वास की तलाश हो, वह बाकी जो भी विधि अपनाए, पर सबसे सरल और सहज विधि है, उस परमपिता परमात्मा पर, भरोसा रखते हुए आगे बढ़ना होगा।** इस जीवन की आत्मविश्वास ही सबसे बड़ी पूंजी और दौलत है। लेकिन आज के इस भौतिकवादी युग में अधिकांश लोग दौलतमंद होना चाहते हैं तो, यह अच्छी बात है, लेकिन **जिनको इस जीवन में धन और वैभव की प्राप्ति हो जाए तो वह सौभाग्यशाली हैं, लेकिन जिन लोगों के पास धन और संपत्ति की कमी है, तो वह अपने जीवन में आत्मविश्वास की संपत्ति तो जरूर ही एकत्रित कर सकते हैं।**

इस मानव जीवन में, आध्यात्मिकता के माध्यम से आत्मविश्वास हासिल करने के लिए कुछ ऐसे साधन उपलब्ध हैं, जो इस दुनिया के दूसरे देशों में बहुत ही कम उपलब्ध हैं और इनमें सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं, **हमारे देवस्थान हैं, जिनको देखकर आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार अपने आप ही होने लगता है। दिसम्बर 2025 में, अयोध्या में राम मंदिर पर ध्वजारोहण हुआ है वह हमारी आस्था और आत्मविश्वास का ही प्रतीक है।** आज करोड़ों लोग अदृश्य आस्था के साथ, विभिन्न देवस्थानों पर जा रहे हैं, **मैं भी अपनी अर्धांगिनी और बेटे के साथ 17 जनवरी को रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करके आया हूँ। मैं भी रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग धाम से आत्मविश्वास और आध्यात्मिकता का प्रसाद लेकर लौटा हूँ।** आत्मविश्वास का सबसे पहला मंत्र है, दृढ़ **संकल्प के साथ अपने को मजबूत करना। इसलिए इस जीवन में, आत्मविश्वास हासिल करने के साथ आगे बढ़ने के लिए संकल्प शक्ति का होना सबसे परमावश्यक है, क्योंकि संकल्प शक्ति ही वह दृढ़ निश्चय है, जिससे आत्मविश्वास पैदा होता है कि "यह काम तो हर हाल में करना ही है इसके लिए चाहे कितना भी प्रयास क्यों न करना पड़े।"**

इस जीवन में आत्मविश्वास के माध्यम से ही सफलता हासिल करने के लिए यह जरुरी नहीं है कि यह कार्य छोटा है या बड़ा है। **इसमें एक व्यक्ति की सकारात्मक सोच और उसका विस्तृत दृष्टिकोण ही जरूरी है, जो जीवन में उसकी सफलता का रास्ता प्रशस्त करती है और इसके लिए, जीवन के हर क्षेत्र में आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।** आत्मविश्वास एक ऐसी अमरबेल है, **जिसपर चढ़कर असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। आत्मविश्वास ही, हमारा मार्गदर्शन करता है तथा सत्यपथ पर चलने की प्रेरणा भी देता है।** इसलिए जीवन के इस रहस्य को समझने के लिए तो,आत्मविश्वास का सहारा लेना ही पड़ेगा। मानव जीवन में, संस्कारों और आत्मविश्वास की प्रमुख भूमिका है, जो व्यक्ति, अपने जीवन में आत्मविश्वास रुपी, इस शक्ति का विकास नहीं कर पाए, उन्हें अपना जीवन अभाव और दरिद्रता में पलते हुए व्यतीत करना पड़ता है।

इसलिए इस **जीवन में, जिस व्यक्ति में, आत्मविश्वास का अभाव है, वह जीवन में कभी भी आशातीत सफलता हासिल नहीं कर सकता है। इसलिए इस जीवन में, आत्मविश्वास रुपी बीज को आत्मसात करते हुए ही, प्रत्येक असंभव कार्य को संभव बनाया जा सकता है,** इसके लिए जरूरी है,अपने अन्त: करण में, आत्मविश्वास का वह बीज अंकुरित करना और उस पर आत्मविश्वास रुपी बीज ही अंकुरित होने पर, वह जीवन को आनन्ददायक और खुशहाल बना देता है। इसमें कोई भी अतिशयोक्ति नहीं है।

☆☆☆

प्रधान की कलम से.............

महासभा का वर्ष 2026 में, समाज के बच्चों की शिक्षा पर विशेष रूप से फोकस रहेगा।

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा।

प्रधान,रामपाल शर्मा

सबसे पहले मैं, महासभा रुपी परिवार को देश के लोकतंत्र के इस महान पर्व 77 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ और देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता को बनाए रखने के लिए, जिन देश भक्तों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया, उन सभी को नमन है। इसी दिन देश के लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए, डॉ भीमराव बाबासाहेब आंबेडकर की अध्यक्षता में बनाया गया, देश का संविधान लागू किया गया, जो देश की समानता, न्याय और एकता और सह अस्तित्व की मूल भावना पर आधारित है। इसके साथ ही 30 जनवरी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि, 31 जनवरी को शिल्प कला और कौशल विज्ञान के जनक सृष्टि रचयिता भगवान विश्वकर्मा का प्रकटोत्सव, 1 फरवरी को महान, सन्त शिरोमणि गुरु रविदास की 649 वी जयंती और 5 फरवरी को गणेश चतुर्थी तथा इसके साथ ही 12 फरवरी को स्वामी दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव और 15 फरवरी को भारतीय सांस्कृतिक विरासत और विश्व की आध्यात्मिक चेतना के प्रेरणा स्त्रोत और आराध्य देव भगवान शिव की पूजा अर्चना के रूप में मनाई जाने वाली महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर आस्था, विश्वास और भारतीय संस्कृति का द्योतक महाशिवरात्रि की भी बधाई देता हूँ।

किसी भी समाज के विकास और उत्थान का सबसे बड़ा मूल मंत्र शिक्षा है। शिक्षा रुपी पुल पर चढ़कर ही, बच्चे अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते हैं और शिक्षा मनुष्य में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करने के साथ ही उसके लिए सर्वांगीण विकास का रास्ता भी प्रशस्त करती है और इसके साथ ही शिक्षा, जीवन में आने वाली सभी चुनौतियों का दक्षता पूर्वक सामना करने में भी सक्षम बनाती है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ही महासभा ने समाज के गरीब जरूरतमंद और प्रतिभाशाली बच्चों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से महसभा द्वारा एक महायज्ञ शुरू किया है। इस लक्ष्य को हासिल करने और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, महासभा द्वारा **एक शिक्षा प्रकोष्ठ और आर्थिक सहायता कोष की स्थापना की गई है।**

मैं, समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों को, यह बताना चाहता हूँ कि 7 दिसम्बर 2025 को नाडियाद, गुजरात में, महासभा की त्रैमासिक बैठक में, प्रदेश सभा गुजरात की तरफ से, महासभा को एक प्रार्थना पत्र देकर, यह अनुरोध किया गया था, कि गुजरात प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद कुमार जांगिड की सेवाओं की प्रदेश सभा को जरूरत है। **इसलिए महासभा के शिक्षा कल्याण कोष के अध्यक्ष पद का दायित्व, किसी अन्य व्यक्ति को सौंपा जाए।**

मैं, समझता हूँ कि **प्रमोद कुमार जांगिड को इस मामले में काफी अनुभव है और इसी अनुभव के आधार पर ही, वह समाज के गरीब और प्रतिभावान छात्र-छात्राओं की पीड़ा को समझते हुए, उनके सपनों को उड़ान देने कार्य कर रहे हैं जिससे गरीबी का दंश झेल रहे छात्र-छात्राओं में एक नई ऊर्जा और आशा का संचार होगा।** प्रमोद कुमार जांगिड ने, अपने भाई राकेश कुमार जांगिड और विनोद कुमार जांगिड तथा बहन रेखा जांगिड के साथ मिलकर ही **श्रीमती सन्तोष देवी राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट का गठन किया है।** अब महासभा द्वारा भी, इस वर्ष 2026 में, समाज के गरीब और प्रतिभावान बच्चों को उच्चतर शिक्षा प्रदान करने पर ही सर्वाधिक बल दिया जायेगा, ताकि उनके सपनों को पंख लगाकर उनके सपनों को साकार करने के साथ ही, उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाया जा सके।

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

इस श्लोक का अर्थ है कि **विद्या विनय देती है और विनय से पात्रता प्राप्त होती है, पात्रता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म की प्राप्ति होती है, और धर्म से ही सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार विद्या विहिन व्यक्ति बिना सुगंध वाले फूल**

की तरह ही होता है। इसलिए विद्यार्थी के जीवन में, विद्या ही वह एक अचूक मंत्र है, जिससे न केवल उसके सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास होता है अपितु इसके उपयोग के द्वारा-नए नए चमत्कार करके, समाज और देश के विकास में अमूल्य योगदान दिया जा सकता है।

रूपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः। विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

इसके अनुसार, **रुपसम्पन्न, यौवनसम्पन्न और विशाल कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी विद्याहीन होने पर, सुगंधरहित केसुड़े के फूल की भाँति, शोभा नहीं देता है।**

मैं यह बड़े ही गर्व के साथ कह सकता हूँ कि मुझे अपने महासभा रुपी परिवार पर भरोसा है और इसी भरोसे के आधार पर ही महासभा ने, आपके आशीर्वाद और सहयोग के भरोसे ही, एक छोटा सा संकल्प लिया है और **समाज के आर्थिक रूप से कमजोर छात्र-छात्राओं की मदद करने के लिए शिक्षा कल्याण कोष नामक महायज्ञ शुरू किया है और यह एक ऐसा महायज्ञ है, जिसके साथ समाज के बच्चों का सुखद भविष्य जुड़ा हुआ है** और जिससे वह अपनी कल्पनाओं की उड़ान भरने के साथ ही, अपने सपनों को मूर्त रूप देने में सक्षम और सफल हो सकते हैं। इस शिक्षा प्रकोष्ठ के द्वारा की गई सहायता ऐसे उदीयमान प्रतिभाओं के लिए एक रामबाण सिद्ध होगी और इससे युवाओं के पंखों को उड़ान भरने में सहायता मिलेगी। यह परोपकार की भावना ही है, जो नि:स्वार्थ भाव से जरुरत मंद बच्चों की सहायता करने के लिए, आपको अभिप्रेरित करेगी, ताकि समाज के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाया जा सके।

हमारे वेदों और पुराणों तथा शास्त्रों में, दान की महिमा का उल्लेख किया गया है। भगवान दान के पीछे की भावना को देखते हैं। सुदामा भगवान श्री कृष्ण के पास एक मुट्ठी चावल, लेकर गए थे और भगवान श्रीकृष्ण ने उसके बदले, सुदामा का भव्य महल बनाने के साथ ही उस नगरी में रहने वाले सभी नगरवासियों के लिए सुन्दर भवन बनवा दिए।

इसलिए भगवान एक मनुष्य की भावनाओं के आधार पर ही फल देते हैं। **श्रीमद्भागवत गीता में सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार का दान बतलाया गया है। इसलिए दान चाहे, एक रुपये का ही करें, वह नि:स्वार्थ और सात्विक भावना से अभिप्रेरित होकर ही किया जाना चाहिए। दान कभी भी क्रोध और दिखावे में आकर नहीं करना चाहिए और दान देने के बाद, ऊं विष्णवे नमः का जाप करें।** जिससे आपका दिया हुआ वह दान, पुण्य के रूप में, भगवान द्वारा आपके खाते में जमा किया जाएगा।

मुझे, अपने **महासभा परिवार पर असीम भरोसा और विश्वास है कि जिस प्रकार से आपके सहयोग से महासभा का मुण्डका में, प्रतिष्ठित विशाल भवन बनाया गया है, उसी भरोसे पर समाज के गरीब बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अपनी श्रद्धानुसार दान देने का संकल्प लें।** इसीलिए कहा गया है कि जो दान परहित को ध्यान में रखकर नि:स्वार्थ भाव से दिया जाता है, उससे जहां, परम सन्तोष की प्राप्ति होगी, वहीं इसके साथ ही आनन्द की अनुभूति होगी। **महासभा में दिए दान में, आयकर की धारा 80 G के अन्तर्गत आयकर में भी छूट मिलेगी और आपके पुण्य का लाभ समाज के उन होनहार बच्चों को मिलेगा।** मैंने भी इस यज्ञ में छोटी सी आहुति डालने का संकल्प लिया है और **मेरे परिवार की तरफ से आजीवन, महासभा को 2 लाख 50 हजार रुपए वार्षिक की सहायता बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए दिए जाएंगे।**

इसी प्रकार आप भी, एक संकल्प लें सकते हैं। **यह संकल्प, समाज के उन गरीब बच्चों के जीवन में, उनके उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला रखने के साथ ही, समाज और देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देकर एक गौरवशाली इतिहास रचना कर एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगा।**

आओ, हम सभी मिलकर महासभा के इस शिक्षा प्रकोष्ठ में, यथासंभव सहयोग देकर और सन्त कबीरदास की उस उक्ति को चरितार्थ करें, जिसमें उन्होंने कहा है कि - चिड़ी चोंच भर लें गई, नदी घट्यो ना नीर। दान दिए धन ना घटे, कह गए सन्त कबीर।।

समाज के सभी भामाशाहों और दानदाताओं को, महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर अन्त-करण से हार्दिक शुभ मनस्कामनाएं। विपुल धन्यवाद।

☆☆☆

हरियाणा प्रदेश सभा के 24 वर्ष बाद
हनुमान प्रसाद जांगिड, निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

फरीदाबाद निवासी विनम्रता, सहृदयता और सरल स्वभाव और सादगी के प्रतीक समाज सेवा के प्रति समर्पित, हनुमान प्रसाद जांगिड को निर्विरोध रुप से हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली द्वारा, हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष का कार्यकाल पूरा होने पर, चुनाव की प्रक्रिया 3 जनवरी को शुरू हुई। चुनाव समन्वयक सुरेन्द्र वत्स ने बताया कि 3 जनवरी को महासभा के मुण्डका भवन में चुनाव प्रक्रिया शुरू की गई और 7 संभावित उम्मीदवारों को प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए फार्म उपलब्ध करवाए गए थे, लेकिन इनमें से 3 जनवरी को केवल 4 उम्मीदवारों ने ही अपने-अपने नामांकन पत्र दाखिल किए गए, 4 जनवरी को नामांकन वापसी और 1 फरवरी को मतदान दिवस निश्चित किया गया था।

हनुमान प्रसाद जांगिड, 3 जनवरी को मुण्डका भवन दिल्ली में आयोजित नामांकन प्रक्रिया के बाद सभी के सहयोग और समर्थन से ही हरियाणा प्रदेश के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

चुनाव अधिकारी बसंत जांगिड ने कहा कि कुल 4 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन फॉर्म जमा किए गए, जिनमें फरीदाबाद से हनुमान प्रसाद जांगिड और टेकचंद जांगिड तथा हिसार से सुरेंद्र जांगड़ा तथा निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष खुशीराम जांगिड शामिल थे, लेकिन निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष खुशीराम जांगिड तथा टेक जांगिड ने समाज हित को ध्यान में रखते हुए ही, अपने-अपने नामांकन वापस ले लिए और प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव के लिए, केवल दो प्रत्याशी ही चुनावी मैदान में रह गए। लेकिन समाज में आपसी भाईचारा कायम रहे और सामाजिक एकता और समरसता बनीं रहे, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए और महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा के सर्वसम्मति के फार्मूले को आत्मसात करते हुए, ही समाज के प्रबुद्ध लोगों ने एक सर्वमान्य रास्ता निकालने का प्रयास किया और अन्त में इस प्रयास में उन्हें सफलता भी मिली।

चुनाव अधिकारी कमल किशोर गोठडीवाल ने कहा कि, समाज के वरिष्ठ जनों, प्रबुद्ध लोगों एवं जांगिड शिरोमणि सभा के अध्यक्ष और पूर्व सरपंच एवं प्रसिद्ध उद्योगपति रमेश चंद्र जांगिड, की अध्यक्षता में उपस्थित समस्त समाज बंधुओं ने, निर्विरोध अध्यक्ष का चुनाव करवाने के लिए भरसक कोशिश की और अन्ततः इसमें सफलता भी मिली रमेश जांगिड द्वारा, दोनों उम्मीदवारों से पांच-पांच सदस्यों के नाम मांगे गए और **निर्विरोध रुप से चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए एक 10 सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया और दोनों में से एक नाम पर सहमति बनाने के लिए इस कमेटी द्वारा गहन विचार मंथन किया गया और इस के पश्चात, हनुमान प्रसाद जांगिड के नाम पर एकमत से सहमति बन गई और सुरेंद्र जांगड़ा ने बड़ा दिल दिखलाते हुए और पंचायती निर्णय को शिरोधार्य करते हुए, इस निर्णय पर अपनी सहमति जताई और इस प्रकार से, हनुमान प्रसाद जांगिड को, हरियाणा प्रदेश का निर्विरोध रुप से निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष घोषित किया गया।**

महासभा द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारियों बसन्त कुमार जांगिड और कमल किशोर गोठडीवाल और चुनाव समन्वयक सुरेन्द्र कुमार वत्स द्वारा, महासभा के कार्यालय में ही नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड को, सैंकड़ों समाज बंधुओं की उपस्थिति में भगवान विश्वकर्मा के जयकारों की गूंज के बीच, पद और गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई और उन्होंने नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष सहित सभी उपस्थित समाज के लोगों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश अध्यक्ष के सफलतम कार्यकाल की मनस्कामना भी की है।

नवनियुक्त हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड में, समाज सेवा कूट-कूट कर भरी हुई है। उनका जन्म 4 मई 1961को ग्राम अटाली, जिला महेंद्रगढ़ में, पिता मूलचंद शर्मा व माता श्रीमती मुन्नी देवी के घर में हुआ। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक कक्षा जिला अलवर, राजस्थान से ग्रहण की तथा इसके पश्चात **उन्होंने 1982 में फरीदाबाद में, ट्रैक्टर बनाने वाली एक प्रसिद्ध कम्पनी एस्कॉर्ट्स में एक छोटे से टर्नर के पद से नौकरी शुरू की और अपनी मेहनत और ईमानदारी से कार्य करते हुए, वर्ष 2016 में, मैनेजर के प्रतिष्ठित पद से सेवानिवृत हुए हैं।** उन्होंने अपनी कर्मभूमि फरीदाबाद को बनाया और समाज की भावना से

अभिप्रेरित होकर इससे पहले, दो बार वह जवाहर कॉलोनी के शाखा अध्यक्ष और दो बार जिला सभा फरीदाबाद के जिला अध्यक्ष पद पर भी रहे हैं। इससे पहले वह प्रदेश सभा हरियाणा प्रदेश सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी रहे हैं और उन्होंने लगभग 10 वर्ष पहले भी, प्रदेश सभा हरियाणा के अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ा था, लेकिन सफलता नहीं मिली।

इनकी अर्धांगिनी, श्रीमती कृष्णा देवी, धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत है और उन दोनों ने ही, अपने दोनों बेटों तरुण शर्मा और गौरव शर्मा को, बेहतर संस्कार दिए हैं। हनुमान प्रसाद जांगिड का बड़ा बेटा, तरुण शर्मा फरीदाबाद में मैसर्स "कृष्णा ब्रेक सिस्टम" के नाम से एक कंपनी का सुचारू रूप से संचालन कर रहे हैं और छोटा बेटा, गौरव शर्मा जयपुर की, नॉरमेट इंडिया लिमिटेड कम्पनी में वरिष्ठ मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं और वह समाज सेवा की प्रतिमूर्ति है।

हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि यह महासभा के **प्रधान रामपाल शर्मा की दूरदर्शिता और सकारात्मक सोच का ही परिणाम है कि, उनके मार्गदर्शन में हरियाणा में 24 साल बाद, पहली बार प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव निर्विरोध रुप से सम्पन्न हुआ है** और इतना ही नहीं, पिछले वर्ष 2025 में भी, सभी प्रदेश अध्यक्षों के चुनाव निर्विरोध रुप से सम्पन्न हुए थे। प्रधान रामपाल शर्मा ने, 28 सितंबर को **रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित महासभा की त्रैमासिक बैठक में भी हरियाणा प्रदेश के लोगों का आह्वान किया था कि, हरियाणा प्रदेश में निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित होना चाहिए और प्रदेश के जागरुक लोगों ने यह सिद्ध करके दिखलाया है।** उन्होंने इस यज्ञ में सहयोग करने वाले महानुभावों को भरोसा दिलाया वह अपने दायित्व को सत्य निष्ठा पूर्वक तरीके से पालन करते हुए, लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का हर सम्भव प्रयास करेंगे।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि, **हरियाणा प्रदेश के लोगों ने प्रदेश अध्यक्ष का निर्विरोध रुप से निर्वाचन करके, यह सिद्ध कर दिया कि, समाज में आपसी एकता और भाईचारा केवल निर्विरोध रुप से निर्वाचित होने पर ही बना रह सकता है।** इससे पैसे की बचत के साथ ही, समाज में आपसी सौहार्द और समरसता को बल मिला है। वर्ष 2026 में निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित होने का श्रीगणेश भी हरियाणा से ही किया गया है और वर्ष 2025 में भी सभी प्रदेश अध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए, उन सभी को भी बधाई।

उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि जिस आस्था और विश्वास के साथ प्रदेश के लोगों ने हनुमान प्रसाद जांगिड के कुशल नेतृत्व में, विश्वास व्यक्त किया है, वह भी नि:स्वार्थ सेवा भाव, विवेकशील और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए, सदैव ही लोगों की आशाओ पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य और मंगलमय कार्यकाल की मनस्कामना करता हूँ।

हरियाणा प्रदेश के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित होने में, शिरोमणि सभा के अध्यक्ष, प्रसिद्ध उद्योगपति और पूर्व सरपंच रमेश जांगिड की अध्यक्षता में गठित जिन 10 सदस्यों की कमेटी ने, अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उनमें, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य तेलूराम जांगिड, महासभा के पूर्व महामंत्री अनिल एस जांगिड, हरियाणा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष महावीर जांगिड, जिला अध्यक्ष फरीदाबाद चरणपाल जांगिड, होडल के ओम प्रकाश शर्मा, हेली मंडी के अशोक कुमार जांगिड, पूर्व जिला अध्यक्ष रेवाड़ी, कुंवर सिंह जांगिड, हिसार के पूर्व जिला अध्यक्ष राम तीर्थ जांगिड, हिसार से डॉ. कुलवंत जांगिड और मुंढाल से बिजेंद्र जांगिड शामिल थे।

इसके अतिरिक्त, जिन्होंने इस यज्ञ को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनमें विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज के प्रधान गंगादीन जांगिड, होडल के उच्च स्तरीय समिति के सदस्य मोहन जांगिड, आध्यात्मिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष सत्यपाल वत्स, शिरोमणि सभा के चेयरमैन लीलूराम जांगिड, दिल्ली प्रदेश सभा के महामंत्री बी एन शर्मा, धारुहेड़ा से उधोगपति महेंद्र कुमार जांगिड, हरिराम जांगिड और गिरधारीलाल जांगिड, जिला फरीदाबाद सभा के महामंत्री राजेंद्र जांगिड, पलवल के पूर्व जिला अध्यक्ष ज्ञान चंद जांगिड, और हिसार जिला अध्यक्ष उदय सिंह जांगिड और सुखबीर जांगिड कैमरी सहित भारी संख्या में प्रदेश के कौने-कौने से आए हुए लोग भी शामिल हैं।

☆☆☆

सम्पादक,राम भगत शर्मा।

गणतंत्र दिवस पर सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने बादली में ध्वजारोहण किया।

राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने, कहा कि देश आज से 76 वर्ष पूर्व 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ था, जो देशवासियों के लिए समानता, स्वतंत्रता, विश्वास और आस्था और सद्भाव का द्योतक है और यह संविधान की ही ताकत है, जिसके बल पर, एक साधारण परिवार में पैदा हुआ व्यक्ति भी प्रधान मंत्री, मुख्य मंत्री, सांसद और विधायक तथा भारत का मुख्य न्यायाधीश भी बन सकता है और कोई भी महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर सकता है और भारत के लोकतंत्र की यही खुबी और असली ताकत है, जो इस देश के लोगों को, इस भारतीय संविधान के माध्यम से आज मिली हुई है।

राज्य सभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने यह उद्गार, 26 जनवरी को देश के 77 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बादली, जिला झज्जर में राष्ट्रीय ध्वजारोहण करने और परेड की सलामी लेने के उपरांत उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने बहुत ही सुंदर मनमोहक और भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए और इस दौरान सांसद द्वारा शहीद परिवारों का सम्मान भी किया गया।

सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने कहा कि आज सारे देश में 77वां गणतंत्र दिवस मनाया जा रहा है और संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सहित संविधान सभा के सभी सदस्यों को नमन करते हुए कहा कि आज के इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है, क्योंकि आज ही के दिन, विश्व के सबसे लोकतान्त्रिक देश में, यह संविधान लागू किया गया था और अगर सरल भाषा में कहा जाए तो, इस संविधान की ही ताकत है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रपति से लेकर, एक गरीब व्यक्ति को वोट का समान अधिकार दिया गया है और भारतीय संविधान, भारतीय नागरिकों के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में भी कार्य करता है। उन्होंने कहा कि इन संवैधानिक अधिकारों में, स्वतंत्रता, एकता, निष्पक्षता एवं समानता का सभी नागरिकों को यह बराबर के अधिकार दिए गए हैं और इन अधिकारों के साथ ही, कर्तव्य एवं उत्तरदायित्वों का का भी विस्तृत उल्लेख किया गया है और यही कारण है कि आज भारत के सभी कानूनों से भी ऊपर संविधान को माना गया है और यह भारतीय संविधान, भारत की आत्मा है और इसलिए आज हम गणतंत्र दिवस को, हर वर्ष राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाते चले आ रहे हैं, जो देश का एक राष्ट्रीय महापर्व है।

सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने कहा कि देश ने विगत 76 वर्षों में, सभी क्षेत्रों में आशातीत प्रगति की है और अब देश, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के ओजस्वी नेतृत्व में, विश्व में तीसरी आर्थिक शक्ति बनने के लिए अग्रसर है।इसी प्रकार हरियाणा सरकार भी, विकास के सभी क्षेत्रों में, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में प्रगति के नए आयाम स्थापित कर रही है। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर मैं, देश के उन महान देशभक्त वीर बहादुर जवानों और मातृशक्ति को नमन करता हूँ, जिन्होंने देश के स्वतंत्रता आंदोलन रुपी यज्ञ में देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इस समारोह में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों ने देशभक्ति पर आधारित गीतों पर शानदार प्रस्तुत की प्रस्तुति दी और समारोह के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों के परिजनों को शहीदों की वीरांगनाओं को मुख्य अतिथि द्वारा शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर नगर परिषद के वाईस चेयरमैन पालेराम शर्मा, उप मंडल अधिकारी, आई ए एस, अभिनव सिवाच इस एसीपी प्रदीप खत्री, पूर्व जिला अध्यक्ष राजपाल जांगिड, नायब तहसीलदार प्रवीण कुमार, सांसद के नीजि सचिव महेश शर्मा सहित भारी संख्या में मातृशक्ति भी उपस्थित थीं।

जय हिन्द -जय भारत।

☆☆☆ **सम्पादक,राम भगत शर्मा।**

जिला सभा कोटा की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण और प्रतिभा सम्मान समारोह।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने कहा कि जांगिड समाज के समग्र विकास और इसकी आशातीत प्रगति और उन्नति के लिए संगठन में एकरुपता, आपसी समन्वय और और युवाओं को शिक्षा और संस्कार देने के साथ ही, मातृशक्ति को राजनीति में आगे लाना होगा। उन्होंने कोटा की नई कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि युवा जिला अध्यक्ष रितेश जांगिड के कुशल नेतृत्व में युवा टीम, समाज के संगठन को मजबूत करके, समाज हित में अनेक रचनात्मक और सामाजिक कार्य करके, लोगों की आशाओं और विश्वास पर खरा उतरने का हर सम्भव प्रयास करेंगी।

प्रधान रामपाल शर्मा, ने यह विचार, 17 जनवरी को, जिला सभा-कोटा की कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह के भव्य आयोजन पर उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान विश्वकर्मा की आरती और पूजन के साथ दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त करने वाले,समाज की 50 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही जिला सभा कार्यकारिणी में, कार्यकारी अध्यक्ष पंकज जांगिड, उपाध्यक्ष आदित्य प्रकाश, जिला महामंत्री राजेश जांगिड, कोषाध्यक्ष सुधीर जांगिड के साथ 70 से अधिक पदाधिकारियों को भी पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई और महान सन्त प्रभाकर महाराज द्वारा सभी प्रतिभाओं को आशीर्वाद देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की गई और समाज की बालिकाओं द्वारा रंगारंग प्रस्तुतियां दी गई।

प्रधान रामपाल शर्मा ने कहा कि समाज के युवा अध्यक्षों को विशेष रूप से आगे आना होगा ताकि महासभा को और अधिक मजबूत और सुदृढ़ किया जा सके। राजस्थान प्रदेश में महिलाओं और मातृशक्ति की सशक्त भागीदारी का उल्लेख करते हुए कहा कि राजस्थान की महिलाओं के सशक्तिकरण को मैं सलाम करता हूँ। महासभा द्वारा भविष्य में भी इसी प्रकार से महिलाओं और युवाओं के सशक्तिकरण के लिए मिलकर काम करना होगा। उन्होंने जिला युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अश्वनी जांगिड और महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष श्रीमती पारस शर्मा को पद एवं गोपनीयता की शपथ भी दिलवाई। कोटा दक्षिण के विधायक, संदीप शर्मा ने कहा कि ,जांगिड समाज शुरू से ही विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणीय रहा है और यह समाज आज भी शिल्प कला के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करता आ रहा है। उन्होंने कहा कि समाज के इस गौरव और महान परंपरा को बनाए रखते हुए ही ,इसे और अधिक सुदृढ़ करते हुए, सभी को एक साथ मिलकर इस समाज को आगे बढ़ाने की महत्ती आवश्यकता है।

राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पवार ने कहा कि समाज की प्रगति का मूल मंत्र है,आपस में मिलकर एक साथ काम करें और कोटा के जिला अध्यक्ष एक युवा हैं और आज की पीढ़ी के युवाओं की काल्पनिक सोच हमारी पीढ़ी से बहुत ही आगे है और आप सभी को मिलकर जिला अध्यक्ष को सक्रिय सहयोग प्रदान करें ताकि समाज में एक सकारात्मक संदेश जाए। मेरा तो यही मानना है कि अगर जिला अध्यक्ष रीतेश जांगिड द्वारा, घोषित कामों में से ,अगर 50 प्रतिशत कार्य भी उसके द्वारा पूरे किए गए तो उनको आने वाली समाज की युवा पीढ़ी याद रखेगी। इसके साथ ही रितेश, समाज को एकजुट करने के लिए भी जो स्तुत्य प्रयास कर रहे हैं, उसके लिए भी, मैं अग्रिम शुभकामनाएं देता हूँ।

राजस्थान प्रदेश की महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष , डॉ रेणु जांगिड ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों की समाज में सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि, शपथ ग्रहण समारोह के बाद उस सभा द्वारा महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सरोकारों को लेकर क्या प्रयास किए गए हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रदेश में, सभी जिला सभाओं को मिल कर, महिला सशक्तिकरण और युवाओं के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए, उनके सर्वांगीण विकास के लिए मिलजुल कर कार्य करना होगा। प्रदेश सभा के युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष धर्मवीर जांगिड ने कहा कि समाज में संगठन को मजबूत करने के लिए एक ही रामबाण है और वह है यह है कि इस प्रकार के आयोजनों से समाज में आपसी तालमेल बढ़ने के साथ ही संगठन को मजबूत करने पर विशेष रूप से बल देना होगा, जिससे समाज में

एकता का ताना-बाना और अधिक मजबूत होगा।

जिला अध्यक्ष रितेश जांगिड ने जिला सभा की तरफ से विशिष्ट अतिथियों का हृदय के अन्तःकरण से हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि, प्रदेश में समाज के जो युवा बेरोजगार हैं, उनके लिए आज रोजगार को बढ़ावा देने की जरूरत है और ऐसे युवाओं को कौशल विकास योजना के अन्तर्गत जोड़ा जाएगा। इसके साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर युवाओं का आर्थिक सहयोग भी किया जाएगा तथा इसी प्रकार महिलाओं को भी सशक्त बनाने के लिए, उनको रोजगार के साथ जोड़ा जाएगा ताकि वह अपने भविष्य का निर्णय स्वयं ही लें सकें। उन्होंने समाज के पद प्रदर्शक और सम्मानित वरिष्ठ महानुभावों, जो कि हमारे समाज की मूल जड़ और धरोहर हैं, का आह्वान करते हुए कहा कि, उनको समाज का, एक दीप स्तंभ की तरह आलोकित होकर मार्गदर्शन करते हुए इस समाज के युवाओं को शिक्षा और संस्कारों के बारे में शिक्षित करना होगा, शिक्षा और संस्कारों के बल पर ही युवा पीढ़ी आगे बढ़ सकती है।

इस समारोह की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, महासभा के पूर्व प्रधान रविशंकर शर्मा, श्री विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार,महासभा के राजनैतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राकेश जांगिड, राजस्थान महिला प्रकोष्ठ की कार्यकारी अध्यक्ष कंचन शर्मा, उप प्रधान मदन लाल शर्मा, जिले की, रामगंज मंडी, सांगोद, कनवाश पीपल्दा और दीगोद तहसीलों के अध्यक्ष और पदाधिकारी, जिला कोटा की जांगिड ब्राह्मण समाज की विभिन्न समितियों के अध्यक्षों, पदाधिकारियों, जिनमें चन्द्र मोहन, लादूराम, दौलतराम, सत्य नारायण, कैलाश, शिवनारायण और उनकी कार्यकारिणी के सदस्य भी शामिल थे, जिनका जिला सभा द्वारा अभिनन्दन किया गया और इसके अतिरिक्त भारी संख्या में मातृशक्ति और युवाओं ने इसमें भाग लेकर इसकी गरिमा को द्विगुणित किया।

जिला अध्यक्ष रितेश जांगिड और उनकी कार्यकारिणी के सदस्यों के द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत, सम्मान, अभिनंदन किया गया। इस शपथ ग्रहण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह के अवसर पर भारी संख्या में समाज बंधुओं और मातृशक्ति ने उपस्थित होकर इस समारोह की शोभा बढ़ाई। जिला सभा के प्रवक्ता हेमंत जांगिड द्वारा सभी का आभार प्रकट किया गया।

कोटा जिला अध्यक्ष, रितेश जांगिड।

महिला प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश की त्रैमासिक बैठक और जिला सभा इंदौर की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह 25 जनवरी को सम्पन्न।

मध्य प्रदेश सभा के अध्यक्ष प्रभु दयाल बरनेला ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज, मध्यप्रदेश महिला प्रकोष्ठ की ऊर्जावान अध्यक्ष माया शर्मा के नेतृत्व में, जिला महिला प्रकोष्ठ इन्दौर की, शपथ विधि ग्रहण समारोह एवं प्रदेश महिला प्रकोष्ठ की त्रैमासिक बैठक के समारोह आयोजित किया गया है और इस समारोह में, अनुशासन और भव्यता की जितनी भी भूरि-भूरि प्रशंसा की जाए वह उतनी ही कम है। इस भव्य कार्यक्रम में भारी संख्या में मातृशक्ति ने उपस्थित होकर, एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है, इसके लिए मैं, माया शर्मा और इन्दौर जिला अध्यक्ष मीना भाकरोधा सहित पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देता हूँ।

मध्य प्रदेश अध्यक्ष प्रभु दयाल बरनेला ने, 25 जनवरी को, कस्तुरी सभागृह इन्दौर में, आयोजित,मध्य प्रदेश सभा महिला प्रकोष्ठ की त्रैमासिक बैठक एवं जिला महिला प्रकोष्ठ इन्दौर की नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण के अवसर पर, उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए अपने उद्बोधन में यह विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का विधिवत तरीके से शुभारंभ, हेमलता लोनसरे एवं उनकी टीम द्वारा, प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश वंदना और दीप प्रज्ज्वलित करके भगवान विश्वकर्मा की आरती और पूजन के साथ किया गया और एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

प्रदेश की महिलाओं में जागृति पैदा करने के साथ ही, महिला उत्थान के लिए पिछले एक वर्ष में, माया शर्मा के कुशल नेतृत्व में जो सराहनीय कार्य किए गए हैं, इसके लिये भी आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हुए, **प्रभु दयाल बरनेला ने कहा कि अधिकतर जिलों में जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्षों का मनोनयन किया जा चुका है, जो संगठन को और अधिक मजबूती प्रदान करने में, एक मील का पत्थर साबित हुआ है। महिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष के नाते माया शर्मा ने समाज उत्थान का कार्य सत्य निष्ठा पूर्वक किया है और इसके लिए पूरी महिला प्रकोष्ठ की टीम बधाई की पात्र है।** उन्होंने कहा कि इसके साथ ही महामंत्री डॉ.सुनिता शर्मा द्वारा, महिला प्रकोष्ठ का, पिछले एक वर्ष का संपूर्ण लेखा जोखा पूरी पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत किया गया है, उसके लिये भी मैं, उनका धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूँ।

महासभा के पूर्व प्रधान कैलाश बरनेला ने, इस समारोह की सफलता के लिए अपना संदेश भी भेजा , जिसमें उन्होंने अपनी तरफ से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि, महासभा के प्रधान

रामपाल शर्मा की सकारात्मक सोच और उदार दृष्टिकोण के परिणाम स्वरुप ही, आज समाज की महिलाएं , प्रत्येक क्षेत्र में आगे आ रही हैं और इसका ज्जवलंत उदाहरण, अजमेर में 18 जनवरी को हुआ, महासभा की महिला प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह है, जहां पर देश के कोने-कोने से आई महिलाओं ने, अपनी भागीदारी सुनिश्चित करके, यह दिखला दिया कि अब महिलाएं भी किसी भी क्षेत्र में ,पुरुषों से पीछे नहीं है। **कैलाश बरनेला ने इस समारोह के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की थी।** इसके लिए कैलाश बरनेला का, प्रदेश सभा, प्रदेश महिला प्रकोष्ठ एवं जिला महिला प्रकोष्ठ इन्दौर द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

मुख्य अतिथि, महासभा के राजनैतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष, राकेश जांगिड ने कहा कि पूरे देश में, महिला प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश का संगठन सक्रिय रूप से समाज उत्थान एवं महिला सशक्तिकरण का बहुत ही शानदार रचनात्मक कार्य कर रहा है। प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में, मध्य प्रदेश सभा भी, समाज उत्थान के लिए बेहतरीन कार्य कर रही है। प्रदेश में एक ऊर्जावान महिला, माया शर्मा को, महिला प्रकोष्ठ का अध्यक्ष बनाया गया है। **जिससे महिलाओं में एक नई ऊर्जा और नई जागृति के साथ महिला संगठन को, एक नया बल मिला है मध्य प्रदेश महिला प्रकोष्ठ ने, देश में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है। इसके लिए माया शर्मा और पूरी टीम बधाई की पात्र है।**

महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष, माया शर्मा ने, जिला इन्दौर महिला प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को, पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई और सभी पदाधिकारियों को बधाई देते हुए, आह्वान किया कि वह समाज उत्थान के लिए समर्पित भाव से कार्य करें। इस समारोह में, समाज की वरिष्ठ नागरिकों एवं महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में, उत्कृष्ट कार्य करने वाले, प्रतिभाशाली खिलाड़ियों और निःशुल्क पढ़ाई कर रहे बच्चों को भी सम्मानित करने के साथ ही, प्रदेश और जिला महिला कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को सम्मान प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रदेश अध्यक्ष प्रभु दयाल बरनेला और पूर्व महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष गीता कड़वानिया का भी, उन्होने हृदय से आभार व्यक्त किया, जिन्होंने समाज हित के लिए अनेक ऐतिहासिक कार्य किए हैं।

इस मौके पर गोल्डन गर्ल के नाम से प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी और मॉडलिंग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रही, सपना शर्मा की उपलब्धियों और हौसलों की सभी के द्वारा भूरि - भूरि प्रशंसा की गई।

मध्य प्रदेश सभा के महामंत्री अनिल शर्मा ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन, समाज में एकता और संगठन को मजबूत करने में भूमिका निभाते हैं। महिला प्रकोष्ठ की महामंत्री, डॉ. सुनिता शर्मा ने, महिला प्रकोष्ठ का, पिछले एक वर्ष का संक्षिप्त विवरण और लेखा जोखा प्रस्तुत किया। उन्होंने याद दिलाया कि 27 दिसंबर, 2024 को, जिस समय हमारी मातृसंस्था, महासभा का 118वां स्थापना दिवस मनाया जा रहा था। उसी

दिन, माया शर्मा को, महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष मनोनीत किया गया था। **माया शर्मा, एक कर्मठ, उर्जावान, सुशिक्षित, नेतृत्व क्षमता में निपुण और सभी को साथ लेकर चलने की क्षमता रखती है। प्रदेश अध्यक्ष की एक ही सोच है कि, कार्य ही हमारा परिचय है और संगठन भी हमारी वास्तविक पहचान है।** प्रदेश में अध्यक्ष द्वारा एक, सशक्त महिला संगठन खड़ा किया गया है, जिसमें कार्यकारी अध्यक्ष किरण, उपाध्यक्ष जीवन बाला, महामंत्री रंजना प्रदेश प्रभारी सीमा, सलाहकार संगीता, जिला अध्यक्ष इंदौर मीना भाकरोदा सहित आज 121 महिलाओं की कार्यकारिणी को शपथ दिलवाई गई है। आज महिला संगठन को एक नई पहचान मिली है और उनका एक ही नारा है आप आगे बढ़ते रहिये, परिस्थितियां खुद हमारा साथ देगी।

इन्दौर जिला अध्यक्ष, महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष मीना भाकरोधा ने कहा कि, जिला सभा की, शपथ विधि का कार्यक्रम बड़े ही गरिमापूर्ण ढंग से संपन्न हुआ है। उन्होंने जिला सभा की तरफ से प्रदेश अध्यक्ष, प्रभुदयाल बरनेला और महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष माया शर्मा का आभार व्यक्त किया। महिला प्रकोष्ठ मध्य प्रदेश की, मुख्य सलाहकार संगीता आसदेव, महिला प्रकोष्ठ की पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, गीता कडवाणिया ने भी नई कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि नई कार्यकारिणी समाज के उत्थान का कार्य नई ऊर्जा के साथ करेगी।

इस कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, मध्य प्रदेश के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रभु दयाल दैमन और प्रदीप शर्मा, महासभा के संरक्षक बंसीलाल छिछोलिया, मध्य प्रदेश के युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष, कपिल शर्मा, विश्वकर्मा मंदिर तोपखाना इंदौर के अध्यक्ष, अशोक कुमार रोडवाल, युवा प्रकोष्ठ के पूर्व अध्यक्ष चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर के जिला अध्यक्ष, योगेश जांगिड, महासभा के उप प्रधान शैतान मल शर्मा,जिला इन्दौर युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष धीरज शर्मा, मंदिर समिति अध्यक्ष देवास, प्रदीप शर्मा, अनिल शर्मा, रतनलाल जांगिड, अशोक देमण देवास, शांतिमल शर्मा, बजरंग लाल जांगिड, शिवपाल जांगिड, रमेश शर्मा, मुकेश बरनेला, सीताराम खोखा, कैलाशचंद्र खोखा, धर्मेंद्र पिपलोदिया, हुकमाराम देवा, मातृशक्ति में, संगठन मंत्री सुमित्रा, संरक्षक, छोटी देवी बरनेला, कार्यकारी अध्यक्ष किरण शर्मा, कोषाध्यक्ष सुमन बड़वाल, सांस्कृतिक मंत्री संतोष शर्मा, महामंत्री रंजना शर्मा, सह महामंत्री सुनीता शर्मा, प्रभारी सीमा शर्मा, सह प्रभारी शालू शर्मा सचिव मानु शर्मा, सह सचिव मंजू खोखा, मंत्री शीतल शर्मा, मंत्री पारुल शर्मा, प्रवक्ता साक्षी शर्मा, विधि सलाहकार सपना शर्मा, संगठन मंत्री रंजना शर्मा, उपाध्यक्ष संतोष कड़वानिया, पूर्व महामंत्री रीता शर्मा उपाध्यक्ष उमा लाडवा, उज्जैन जिला अध्यक्ष अनीता बरड़वा, देवास जिला अध्यक्ष उर्मिला शर्मा, धार जिला अध्यक्ष उर्मिला शर्मा, मंदसौर जिला अध्यक्ष सीमा शर्मा,विदिशा जिला अध्यक्ष गायत्री शर्मा सहित अनेक जिला अध्यक्ष शामिल हैं, जिन्होंने इस समारोह की गरिमा बढ़ाई। अन्त में, महिलाओं द्वारा सामुहिक हल्दी कुमकुम का कार्यक्रम किया गया और उपहार देकर उपस्थित मातृशक्ति का सम्मान किया गया।

कु.साक्षी ने मंच संचालन करते हुए , कार्यक्रम को बहुत ही सुचारू एवं सुव्यवस्थित ढंग से संचालित किया और क्रमबद्धता को बनाए रखा।

अंत में राष्ट्रगान के साथ इस मनोहारी कार्यक्रम का समापन हुआ।

मध्य प्रदेश महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष, माया शर्मा।

रंगो का त्यौहार होली और धुलेंडी पर हार्दिक बधाई और शुभकामनायें:

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा।

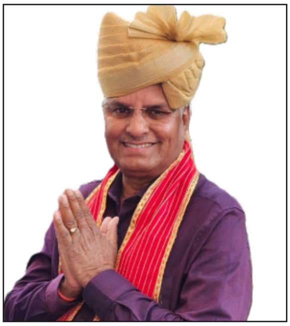

होली हमारे देश मे हर्ष और उल्लास का पर्व है। यह त्यौहार आदिकाल से हमारे देश मे मनाया जाता रहा है। इसको बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप मे मनाया जाता है। यह वसंत ऋतु के आगमन का पर्व भी माना जाता है। यह विभिन्न संस्कृति और धर्मो को समेटे हुये भारतीय परंपराओं का एक जीता जागता उत्सव है।

होली को मुख्य रूप से रंगवाली होली, धुलेंडी (धुलेटी), फगुआ, डोल पूर्णिमा, और रंगपंचमी के नामों से पुकारा जाता है। यह त्योहार फाल्गुन महीने में आता है, इसलिए इसे 'फगुआ' भी कहते हैं। यह प्रेम और रंगों का पर्व है, जिसे अलग-अलग राज्यों में विभिन्न नामों से जाना जाता है।

धुलेंडी/धुलेटी/धुरखेल: होली के अगले दिन रंग खेलने वाली होली (उत्तर भारत)।
फगुआ/फाग: फाल्गुन मास में मनाया जाने वाला लोकपर्व (बिहार, झारखंड, UP)।
डोल यात्रा/डोल पूर्णिमा: राधा-कृष्ण की मूर्तियों को झूला झुलाने की परंपरा (पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम)।
लठमार होली: लाठियों से खेली जाने वाली अनोखी होली (मथुरा, बरसाना, गोकुल)।
शिमगो (शिग्मो): गोवा और कोंकण क्षेत्र में मनाया जाने वाला होली उत्सव।
होला मोहल्ला: सिख योद्धाओं द्वारा मार्शल आर्ट के साथ मनाई जाने वाली होली (पंजाब)।
मंजल कुली/उक्कुली: केरल में हल्दी के पानी के साथ होली।
कामन पोडिगई: तमिलनाडु में कामदेव को समर्पित।
वसंतोत्सव: रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा शुरू किया गया, शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) में पीले वस्त्र पहनकर मनाया जाता है।
इसके अलावा इसे रंगों का त्यौहार, प्रेम का त्यौहार और होलिका दहन के रूप में भी जाना जाता है।

प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक राक्षस राजा था, जो स्वयं को ही ईश्वर मानता था और राज्य में पूजा करने से मना कर दिया था। उसका पुत्र प्रहलाद, विष्णु का परम भक्त था, जो पिता के लाख कहने पर भी विष्णु भक्ति करता रहा।

हिरण्यकशिपु ने अपने ही पुत्र को मारने के कई प्रयास किए, लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद हर बार बच गए। हताश होकर, हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन होलिका से मदद मांगी। होलिका के पास एक विशेष शॉल/वरदान था, जिससे उसे आग में न जलने का वरदान प्राप्त था।

योजना के अनुसार, होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर चिता पर बैठ गई। भगवान की कृपा से, आग में होलिका का वरदान काम नहीं आया और वह खुद ही जल गई, जबकि प्रहलाद भगवान विष्णु का नाम जपते हुए सुरक्षित बाहर आ गए।

यह घटना बुराई पर अच्छाई और भक्ति की जीत का प्रतीक है। इसलिए, होली के एक दिन पहले शाम को होलिका दहन किया जाता है, जो यह दर्शाता है कि दुष्टता चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः सच्चाई की ही जीत होती है।

इस दिन लोग बुराई को दूर करने के लिए अपने शरीर से उबटन (उबटन - जो शरीर की बुराइयों का प्रतीक माना जाता है) उतारकर होलिका की आग में डालते हैं।

फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन के बाद चैत्र माह की प्रतिपदा को रंगोत्सव मनाया जाता है। यह त्योहार वसंत ऋतु के आगमन, कृषि समृद्धि और रंगों के माध्यम से आपसी भाईचारा बढ़ाने का संदेश देता है।

होली को प्रेम के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है। कथाओं के अनुसार, भगवान कृष्ण ने अपनी नीली त्वचा के कारण राधा जी को रंग लगाकर प्रेम का इज़हार किया था। तभी से ब्रज और पूरे भारत में रंग-गुलाल से होली मनाने की परंपरा चली आ रही है।

यह पर्व सर्दियों के अंत और वसंत ऋतु के आगमन का सूचक है। प्राचीन भारत में यह फसल काटने (कृषि समुदायों) के

समय का जश्न था, जो समृद्धि और नवजीवन का प्रतीक है।

दक्षिण भारत में, यह शिव और कामदेव की कहानी से भी जुड़ा है, जहाँ शिव ने अपना ध्यान भंग होने पर कामदेव को भस्म कर दिया था, और बाद में उनकी पत्नी रति के प्रेम से प्रसन्न होकर उन्हें पुनर्जीवित किया था।

पौराणिक ग्रंथों के अलावा, आदिकालीन कवियों से लेकर भक्तिकालीन कवियों (सूरदास, मीराबाई, रसखान) तक ने होली का वर्णन किया है। यह त्योहार सामाजिक सद्भाव का प्रतीक है।

वर्तमान मे हम हमारे मूल मूल्यों से दूर जाकर होली जैसे त्यौहारो पर भी पाश्चात्य मानसिकता के शिकार होते जा रहे है। हमारी युवा पीढी हमारे सांस्कृतिक मूल्यो से दूर भाग रही है जिससे हमारी सनातन संस्कृति और आपसी भाईचारे का ताना बाना टूटने की कगार पर है। हमे इन त्यौहारो और उत्सवों के जरिये हमारा आने वाला कल और भावी पीढी का भविष्य सुधारना है। हमारी युवा शक्ति संस्कारी और भारतीयता से ओतप्रोत रहेगी तभी हम खुशहाल भारत का भविष्य बना सकेंगे।

आओ हर बार की तरह इस बार भी हम सब देशवासी भाषा, मजहब, रंगभेद,जात-पांत, अमीर - गरीब जैसे भेदभावों से उपर उठकर इस बार की होली को भी हमारी रंगभरी यादों मे संजोते हुये मनाये।

आप सभी को पुन: होली और धुलेटी की शुभकामनायें और हार्दिक बधाई।

☆☆☆

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा।

मैं, महासभा रूपी परिवार को 24 जनवरी को मनाए गए राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर ह्रदय के अंतःकरण से देश के उज्जवल भविष्य को बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। इसके साथ ही मैं उनके अभिभावकों माता-पिता को बधाई भी देता हूँ और आशा करता हूँ कि वह अपनी बच्चियों को उदात्त विचारों और बेहतर संस्कारों से पुष्पित और पल्लवित करके, उनका बेहतर ढंग से पालन पोषण करेंगे ताकि वह देश की भावी नागरिक, देश की प्रगति और विकास में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर सकें।

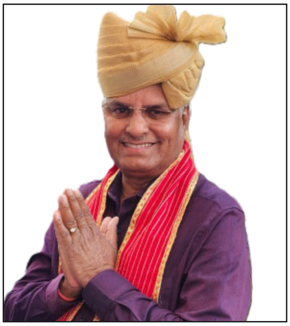

प्रधान ने कहा कि अभिभावकों को, देश की भावी कर्णधारों, होनहार बच्चियों के सपनों की उड़ान को पंख देकर और उनको लड़कों की तरह आगे बढ़ने के लिए समान अवसर और अधिकार देकर उनका रास्ता प्रशस्त करें और उनको जीवन में आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेरित करें। इसके साथ ही उनके सशक्तिकरण, उनके अधिकारों और उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी करें ताकि बालिकाओं का भविष्य उज्जवल बन सके।

प्रधान रामपाल शर्मा ने, कहा कि बालिकाओं को समान शिक्षा और सुरक्षा की यह दीपशिखा हमेशा ही इसी प्रकार से प्रज्वलित करके रखें और प्रत्येक बालिका अपने जीवन में आशा, उम्मीद और अद्भुत साहस और आत्मविश्वास तथा शौर्य की एक नई मिसाल बने।

मैं पुनः राष्ट्रीय बालिका दिवस की हार्दिक बधाई और उनके उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

☆☆☆

देश के 77 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधान रामपाल शर्मा ने सूरत में तिरंगा झंडा फहराया।

सूरत में 26 जनवरी को राष्ट्रीय ध्वज फहराने के उपरांत अभिवादन स्वीकार करते हुए

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने भावविभोर होकर कहा कि यह गणतंत्र दिवस हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक और इस महान दिवस के नेपथ्य में देश के लाखों देशभक्तों के तप, त्याग और समर्पण तथा संघर्ष और असंख्य बलिदानों का द्योतक है। उन्होंने कहा कि हमारा गौरवपूर्ण गणतंत्र दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि इस दिवस के महत्व को संविधान ने **समानता, न्याय और एकता** के अमूल्य उपहार के रूप में चित्रित किया गया है।

प्रधान रामपाल शर्मा, 26 जनवरी को, सूरत में, अलथान भटार सामुदायिक केंद्र में राष्ट्रीय ध्वज फहराने के उपरांत अपना संदेश दे रहे थे। उल्लेखनीय है कि प्रधान रामपाल शर्मा, सूरत में, आयोजित जिला सभा शपथ ग्रहण समारोह और गुजरात प्रदेश सभा की त्रैमासिक बैठक में भाग लेने के लिए आए हुए थे और सबसे पहले उन्होंने 77वें गणतंत्रता दिवस के अवसर राष्ट्रीय ध्वज फहराया और उपस्थित लोगों को गणतंत्र दिवस की बधाई दी। रामपाल शर्मा ने कहा कि, भारत संविधान केवल मात्र एक कागज का दस्तावेज़ नहीं है, अपितु देश के असंख्य लोगों के, सैकड़ों वर्षो के तप त्याग और बलिदान की मूर्त गाथा का द्योतक है और इस गणतंत्र की भावना को आत्मसात करके ही, देश के लोगों को समानता और सामाजिक न्याय मिलने का रास्ता प्रशस्त हुआ है। भारत का संविधान देश की एकता और अखंडता का मूर्त रूप है। यह संविधान 26 जनवरी 1950 को देश में लागू किया गया, जो हमारी सबसे बड़ी ताकत है। प्रधान ने कहा कि, गणतंत्र दिवस,देश की समृद्ध,सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक धरोहर तथा आत्मा का प्रतीक है, जो हर नागरिक को,जीने के लिए ,गरिमा और सम्मानजनक अवसर प्रदान करता है। आज का यह महान दिवस हमें अपने कर्तव्यों का बोध करवाने के साथ ही समानता के आधार पर देश का सर्वोच्च पद हासिल करने के लिए, अभिप्रेरित भी करता है। उन्होंने आह्वान किया कि हम, सभी मिलकर यह संकल्प लें कि एक जूट होकर देश को सन् 2047 तक एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र बनाने के लिए सभी मिलकर अनन्य सहयोग प्रदान करें और युवाओं को भी राष्ट्र निर्माण में, भागीदार बनाएं और देश की महान सांस्कृतिक परम्पराओं को आत्मसात करते हुए, आधुनिक भारत का निर्माण करें, ताकि देश का प्राचीन ऐतिहासिक गौरव पुनः स्थापित हो सके और देश सोने की चिड़िया बन सके।

महासभा प्रधान ने कहा कि, भारत का संविधान, देश की एकता और अखंडता तथा मानव अधिकारों का संरक्षक होने के साथ ही देश की एकता और अखंडता का भी प्रतीक है। यह गणतन्त्र दिवस गणतंत्र हमें यह भी स्मरण करवाता है कि हमारे संविधान ने ही हमें, स्वतंत्रता समानता, न्याय और एकता का अमूल्य उपहार दिया है, जो हर नागरिक को समानता के अधिकार का अवसर प्रदान करता है। देश, महान सांस्कृतिक परम्पराओं का एक गुलदस्ता है, इसको आत्मसात करके ही, देश समृद्ध बन सकता है। उन्होंने याद दिलाया कि भारत का संविधान ही, देश के लोकतंत्र की मूल आधारशिला है और देश का संविधान बनाने में, बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में गठित संविधान कमेटी ने 2 साल 11 महीने और 18 में इस संविधान को तैयार किया और यह संविधान 26 नवम्बर 1950 को बनकर तैयार हुआ, लेकिन इसको अधिकारिक रूप से 26 जनवरी 1950 को ही लागू किया गया था और इसके पीछे एक इतिहास छिपा हुआ है, पहली बार 26 जनवरी 1930 को, लाहौर अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया था कि 26 जनवरी 1930 को, पूरे देश में, स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा। उस दिन भारतीयों ने पहली बार तिरंगा झंडा फहराया था। इसी दिन की याद को जीवंत और सजीव बनाए रखने के लिए ही, देश का संविधान 26 नवम्बर की अपेक्षा 26 जनवरी को लागू ही किया गया और इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में हमेशा के लिए अमर कर दिया।

अतः में, इस गणतंत्र दिवस के अवसर पर मैं, आप सभी को हृदय के अन्तःकरण से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए, मनस्कामना करता हूँ कि गुजरात प्रदेश इकाई अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा के, कुशल नेतृत्व में, महासभा के प्लेटिनम सदस्यों की संख्या में, इसी प्रकार से अभिवृद्धि करती रहे और समाज में आपसी भाईचारा और परस्पर सहयोग की भावना भी इसी प्रकार से बलवती बनी रहे।

महासभा के पूर्व प्रधान रविशंकर शर्मा, गुजरात प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा, गुजरात प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत जिला प्रदेश अध्यक्ष जगदीश प्रसाद शर्मा, गुजरात प्रदेश प्रभारी मोहन लाल, युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष नीलेश शर्मा, जांगिड युवा मंच के अध्यक्ष सुरेश एवं सूरत जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती भगवती देवी सहित मातृशक्ति ने उपस्थित होकर, राष्ट्रीय ध्वज की वंदना की और राष्ट्रीय गीत जन गण मन गाकर , भारतीय की एकता ,अखंडता और सांस्कृतिक विरासत का परिचय दिया।

गुजरात प्रदेश अध्यक्ष, राजेन्द्र शर्मा।

गुजरात प्रदेश सभा की प्रथम त्रैमासिक बैठक का आयोजन 26 जनवरी को किया गया।

देश की डायमंड नगरी सूरत में, जिला सभा सूरत का शपथ ग्रहण समारोह और प्रदेश सभा गुजरात की पहली त्रैमासिक बैठक का आयोजन 26 जनवरी को, अल्थान भटार कम्युनिटी केंद्र में प्रातः10 बजे, महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा के मुख्य आतिथ्य में भव्य पूर्वक तरीके से शुरू हुआ और इस कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजरात प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा की गई। सबसे पहले समाज के गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में **देश के 77 वें गणतंत्र दिवस के पुनीत अवसर पर, महासभा प्रधान रामपाल शर्मा द्वारा, ध्वजारोहण किया गया इस कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान श्री विश्वकर्मा जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, प्रदेश प्रभारी मोहनलाल जांगिड द्वारा, गायत्री मंत्र का सस्वर उच्चारण करके, वातावरण को, आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत किया गया।** सर्वप्रथम मंचासीन अतिथियों और दूर दराज से पधारे हुए , महानुभावों का, माला एवं स्मृति चिह्न देकर यथोचित मान -सामान किया गया।

सबसे पहले सूरत ज़िला अध्यक्ष जगदीश प्रसाद द्वारा , नवगठित सूरत ज़िला कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। जांगिड युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष सुरेश एवं उनकी कार्यकारिणी को भी प्रदेश युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष नीलेश द्वारा पद एवं गोपनीयता शपथ दिलाई गई। इसके अतिरिक्त सूरत ज़िला महिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष पद पर, श्रीमती भगवती देवी को मनोनीत किया गया और उनको भी, सूरत ज़िला अध्यक्ष जगदीश प्रसाद द्वारा शपथ दिलवाई गई। सभी उपस्थित प्रतिष्ठित महानुभावों ने नव-नियुक्त पदाधिकारियों को उनके सफल कार्यकाल के लिए बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

इसके पश्चात, **प्रदेश सभा की प्रथम त्रैमासिक बैठक का शुभारंभ, प्रदेशाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार शर्मा की अध्यक्षता में शुरू हुआ। बैठक का संचालन प्रदेश महामंत्री मानाराम सुथार द्वारा एजेंडा के अनुसार किया गया।** इसके साथ ही उन्होंने नवगठित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में पधारे सभी सदस्यों का भी स्वागत और अभिनंदन किया।

इस अवसर पर **गुजरात प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद कुमार जांगिड, एवं उनके भाई राकेश जांगिड एवं दिनेश जांगिड** को प्रदेश सभा द्वारा **भामाशाह सम्मान से सम्मानित किया गया।** यह परिवार सन्तोष देवी, राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से समाज के गरीब और प्रतिभावान बच्चों को आर्थिक सहायता प्रदान करके उनकी सहायता कर रहा है।

प्रदेश सभा की इस पहली त्रैमासिक बैठक में लिए गए प्रमुख निर्णय----

1- विगत तीन महीनों में गठित शाखा, तहसील एवं ज़िला सभाओं की विस्तृत जानकारी सभा के समक्ष रखी गई, जिसका सर्वसम्मत्ति से अनुमोदन किया गया। **2-**आणंद एवं अरावली ज़िला सभाओं का कार्यकाल पूर्ण हो रहा है, आगामी माह में चुनाव कराने का निर्णय लेते हुए शीघ्र ही अधिसूचना जारी करने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। **3-** वलसाड, सेलवासा, वापी एवं उमरगांव की तहसील एवं

शाखा सभाओं का कार्यकाल पूर्ण होने पर भी इनके शीघ्र नव-गठन से संबंधित वलसाड जिला अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों से निवेदन किया गया। **4-** जिन ज़िला सभाओं के चुनाव हो चुके हैं, किंतु कार्यकारिणी गठन एवं शपथग्रहण व पंजीकरण शेष है, उन्हें आगामी तीन माह में समस्त प्रक्रिया पूर्ण करने का भी अनुरोध किया गया। **5-** पूर्व से और 5 नवंबर 2025 से 26 जनवरी 2026 तक का, प्रदेश सभा का लेखा-जोखा एवं बैंक स्टेटमेंट सभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। **6-** सभी ज़िला सभाओं से , अपनी-अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रदेश सभा को प्रस्तुत करने के लिए भी निवेदन किया गया। **7-** गुजरात प्रदेश सभा की नवगठित कार्यकारिणी को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए और बाकी के सदस्यों को भी अगली बैठक में प्रमाण पत्र वितरण किए जायेगें। **8-** सभा में एक प्रस्ताव रखा गया, जिसके अंतर्गत गुजरात प्रदेश सभा की कार्यकारिणी की प्रत्येक तीन माह में आयोजित होने वाली बैठक के लिए निमंत्रण पत्र व्हाट्सएप माध्यम से भेजना मान्य होगा। इस प्रस्ताव को सभी सदस्यों ने सर्वसम्मत्ति से स्वीकार कर दिया।

इस समारोह में प्रेरणादायक उद्बोधन देने के साथ ही इसकी शोभा को द्विगुणित करने वालों में, महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा, पूर्व प्रधान रविशंकर शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार शर्मा, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल जांगिड, गुजरात प्रदेश प्रभारी गांधीधाम मोहनलाल शर्मा, गुजरात प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद कुमार जांगिड, प्रदेश सभा युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष निलेश, प्रदेश कोषाध्यक्ष पप्पू राम जांगिड, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राम अवतार शर्मा, प्रदेश चुनाव अधिकारी बनवारी लाल शर्मा, भीलवाडा से बहन मदुरा, अहमदाबाद के जिला अध्यक्ष हरिदास शर्मा, कच्छ के जिला अध्यक्ष आस्तीमल, बड़ौदा के जिला अध्यक्ष शंकरलाल, भरूच के जिला अध्यक्ष मदनलाल, नवसारी के जिला अध्यक्ष चुन्नीलाल, पंचमहल के जिला अध्यक्ष सांवरमल, खेड़ा के जिला अध्यक्ष नेमीचंद , श्रवण धामु, पत्रकार जटा शंकर शर्मा, परमेश्वर, श्रीमती माधुरी आदि ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में, समाज को संगठित रहने, बच्चों की उच्च शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण की दिशा में आगे बढ़ने का सकारात्मक संदेश दिया तथा सूरत जांगिड समाज द्वारा आयोजित इस सुव्यवस्थित कार्यक्रम की सर्वत्र भूरि भूरि प्रशंसा भी की गई। इस सफल आयोजन के लिए सूरत ज़िले के समस्त पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं का, प्रदेश सभा की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया गया। समाज की एकता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है और समाज ही सर्वोपरि है। एक सशक्त समाज से ही उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है।

इस कार्यक्रम का प्रभावशाली ढंग से संचालन सूरत के विलास शर्मा और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल जांगिड द्वारा किया गया। अंत में , सूरत ज़िला अध्यक्ष जगदीश प्रसाद ने सभी अतिथियों और पदाधिकारियों का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त किया।

गुजरात प्रदेश महामंत्री,
मानाराम सुथार।

गुजरात जिला सभा सूरत का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने अभिभावकों का आह्वान किया कि वह इस प्रतिस्पर्धा और डिजिटल युग में बेहतर शिक्षा देने के साथ ही, उनको बेहतर संस्कार प्रदान करने के साथ ही बच्चों को सोशल मीडिया से दूरी बनाए रखते हुए उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाए रखने में भी अपना सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। उन्होंने गुजरात प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद कुमार जांगिड के द्वारा समाज के आर्थिक रूप से कमजोर और प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से श्रीमती सन्तोष देवी राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की है और मुझे उम्मीद है कि वह अपनी इस नि:स्वार्थ और उदात्त भावना को सदैव ही इसी प्रकार से बनाए रखें।

प्रधान रामपाल शर्मा 26 जनवरी को, देश की डायमंड नगरी सूरत में, जिला सभा सूरत का शपथ ग्रहण समारोह और प्रदेश सभा गुजरात की पहली त्रैमासिक बैठक के आयोजन के अवसर पर, देश के 77 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के उपरांत उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। बैठक के श्रीगणेश से पहले, दीप प्रज्जवलित औभगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना की गई और जिला सभा सूरत की कार्यकारिणी को भी पद और गोपनीयता की शपथ भी दिलवाई गई।

महासभा के पूर्व प्रधान रविशंकर शर्मा ने कहा कि समाज में जो भी योजना या कार्य हो, अपने घर से शुरू करना चाहिए। उदाहरण के तौर पर देश के उज्ज्वल भविष्य का जीवन सार्थक करने के लिए महासभा में एक शिक्षा कल्याण कोष की स्थापना की गई है और इस कोष में, आप एक रुपया भी हर रोज दान देंगे तो, देखते ही देखते , इस कोष में करोड़ों रुपए जमा हो जाएंगे। मुझे उम्मीद है कि प्रधान जी के इस सकारात्मक दृष्टिकोण और जनसेवा की भावना से ओत-प्रोत होकर समाज के भामाशाह और आमजन गरीब छात्र छात्राओं की पीड़ा और वेदना को महसूस करते हुए इस कोष के माध्यम से समाज के गरीब और प्रतिभावान बच्चों की सहायता कर सकेंगे।

प्रमोद कुमार जांगिड ने कहा कि उसके भाई राकेश जांगिड और विनोद जांगिड तथा बहन रेखा जांगिड ने मिलकर उसके परिवार द्वारा सन्तोष देवी, राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट का गठन किया गया है और इस ट्रस्ट के गठन का उद्देश्य यही है कि अगर, इस ट्रस्ट के माध्यम से होनहार बच्चों की सहायता करके वह कोई भी श्रेय नहीं लेना चाहते हैं, अपितु अभाव ग्रस्त बच्चों के जीवन में एक आशा और आकांक्षा का संचार करना है ताकि वह अपने स्वप्नों को मूर्त रूप देकर समाज और देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे सकें।

प्रदेश सभा की इस पहली त्रैमासिक बैठक में भी अनेक महत्वपूर्ण समाज हितेषी फैसले लिए गए। इस समारोह की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, गुजरात प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल जांगिड, गुजरात प्रदेश प्रभारी गांधीधाम के मोहनलाल शर्मा, गुजरात प्रदेश सभा युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष नीलेश, प्रदेश कोषाध्यक्ष पप्पू राम जांगिड, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राम अवतार शर्मा, प्रदेश चुनाव अधिकारी बनवारी लाल शर्मा के अतिरिक्त अनेक जिलों के अध्यक्षों के साथ ही श्रीमती माधुरी देवी सहित भारी संख्या में मातृशक्ति और युवा उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का प्रभावशाली ढंग से संचालन सूरत के विलास शर्मा और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल जांगिड द्वारा किया गया।

अंत में , सूरत ज़िला अध्यक्ष जगदीश प्रसाद ने सभी अतिथियों और पदाधिकारियों का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त किया।

गुजरात प्रदेश सभा- कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोद कुमार जांगिड

सुखदेव जांगिड ने राजस्थान में 60 हजार करोड़ के पूंजी निवेश का प्रस्ताव दिया है, जो मातृभूमि के प्रति उनकी समर्पण की भावना का द्योतक है।

भगवान के दिए हुए इस अमूल्य धरोहर रुपी जीवन की सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि एक व्यक्ति समाज सेवा के साथ-साथ अपनी मातृभूमि और देश की निष्काम भाव से सेवा करने में कितना योगदान देता है, और इस अवसर का लाभ उठाया है, उत्कट जिजीविषा के द्योतक, सरल स्वभाव और मधुर व्यवहार के द्योतक, मातृभूमि के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित और समर्पण की भावना से ओत-प्रोत, भामाशाह और समाज सेवी, राजस्थान के जालौर जिले की सांचौर तहसील के गांव अरण्य में जन्मे, अन्तर्राष्ट्रीय उद्योगपति सुखदेव जांगिड, आज किसी भी परिचय का मोहताज नहीं है। वह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सफल उद्यमी, के साथ साथ वह एक आई टी विजनरी, एवं वैश्विक निवेश के रूप में विख्यात हैं और वह अपनी प्रतिभा, अथक साधना और माता-पिता के आशीर्वाद और भगवान की अनुकम्पा से आज जिस मुकाम पर पहुंचें हैं, वहां तक पहुंच पाना बड़ा ही दुष्कर है , वह आने वाली भावी पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्रोत है, कि किस प्रकार एक गरीब परिवार में पैदा होकर, गरीबी की दीवार को चीरते हुए, जीवन में संघर्ष और परिश्रम की इबादत को स्वर्ण अक्षरों में लिखते हुए इस मुकाम तक पहुंचे हैं।

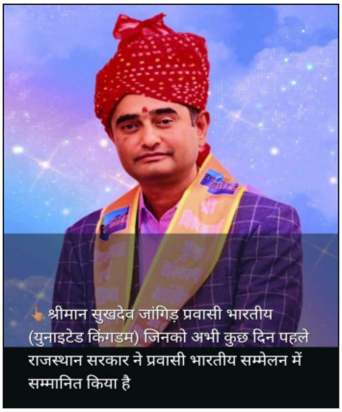
श्रीमान सुखदेव जांगिड़ प्रवासी भारतीय (युनाइटेड किंगडम) जिनको अभी कुछ दिन पहले राजस्थान सरकार ने प्रवासी भारतीय सम्मेलन में सम्मानित किया है

विश्व के 7 देशों में अपने व्यवसाय की पकड़ मजबूत करने वाले, विनम्रता और सौम्यता के प्रतीक सुखदेव जांगिड ने कहा कि 10 दिसंबर को जयपुर में **प्रवासी दिवस मनाया गया और 11 दिसम्बर को जयपुर में प्रवासी दिवस सम्मेलन** आयोजित किया गया और उसके पश्चात् **राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के साथ सभी प्रवासी भारतीयों ने एक बैठक की और उन्होंने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के समक्ष 60 हजार करोड़ रुपए के मेगा आई टी एवं टैक्नोलॉजी में निवेश का विस्तृत ख़ाका प्रस्तुत करके अपने अद्वितीय नेतृत्व, दूरदर्शिता और राज्य के प्रति गहरे भावात्मक प्रतिबद्धता का परिचय दिया।** इस बैठक में, सुखदेव जांगिड द्वारा, **जोधपुर में लगभग 60 हजार करोड़ रुपए की लागत से एक आई टी हब टैक्नोसिटी स्थापित करने के निर्णय के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गई है।** उन्होंने कहा कि इसके स्थापित होने से जहां सूचना क्रांति का आगाज होगा वहीं, जोधपुर का सर्वांगीण विकास भी सुनिश्चित होगा, वहीं **इसके स्थापित होने से लगभग 50,000 युवाओं को रोजगार के स्वर्णिम अवसर भी उपलब्ध हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि जोधपुर में आईटी पर विशेष फोकस करते हुए हाइटेक सिटी विकसित करने का स्तुत्य प्रयास किया जाएगा और विदेशों में बसे भारतीय टैलेंट को यहां पर लाया जाएगा और जोधपुर सहित देश के युवा टैलेंट को भी इसके साथ जोड़ेंगे** और जरुरत पड़ी तो, उन्हें विदेश भी भेजेंगे। जोधपुर की धरती पर स्थापित की जाने वाली इस हाई-टेक टैक्नोसिटी के लिए दिए गए इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव के माध्यम से सुखदेव जांगिड ने यह सिद्ध करके दिखलाया है कि यदि दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति और आत्मविश्वास और व्यापक दृष्टिकोण हो तो, मातृभूमि के विकास में प्रवासी राजस्थानी भी अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

जांगिड समाज के भामाशाह और सरल स्वभाव और सादगी के प्रतीक मृदु भाषी, अन्तर्राष्ट्रीय उद्यमी, प्रवासी भारतीय, सुखदेव जांगिड ने कहा कि मुख्यमंत्री के साथ मुलाकात के दौरान , उन्होंने राजस्थान सरकार को , जोधपुर में सूचना प्रौद्योगिकी हब टैक्नोसिटी स्थापित करने के लिए 60 हजार करोड़ रुपए के मेगा निवेश का प्रस्ताव दिया है और मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने प्रदेश के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि प्रस्तावित टैक्नोसिटी के लिए भूमि उपलब्ध करवाने के लिए प्राथमिक आधार पर कार्रवाई शुरू की

जाए। **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उनके इस प्रस्ताव को, दूरदर्शी, व्यापक और अत्यंत प्रभावशाली प्रस्ताव की भूरि -भूरि प्रशंसा करते हुए, सुखदेव जांगिड के प्रति हृदय के अन्तःकरण से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह पहल , न केवल राजस्थान की आर्थिक संरचना को सुदृढ़ करेगी, अपितु राज्य के युवाओं को नवीन अवसरों के साथ ही वैश्विक स्तर के रोजगार और उद्यमिता की असीम संभावनाओं से भी जोड़ेगी।** उन्होंने कहा कि इस प्रस्ताव से राज्य की युवाओं को ग्लोबल रोजगार ,आधुनिक तकनीक उद्यमिता के लिए अवसर उपलब्ध होंगे और इसके साथ ही राजस्थान में आई टी सेक्टर नई ऊंचाइयों पर पहुंचेगा। इससे रोजगार के असीमित अवसर उपलब्ध होने के साथ ही, टेक्नोलॉजी पार्क स्टार्टअप हब और नवाचार पर आधारित उद्योगों का पूरा नेटवर्क विकसित हो सकेगा। **प्रवासी राजस्थान दिवस के इस महत्वपूर्ण आयोजन में, जांगिड सुखदेव का अकाल्पनिक विजन, राज्य की आई टी अर्थव्यवस्था में एक नए युग की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है।**

सुखदेव जांगिड ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री की राजस्थान के प्रति एक सकारात्मक सोच है और इसी का यह परिणाम है कि प्रवासी भारतीयों ने राजस्थान प्रदेश में लगभग 65 हजार करोड़ रुपए के पूंजी निवेश के प्रस्तावों को प्रदेश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने के लिए स्वीकृति दी गई है और इस सकारात्मक कदम से मातृभूमि के विकास में प्रवासी राजस्थानी अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं और राजस्थान में भविष्य में आई टी क्षेत्र में भविष्य की नींव पहले से और अधिक सुदृढ़ दिखाई देगी। उन्होंने कहा कि राजस्थान में में आईटी सेक्टर के विस्तार तकनीकी नवाचार उद्यमिता बढ़ावा **रोजगार सृजन करने की अपार संभावना है और उनका यह प्रस्ताव एक बिजनेस प्लान नहीं है, बल्कि राजस्थान की अगली पीढ़ी के भविष्य को मजबूत करने वाला एक बहुआयामी विकास का माडल है।** उन्होंने बड़े ही गर्व और आत्मविश्वास के साथ कहा कि उन्होंने सन् 2014 में, मातृभूमि के असीम प्रेम और श्रद्धा के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए, ब्रिटेन की नागरिकता लेने के प्रस्ताव को विनम्रता पूर्वक अस्वीकार कर दिया था और भारतीय नागरिक बने रहना स्वीकार किया और इतना ही नहीं, वह भारत से लंदन आने वाले, युवाओं का मार्ग दर्शन भी करता रहता हूँ।

भामाशाह सुखदेव जांगिड ने अपनी सफलता का राज बताते हुए कहा कि वह सांचौर तहसील के गांव अरण्य में एक मध्यम किसान परिवार में पैदा हुए और उनकी अर्धांगिनी एक सुघड़ और संस्कारवान सद ग्रहणी है। **मैंने प्राइमरी शिक्षा गांव के अरण्य सरकारी स्कूल से हासिल की और उसके पश्चात उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए मैं 1997 में जोधपुर आ गया और उसके पश्चात सन् 2006 में लंदन यूनिवर्सिटी, लंदन से एमबीए करने के पश्चात 2007-08 में लन्दन की एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में लंदन में नौकरी की।** लेकिन उनकी असीम प्रतिभा ने इनको आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेरित किया और बहुराष्ट्रीय कंपनी की नौकरी छोड़ कर, **अपने आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ सन् 2009 में लंदन में, एक कैप्सिटेक कंपनी रजिस्टर्ड की और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, काम करना शुरू कर दिया किया और इस बीच आर्थिक कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ा, लेकिन अपना हौसला और जज्बे को कभी भी कम नहीं होने दिया।**

उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने अपनी कम्पनी का एक ऑफिस भारत में भी खोला है और माता-पिता के आशीर्वाद और भगवान की अनुकम्पा से, साफ्टवेयर बनाने वाली इस कम्पनी ने, वर्तमान में सात देशों क्रमशः लंदन (यूके), यूएस, ऑस्ट्रेलिया,

मलेशिया, इंडोनेशिया और दुबई में अपने कार्यालय खोले हुए हैं और आज इन देशों में कुल 29 कंपनी संचालित की जा रही हैं और इन सभी कम्पनियों में लगभग 900 कर्मचारी कार्यरत है।

सामाजिक क्षेत्र में योगदान सुखदेव जांगिड, विदेश में रहते हुए भी समाज सेवा में भी सदैव ही अग्रणीय रहते हैं, वह अपनी मातृभूमि जालोर जिले की सांचौर तहसील के गांव अरण्य के विकास में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं, जिनमें शिक्षा और कौशल विकास और रोजगार उपलब्ध करवाना शामिल है और सामाजिक कार्यों में योगदान देने में भी, कभी भी पीछे नहीं रहते हैं। **वह जोधपुर की शिल्पी फाउंडेशन के संरक्षक है और उन्होंने शिल्पी फाउंडेशन के 14 सितम्बर को जोधपुर में आयोजित प्रतिभा समारोह में एक करोड़ रुपए का दान देने की घोषणा की थी** और इसके साथ ही विद्यार्थियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लिए सांचौर में बालिका छात्रावास, गौ सेवा, संवर्धन व सरक्षण , अयोध्या में बनाए गए, भव्य राम मंदिर निर्माण और समाज के मंदिर निर्माण में महत्वपूर्ण आर्थिक योगदान दिया है और भविष्य में भी इसी प्रकार से समाज सेवा करते रहेंगे कर रहे हैं।

उन्होंने हाल ही में, सांचौर में बालिका छात्रावास के निर्माण और संचालन के लिए एक करोड़ रुपए देने की घोषणा की है। जो उनकी बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने की सोच और उनके सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को भली-भांति परिलक्षित करती है। प्रवासी होने के बावजूद भी मातृभूमि के उनका अगाध प्रेम और समर्पण की भावना और अपने कर्तव्य के प्रति निरंतर सहयोग की भावना का प्रेरणादायक है। विश्वविख्यात दृष्टिकोण रखने वाले और महान राष्ट्र भक्त, सुखदेव जांगिडने युवाओं को सफलता का मूल मंत्र देते हुए कहा कि जीवन में आने वाली चुनौतियों से डरने की अपेक्षा उनका हल खोजने का प्रयास करें , क्योंकि सफलता का मार्ग असफलता के मार्ग से ही होकर गुजरता है। युवाओं को अपने लक्ष्य पर फोकस रखना चाहिए और चुनौतियों से कभी भी डरना और घबराना नहीं चाहिए , बल्कि उनसे निपटने के लिए एक कार्ययोजना तैयार करते हुए जीवन में आगे बढ़ने का कार्य करें, एक दिन सफलता अवश्य ही आपके कदम चूमेगी।

☆☆☆ **सम्पादक, राम भगत शर्मा।**

15 फरवरी को महाशिवरात्रि के पावन पर्व की हृदय के अन्त:करण से बधाई।

महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा,

मैं, महासभा रुपी परिवार को, 15 फरवरी को मनाए जाने वाले, भारतीय आध्यात्मिक चेतना, संस्कृति और प्रकृति का द्योतक, उपासना के इस उत्सव महाशिवरात्रि के पुनीत अवसर अपनी तरफ से हार्दिक बधाई और अन्त:करण से शुभकामनाएं देता हूँ। यह पर्व भारतीय सांस्कृतिक चेतना के ऊध्वर्गमन और आध्यात्मिक ऊर्जा का एक स्रोत है **महाशिवरात्रि का यह महान पर्व शिव की पूजा नहीं अपितु अपने भीतर छिपे हुए शिवत्व की पहचान करना है।** जिस भी श्रद्धालु और परम शिव भक्त ने **देवों के देव महादेव, अर्धनारीश्वर, नीलकंठ, औघड़ दानी और शिव-शक्ति के प्रतीक, त्रिनेत्रधारी और शंम्भूनाथ भगवान** की असीम शक्ति को पहचान लिया फिर वह मौत के डर से सदैव के लिए मुक्त हो जाता है, क्योंकि उस भक्त को मालूम है कि जो **काल का भी महाकाल है,** और **उसका सिर पर हाथ है तो, फिर उस मृत्यु रुपी काल से क्या डरना?।**

महाशिवरात्रि का यह महान पर्व शिव और आदिशक्ति माँ पार्वती के शुभ परिणय बंधन का द्योतक है। उज्जैन के महाकाल मंदिर में, इस उत्सव को 9 दिन तक मनाया जाता है। आप सभी इस दिन भगवान शिव-पार्वती की पूजा अर्चना करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करें और सौभाग्यवान बने और आपके जीवन में करुणा रुपी गंगा की जलधारा अविरल बहती रहे। कामदेव को अपने त्रिनेत्र से भस्म करने वाले, भगवान महादेव, शिव के जीवन में वासना नहीं अपितु उपासना का प्रमुख स्थान है, जो मानव जीवन की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

मेरी मनस्कामना है कि भगवान शिव की अनुकम्पा, आप और आपके परिवार पर, अनवरत और सतत् इसी प्रकार से सदैव ही बनी रहे। भगवान शिव आपकी सभी इच्छाओं और मनोकामनाओं की पूर्ति के साथ ही, सभी कार्यों में सिद्धि प्रदान करें।

महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर सभी मिलकर बोलो --- **(हर-हर महादेव)।**

***

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के आश्वासन के बाद श्री विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज की गरिमा बनी रहेगी।

भगवान विश्वकर्मा का पहाड़गंज में लगभग 200 साल पुराना प्राचीन मंदिर है और यह समाज की एक ऐतिहासिक और अनमोल धरोहर है और इस धरोहर को बचा कर रखना, भगवान विश्वकर्मा के वंशजों के लिए अपनी आन बान और शान को बनाए रखने के समान है। लेकिन भारतीय रेलवे द्वारा, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का पुनर्निर्माण और जीर्णोद्धार कार्य किया जा रहा है और इस पुनर्निर्माण के कार्य के चलते हुए ही, समाज के लोगों द्वारा श्री विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज के बारे में ऐसी आशंकाएं की जा रही थीं कि कहीं पर इस जीर्णोद्धार का असर, इस मन्दिर के वैभव और इसकी गरिमा पर न पड़े और इस शंका के निवारण के लिए ही, एक प्रतिनिधि मंडल हंसराज जांगिड एवं सम्पूर्ण पहाड़गंज मन्दिर कमेटी ने पिछले महीने राज्य सभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा के नेतृत्व में, केन्द्रीय रेलवे मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात करके एक ज्ञापन दिया गया, जिसमें नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के जीर्णोद्धार के समय में समाज की 200 वर्ष पुरानी भगवान विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज को, इस जीर्णोद्धार के समय लोगों के मन में पैदा हो रही आंशका को दूर करने का आश्वासन देने के लिए यह मुलाकात की गई थी।

केन्द्रीय रेलवे मंत्री अश्विनी वैष्णव से सांसद रामचन्द्र जांगड़ा के नेतृत्व में, मुलाकात करके उनको, विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज के बारे में ज्ञापन दिया गया।

इस प्रतिनिधि मंडल में, विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज के प्रधान गंगादीन जांगिड, विश्वकर्मा मंदिर के उच्च स्तरीय समिति के सदस्य हंसराज जांगिड, महामंत्री देशराज जांगिड , संरक्षक वेद प्रकाश शर्मा और सांसद के नीजी सचिव, मनीष जांगिड शामिल थे। इस प्रतिनिधि मंडल ने, सांसद रामचन्द्र जांगड़ा के नेतृत्व में, केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात की थी और केंद्रीय मंत्री ने, सभी शंकाओं का समाधान करते हुए, प्रतिनिधि मंडल को पूर्ण विश्वास दिलाया है, कि सृष्टि के निर्माता और शिल्प कला के देवता भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज को, किसी प्रकार का नुकसान या उसमें कोई व्यवधान पैदा नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि रेलवे स्टेशन के जीर्णोद्धार के रास्ते में, जो भी आवश्यक परेशानी आएगी, उसका समाधान रेलवे द्वारा स्वंय निकाला जाएगा, लेकिन इस ऐतिहासिक धरोहर को कोई भी क्षति नहीं पहुंचने दी जाएगी।

राज्य सभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा से, 9 फरवरी को,विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज समिति के सदस्यों और दिल्ली के विश्वकर्मा वंशजों ने, मुलाकात करके उनको सम्मानित किया गया

सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने कहा कि, समाज का मुख्य सेवक होने के नाते, मेरा यह दायित्व है कि, आपकी दुःख और परेशानियों का समाधान तत्परता पूर्वक तरीके से किया जाए और मैं आपको, भरोसा और विश्वास दिलाता हूँ कि, इस बारे में रास्ते में कोई भी समस्या आई तो, चाहे आधी रात को मेरे पास आ जाना। लेकिन मुझे विश्वास है कि रेलवे मंत्री द्वारा आश्वासन के बाद कोई समस्या नहीं आएगी। हम सभी मिलकर एक साथ आगे बढ़ें और समाज को संगठित करें, क्योंकि संगठन में, एकता में ही सबसे बड़ी ताकत और शक्ति है और भगवान विश्वकर्मा की इस समाज पर अनुकम्पा सदैव ही बनी रहे। केंद्रीय रेलवे मंत्री के आश्वासन के बाद, सांसद रामचन्द्र जांगड़ा का आभार व्यक्त करने के लिए, विश्वकर्मा समाज से जुड़े हुए लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल सांसद रामचन्द्र जांगड़ा का, आभार व्यक्त करने के लिए श्री विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज के प्रधान गंगादीन के नेतृत्व में 9 फरवरी को सांसद के सरकारी निवास पर पहुंचा और सांसद रामचन्द्र जांगड़ा का आभार और धन्यवाद व्यक्त किया तथा उनको, माला, पगड़ी, शाल व सम्मान स्वरूप प्रतीक चिह्न भेंट करके, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई और हृदय से उनका आभार व्यक्त किया गया।

इस प्रतिनिधि मंडल में, जिन लोगों ने सम्मिलित होकर, सांसद का, आभार व्यक्त किया, उनमें पहाड़गंज मन्दिर की उच्च स्तरीय समिति के सदस्य हंसराज जांगिड, विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज के महामंत्री देशराज जांगिड, कोषाध्यक्ष रामकिशन जांगिड, मन्दिर के संरक्षक वेद प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद गुजरात के भारत सुथार, रामगढ़िया बोर्ड दिल्ली के प्रधान, त्रिलोचन सिंह, वरिष्ठ उप प्रधान कंवल सिंह, सचिव मनमीत सिंह, सलाहकार जसवीर सिह, पांचाल समाज दिल्ली के अध्यक्ष यशपाल पांचाल, धीमान समाज दिल्ली के सचिव आर के धीमान, विश्वकर्मा मंदिर मंगोलपुरी के अध्यक्ष रमेश चंद्र जांगिड शामिल हैं।

गंगादीन जांगिड, अध्यक्ष विश्वकर्मा मंदिर पहाड़गंज।

हिसार की सुमन जांगिड को अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ हरियाणा के पद पर मनोनीत किया गया

समाज सेवा की भावना जहां संस्कारों से आती है, वहीं अपने जीवन साथी से भी इसकी प्रेरणा लेकर समाज सेवा की भावना और अधिक परिपक्व और विकसित होती है और पिता जगदीश जांगिड और माता श्रीमती धनपति देवी जांगिड के घर 21 अक्टूबर 1976 को गांव भगाना, में पैदा हुई, सुमन जांगिड इसका ज्वलंत उदाहरण है। इनके पिता महासभा के साथ-साथ सामाजिक कार्यो से जुड़े हुए थे और उनकी प्रेरणा से ही, मुझे समाज के लोगों की सेवा करने का संकल्प लिया और इनका विवाह, हिसार जिले के ऐतिहासिक गांव, जहां पर खुदाई के दौरान दुर्लभ प्राचीन मूर्तियां और अन्य वस्तुएं उपलब्ध हुई है, के रहने वाले मास्टर रघबीर जांगिड के साथ हुआ।

शिक्षा के प्रति उत्कट जिजीविषा ने, सुमन को शादी के बाद भी, अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए अभिप्रेरित किया और इसके पति रघबीर जांगिड, जो कि मुख्याध्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं और जिला सभा के उपाध्यक्ष हैं, उन्होंने सुमन को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया और जे बी टी, की डिग्री, हासिल करने के बाद उन्होंने जे बी टी,अध्यापक के पद पर सन् 2000 में सरकारी नौकरी ज्वाइन की और अपनी पढ़ाई भी जारी रखी तथा पत्राचार के माध्यम से स्नातक और बी एड की परीक्षा पास की, आजकल वह टी जी टी, हिन्दी अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। **सुमन ने सरकारी सेवा और समाज सेवा में सामंजस्य बनाए रखते हुए, अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान की है, डॉ मोहित जांगिड ने,एम एम बी एस और बिटिया, पूजा जांगिड, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से पी एच डी कर रही है।** समाज सेवा के अपने लक्ष्य के साथ, जीवन में आगे बढ़ने का लक्ष्य निर्धारित किया है और उनकी समाज के प्रति इसी निष्ठा को ध्यान में रखते हुए ही, महासभा की, महिला प्रकोष्ठ की के अन्तर्गत हरियाणा प्रदेश महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

सुमन जांगिड को, हरियाणा प्रदेश की महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष बनाने के साथ ही 11 जनवरी को, अजमेर में, आयोजित,अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, की महिला प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर, महासभा प्रधान रामपाल शर्मा और महासभा की महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष श्रीमती सविता जांगिड के द्वारा श्रीमती सुमन जांगिड को, पद और गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई थी। सुमन जांगिड ने कहा कि मुझे महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा और श्रीमती सविता जांगिड द्वारा जो महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है, उस दायित्व का निर्वहन मैं, बड़ी ही, सत्य निष्ठा और समर्पण की भावना तथा ईमानदारी के साथ करते हुए, समाज की महिलाओं को आगे लाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रदेश अध्यक्ष ने, भावुक होते हुए कहा कि, महासभा प्रधान रामपाल की महिलाओं के प्रति सोच बड़ी ही सकारात्मक है, इसलिए आज समाज की महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में आगे आ रही हैं। अजमेर में पहली बार महासभा के महिला प्रकोष्ठ की, कार्यकारिणी का इतना भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें देश के कौने-कौने से मातृशक्ति ने, अजमेर की ऐतिहासिक धरा पर, जहां पर इस महासभा का जन्म हुआ है और इस ऐतिहासिक शहर अजमेर से, महासभा के चार प्रधानों को समाज सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, की साक्षी बनने का अवसर प्राप्त हुआ।

सुमन जांगिड ने कहा कि अध्यक्ष बनने से पहले भी, वह प्रदेश की महिला प्रकोष्ठ से जुड़ी रही है और इससे पहले वह जिला सभा हिसार की, महिला प्रकोष्ठ के सचिव के पद पर भी कार्यरत रही है। इतना ही नहीं उनको अपने जीवन साथी, जिला सभा हिसार के उपाध्यक्ष रघबीर सिंह जांगिड का भी समय-समय पर मार्ग दर्शन भी मिलता रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि उन पर हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड और मातृशक्ति ने उन पर जो विश्वास व्यक्त किया है और जो, दायित्व उनको सौपा गया है, उस दायित्व का भलीभांति निर्वहन करते हुए, वह सभी के भरसक सहयोग और समर्थन से ही नि:स्वार्थ और समर्पण भाव से कार्य करते हुए समाज की और विशेषकर महिलाओं की आशाओं और आकांक्षाओं पर खरा उतरने का हर संभव प्रयास करेंगीं।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा, हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जांगिड और महासभा के उच्च स्तरीय समिति के सदस्य और हिसार के पूर्व पार्षद ओमप्रकाश जांगिड और जिलाध्यक्ष उदय सिंह जांगिड, महामंत्री अमिलाल जांगिड ने, सुमन जांगिड को बधाई देते हुए कहा है कि, उनको विश्वास है कि वह, अपने दायित्व का भलीभांति निर्वहन करते हुए, मातृशक्ति को जागरूक करने के साथ ही, बच्चों को बेहतर शिक्षा और संस्कार देने के लिए महिलाओं को अभिप्रेरित करते हुए जागृति का शंखनाद करेगी। हम उनके मंगलमय कार्यकाल की बधाई देते हैं।

सम्पादक, राम भगत शर्मा।

नाशिक में 2027 में लगने वाले सिंहस्थ कुंभ मेले की तैयारियों के बीच महामण्लेश्वर भगवता नन्द गिरी ने पौधारोपण किया।

नाशिक और त्र्यंबकेश्वर की पावन धरा, कुम्भ नगरी के रूप में विख्यात, धार्मिक आस्था और प्राचीन सांस्कृतिक वैभव, परंपराओं तथा गौरवशाली इतिहास को, अपने गर्भ में समाहित किए हुए है और देश में 12 ज्योतिर्लिंगों में से, 8वां ज्योतिर्लिंग त्र्यंबकेश्वर में है और ज्योतिर्लिंग होने के साथ-साथ ही नाशिक की पुण्य धरा पर, भगवान श्री राम और आदिशक्ति माँ सीता और लक्ष्मण अपने 14 वर्षों के बनवास के दौरान कुछ समय के लिए नाशिक में रहें थे और नाशिक में स्थित तपोवन में, रावण की बहन शरुपणखां की लक्ष्मण द्वारा नाक काटी गई थी और इसके साथ ही त्र्यंबकेश्वर में आंजनेय पर्वत पर भगवान शंकर के 12 वे रुद्रावतार, रामभक्त हनुमान जी की जन्म स्थली आंजनेय पर्वत और गोदावरी का उद्गम स्थल भी है।

श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी भगवतानन्द ने नाशिक में पौधारोपण किया और साथ में खड़ी हुई हैं नाशिक महानगरपालिका आयुक्त मनीषा शर्मा।

इसके साथ ही नाशिक महाराष्ट्र का, एक प्रमुख दर्शनीय स्थान भी है जो भारत के प्राचीन इतिहास और इसके वैभव का साक्षी रहा है। गौतम ऋषि गौतम ने तपस्या करके, भगवान शिव को प्रसन्न किया था और इस क्षेत्र में पानी की कमी को पूरा करने के लिए भगवान शिव ने इस क्षेत्र में, गोदावरी नदी का अवतरण किया था। नाशिक और त्र्यंबकेश्वर में सन् 2027 में प्रत्येक 12 वर्ष के बाद लगने वाले सिंहस्थ कुंभ मेले की, जिला प्रशासन द्वारा युद्ध स्तर पर तैयारी की जा रही है और इसी क्रम में, नाशिक महानगरपालिका द्वारा सिंहस्थ कुंभ मेले को ध्यान में रखते हुए नाशिक के मालाबार में, पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की गई है। नाशिक में लगभग 15 हजार पेड़ लगाने का एक, विस्तृत पौधारोपण कार्यक्रम तैयार किया गया है।

इस अवसर पर उज्जैन मध्यप्रदेश से विशेष रूप से, इस कार्यक्रम की शोभा को द्विगुणित करने के लिए जांगिड समाज के कोहिनूर श्री श्री 1008 श्री महामंडलेश्वर स्वामी भगवतानन्द महाराज आए हुए थे। उन्होंने भी अन्य सन्त-महात्माओं के साथ मखमलाबाद में पौधारोपण किया और कहा कि **उज्जैन के महाकाल के पौराणिक इतिहास की तरह ही, नाशिक -त्र्यंबकेश्वर की पुण्य धरा देश के पौराणिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव की अनमोल धरोहर है और यही हमारी धार्मिक आस्था के केन्द्र, हमें हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विरासत को, सहेज कर रखने तथा एक दूसरे के साथ में हमें जोड़े रखने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।**

महामण्डलेश्वर ने कहा कि 12 वर्ष बाद अगले वर्ष अगस्त 2027 में नाशिक-त्र्यंबकेश्वर में लगने वाले सिंहस्थ कुंभ मेले की तैयारियां जोरों से शुरू हो गई है और **इस पुण्य धरा पर 15 हजार पेड़ लगाने का अभियान शुरू किया गया है। इस पौधारोपण का श्रीगणेश करके अपने भगवान श्री राम और माता सीता तथा त्रेता युग की स्मृतियों को सहेज कर रखने का कार्य करेगीं और युगों-युगों तक इनकी, स्मृतियों की सुगंध हवा में फैल कर प्राचीन वैभव की मधुर स्मृतियों की याद दिलाती रहेंगी।** उन्होंने भाव विह्वल होते हुए कहा कि **मुझे तपोवन और सीता गुफा और काला राम मंदिर का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वैसे तो मुझ पर भगवान श्री राम और सीता माता तथा हनुमान जी महाराज की विशेष अनुकम्पा है, क्योंकि मैं, रामकथा के माध्यम से भगवान श्री राम की मानवीय संवेदनाओं और सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण आपसी सौहार्द प्रेम और भक्ति का सन्देश, रामकथा के माध्यम से अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार भगवान श्री राम के आदर्शों को आत्मसात करते** हुए रामकथा के माध्यम से प्रचारित और प्रसारित करता रहता हूँ, लेकिन आज यहां पर भगवान श्री कालाराम और भगवान श्री राम से जुड़ी वैभवशाली परम्पराओं का, साक्षात दर्शन लाभ करके मुझे जो सुखद आनन्द के अनुभव की अनुभूति हुई है, उसका शब्दों में उल्लेख नहीं किया जा सकता है। **क्योंकि भगवान श्री राम के वनवास से संबंधित साक्ष्यों की यह धरा गवाह रही है और इन्हीं मधुर स्मृतियों को मैं, अपने हृदय में संजोकर अपने साथ उज्जैन ले जा रहा हूँ। इस क्षेत्र को हरा-भरा बनाने और भक्तों को सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए हजारों पेड़ नाशिक और त्र्यंबकेश्वर में लगाए जाएंगें, जहां पर भगवान श्री राम के वनवास के दिनों के याद को सहेज कर रखते हुए सिंहस्थ कुंभ मेले में आने वाले, भक्त गण इनकी छाया में बैठकर आनन्द की सुखानुभूति का अनुभव महसूस कर सकेंगे।**

नाशिक महानगरपालिका की आयुक्त मनीषा शर्मा ने कहा कि नाशिक शहर अपनी अद्भुत सांस्कृतिक विरासत और धरोहर को सदियों से संजोकर रखे हुए हैं और **भगवान श्री राम और भगवान महादेव की नगरी त्र्यंबकेश्वर कि इस पुण्य धरा पर 31 अक्टूबर 2026 में सिंहस्थ मेले की शुरुआत के लिए ध्वजारोहण होगा और अगले साल 2 अगस्त 2027, सोमवार अमावस्या को, 12 वर्ष बाद लगने वाला सिंहस्थ कुंभ मेले में पहला शाही स्नान आयोजित किया जा रहा है** और मुझे इस बात की सुखद अनुभूति और आनंद का अहसास हो रहा है। **उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि सन् 2015 में, जिस समय नाशिक में कुंभ मेला आयोजित किया गया था, उस समय भी मैंने एक आई ए एस प्रोबेशनर के तौर पर, यहां पर अपनी ड्यूटी दी थी और उसके दौरान ही, मैंने भगवान शंकर और भगवान श्री राम जी से यह विनय अनुनय और प्रार्थना की थी कि भविष्य में मुझे यदि इस भव्य के भव्य आयोजन में सहयोग और सेवा करने का सुअवसर मिल सके तो यह मेरा सौभाग्य होगा और भगवान महेश और भगवान श्री राम ने, मेरे मन की यह मनोकामना और इच्छा पूरी कर दी है और महाराष्ट्र सरकार ने नाशिक महानगरपालिका के आयुक्त के रूप में, मुझे सिंहस्थ कुंभ मेले के लिए जो भी दायित्व सौंपा है,** उस दायित्व को सत्य निष्ठा और समर्पण की भावना से पूरा करने के हर सम्भव प्रयास किए जाएंगे। क्योंकि कुंभ लोगों की महान आस्था और विश्वास तथा श्रद्धा का केंद्र है, जहां पर लोग आस्था की डुबकी लगाने के साथ ही, लाखों की संख्या में, सन्त महात्मा और ऋषि-मुनि और महामण्डलेश्वर अपने शिष्यों के साथ शाही और अमृत स्नान करने के लिए आते हैं। मनीषा शर्मा ने कहा कि नाशिक महानगरपालिका का, यह हर सम्भव प्रयास रहेगा कि, इस दिव्य और भव्य सिंहस्थ कुंभ मेले में, सभी भक्तों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएं और इसी उद्देश्य को ध्यान रखते हुए ही, नाशिक महानगरपालिका द्वारा सिंहस्थ कुंभ के दौरान लगभग 700 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की शुरुआत की गई है और नाशिक शहर के विकास के लिए लगभग 30 हजार करोड़ रुपए की योजनाएं स्वीकृत की गई हैं और इन योजनाओं की शुरुआत मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस, इन विकास कार्यों की शुरुआत, खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री छगन भुजबल, शिक्षा मंत्री दादा भूसे और खेल मंत्री मानिकराव कोकटे की उपस्थिति में, महाराष्ट्र के जल संसाधन और नाशिक मेला मंत्री गिरीश महाजन द्वारा की गई है।

उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं में, सुरक्षा के लिए कैमरे लगाना, मुख्य रूप से सीवरेज प्रणाली को मजबूत करना ताकि कुंभ के दौरान यात्री और श्रद्धालु भक्त, माँ गोदावरी में डुबकी लगाकर आनन्द की अनुभूति का अहसास कर सकें और **राम कला पथ का निर्माण** और नई सड़कों का निर्माण और चौड़ी करण करना भी शामिल है। अगले वर्ष लगने वाले इस सिंहस्थ कुंभ मेले की तैयारियों पर, तेजी से काम किया जा रहा है और मुख्यमंत्री देवेन्द्र फण्डनवीस ने, भी सिंहस्थ से जुड़े सभी अधिकारियों और मंत्रियों को सख्त निर्देश दिए हैं कि, सभी कार्य जनता की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए ही, गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरे करने का प्रयास करें, क्योंकि यह पर्व लोगों की आस्था से जुड़ा हुआ है। नाशिक महानगरपालिका आयुक्त ने कहा कि इस आयोजन को नाशिक नगर और त्र्यंबकेश्वर निवासी लोगों के सहयोग से एक भव्य और वैभव से परिपूर्ण कुंभ मेला बनाने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे ताकि माँ गंगा का, स्वरूप और भगवान शंकर की जटाओं से निकली हुई गोदावरी में संत-महात्मा, श्रद्धालु अपनी श्रद्धा और आस्था के साथ डुबकी लगाते हुए तपोवन, कालाराम मंदिर और भगवान त्र्यंबकेश्वर के दर्शन करके, पुण्य अर्जित कर सकेंगे और **महानगरपालिका द्वारा चलाए गए इस पौधारोपण अभियान का एक मात्र लक्ष्य यह है कि इन पेड़ों की हवा के साथ-साथ, लोगों को, त्रेता युग में भगवान श्री राम और त्र्यंबकेश्वर ज्योतिलिंग से जुड़ी वैभवशाली सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्पराओं को आत्मसात करने का सौभाग्य प्राप्त हो सके।** उन्होंने कहा कि मुझे भी, आज पौधारोपण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और मैं अपने आप को धन्य समझती हूँ कि, सन्त महात्माओं के बीच भगवान शंकर और भगवान श्री राम तथा हनुमान जी की पावन धरा पर इस हरित अभियान का हिस्सा बनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

नाशिक महानगरपालिका आयुक्त मनीषा शर्मा ने कहा कि **नाशिक महानगरपालिका द्वारा शुरू की गई इन सभी योजनाओं को मार्च 2027 तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है और मुझे विश्वास है कि नाशिक के लोगों के, अथक सहयोग से हम इन सभी योजनाओं को समयबद्ध तरीक़े से पूरा किया जाएगा और इस सिंहस्थ कुंभ मेले को ध्यान में रखते हुए ही, नाशिक-त्र्यंबकेश्वर में लगभग 30 हजार करोड़ रुपए कार्य शुरू किए गए हैं और इन सभी कार्यों से नाशिक और त्र्यंबकेश्वर की तस्वीर बदलने के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार के भी पर्याप्त मात्रा में रोजगार के अवसर उपलब्ध होने के साथ ही,** तीर्थ यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलने के साथ ही नाशिक शहर का विकास भी संभव हो सकेगा। उन्होंने लोगों से अपील की है कि, वह जिला प्रशासन के साथ सहयोग करें ताकि सभी परियोजनाएं समय बद्ध तरीके से पूरी की जा सके। विपुल धन्यवाद।

सम्पादक, राम भगत शर्मा।

भगवान विश्वकर्मा : सृष्टि के शिल्पकार और श्रम-संस्कृति के आदिदेव

लेखक: पूर्व महासभा पत्रिका के सम्पादक , ताऊ शेखावाटी

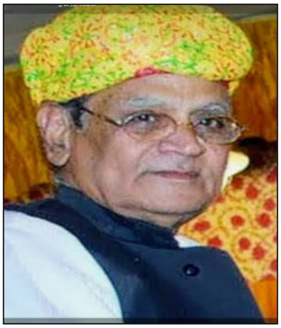

महासभा के जांगिड पत्रिका के पूर्व सम्पादक ताऊ शेखावाटी

भारतीय सनातन परंपरा में देवत्व केवल उपासना का विषय नहीं, बल्कि जीवन-पद्धति का आधार है। जिन देवताओं ने मानव जीवन को दिशा, साधन और संरचना प्रदान की, उनमें भगवान विश्वकर्मा का स्थान सर्वोच्च है। वह केवल देवता ही नहीं, बल्कि, सृष्टि के प्रथम शिल्पकार, आदिदेव अभियंता और श्रम-संस्कृति के प्रणेता हैं और आज यह संसार उनका ऋणी है।

जांगिड समाज के कोहिनूर, प्रख्यात साहित्यकार, लेखक, शेखावाटी के शिरोमणि और अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की जांगिड ब्राह्मण पत्रिका के पूर्व संपादक राजस्थानी कवि ताऊ शेखावाटी ने, भगवान विश्वकर्मा के महात्म्य को अपने काव्य-चिंतन के माध्यम से मोतियों की माला की तरह पिरोया है। उन माला रुपी मोतियों को, 31 जनवरी को मनाई गई भगवान विश्वकर्मा जयंती और उसके जीवन और कला कौशल को अपने शब्दों के माध्यम से उसमें रंग भरके, अपने भावपूर्ण विचारों को सारगर्भित शब्दों में उल्लेखित किया है। उनके भगवान विश्वकर्मा के बारे में यह सारगर्भित विचार, केवल एक कविता ही नहीं, बल्कि समाज, श्रम और सृष्टि के मूल, सत्य का एक उद्घोष हैं जो मानवता के लिए एक अनूठी प्रेरणा है।

भगवान विश्वकर्मा जयंती के पावन अवसर पर प्रस्तुत इस लेख में, मेरे द्वारा भावों को गद्यात्मक विस्तार देते हुए, भगवान विश्वकर्मा के विचारों को, व्यापक सामाजिक संदर्भ में स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया गया है। इसके साथ ही राजस्थान, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की 11वीं कक्षा में अनिवार्य हिंदी में, सम्मिलित, उनकी प्रथम राजस्थानी कृति है।

खंड एक : भगवान विश्वकर्मा – सृष्टि के आदि शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा को सनातन परंपरा में आदि देव, ब्रह्म स्वरूप साकार और संपूर्ण सृष्टि का आधार माना गया है। भगवान विश्वकर्मा, केवल भवनों और यंत्रों के निर्माता नहीं, बल्कि सृष्टि की संरचना के नियंता हैं। पुराणों, वेदों और शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश-तीनों को अपने-अपने कार्यों के लिए विश्वकर्मा की आवश्यकता पड़ी। **विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल, इंद्र का वज्र, राम का धनुष, रावण की लंका-ये सभी विश्वकर्मा की दिव्य कारीगरी के प्रमाण हैं। रावण हो, या राम हो, क्या कर सकते थे सुदर्शन चक्र बिन विष्णु भगवान।**

मैंने अपने काव्य के माध्यम से यह उल्लेखित करने का प्रयास किया है कि - **यदि विश्वकर्मा न होते, तो क्या देव अपने कार्य पूर्ण कर पाते?** उत्तर स्पष्ट है-नहीं। सृष्टि की प्रत्येक रचना के पीछे शिल्प, गणना, संतुलन और श्रम है, और यह सब विश्वकर्मा तत्व से ही संभव है। भगवान विश्वकर्मा के पांच पुत्रमय, देवज्ञ, शिल्पी, मनु और त्वष्टा—सृष्टि के विभिन्न आयामों को संभालते हैं। भगवान विश्वकर्मा अहर्निश जगत के लिए श्रेष्ठ विधि से निर्माण करते हैं, ताकि मानव जीवन सुगम, सुरक्षित और सुसंस्कृत हो सके।

खंड दो : विश्वकर्मा संतान और मानव सभ्यता का निर्माण यदि संसार में विश्वकर्मा की संतान न होती, तो मानव सभ्यता की कल्पना अधूरी रह जाती। न घर होते, न झोपड़ियां, न नगर, न मार्ग। मनुष्य आज भी खुले आकाश के नीचे असुरक्षित जीवन जीने को विवश होता। **आज जो मोटरगाड़ी, रेल, हवाई जहाज, नाव, मशीनें और उपकरण दिखाई देते हैं, वे सब भगवान विश्वकर्मा परंपरा की देन हैं।** यदि यह परंपरा न होती, तो मानव आज भी पैदल चलता, साधनों के अभाव में संघर्ष करना पड़ता। मेरा यह स्पष्ट रूप से मानना है कि कि **भगवान विश्वकर्मा की संतान केवल कारीगर नहीं, बल्कि मानव कष्टों को कम करने वाली शक्ति है।** यदि यह शक्ति न होती, तो दुःख, असुविधा और असुरक्षा मानव जीवन का स्थायी स्वरूप बन जाते।

खंड तीन : जांगिड समाज, राष्ट्रीय योगदान और आत्मगौरव आज जांगिड समाज हर क्षेत्र में अग्रणीय है और यह समाज न किसी से कम है और न किसी से पीछे है। देश को, इस समाज ने अनेक अनमोल रत्न दिए हैं। जिनमें महान संत रामसुखदास जैसे महापुरुषों ने आध्यात्मिक चेतना को विस्तार दिया। नरसी शंकर कुलरियाने देश की संसद के आंतरिक स्वरूप को अपनी शिल्प-दृष्टि से गरिमा प्रदान की। ज्ञानी जैल सिंह जैसे महामानव, भी देश के प्रतिष्ठित पद राष्ट्रपति के पद तक पहुंचे और समाज का मान और सम्मान बढ़ाया, जिसकी गाथा देश के इतिहास में लिखी गई है। सुखदेव जांगिड ने अपनी कम्पनी का अनेक देशों में विस्तार किया।

मेरा विश्वकर्मा समाज के लोगों का आह्वान स्पष्ट है कि यदि समस्त विश्वकर्मा वंश एक स्वर में जयघोष करे, तो धरती डोल उठे और आकाश गूंज उठे। समाज की एकता, आत्मसम्मान और इष्ट-निष्ठा ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति है और अनेक समाजों ने अपने संगठन और एकता के बल पर ही राजनैतिक क्षेत्र में विशेष मुकाम हासिल किया है। **देव अपने आप बड़े नहीं होते, उन्हें भक्त बड़ा बनाते हैं। इसलिए सर्वप्रथम गुणगान अपने इष्ट देव भगवान विश्वकर्मा का होना चाहिए।** चाहे रामकथा हो या भागवत, भगवान विश्वकर्मा को प्रथम मंच पर प्रतिष्ठा देना, यही सच्ची परंपरा है।

उपसंहार-भगवान विश्वकर्मा केवल अतीत के देव नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के भी आधार हैं। वह श्रम, कौशल, सृजन और संतुलन के प्रतीक हैं। आज हम अपनी जड़ों से जुड़कर ही समाज आगे बढ़ा सकते हैं। जो अपने इष्ट देव को भूल जाता है, वह दिशा खो देता है और रास्ते से भटक जाता है। इसलिए किसी की भी बातों में आकर आपको भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। **श्रद्धा, सम्मान और पूजा सदैव अपने इष्ट देव भगवान विश्वकर्मा की होनी चाहिए। वही सृष्टि के शिल्पकार हैं, वही श्रम के देव हैं और वही मानव सभ्यता के सच्चे निर्माता हैं।** इसलिए भगवान विश्वकर्मा का गुणगान केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मबोध और सामाजिक चेतना का पर्व है। इस भगवान विश्वकर्मा जयंती के पुनीत अवसर पर लाख-लाख बधाई।

☆☆☆

इस जीवन में अपनेपन और अहम को मिटा देना ही - सर्वश्रेष्ठ त्याग माना गया है।

इस मानव जीवन में, एक व्यक्ति अपार धन सम्पत्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है, लेकिन उसको फिर भी अधिक पाने की लालसा और प्रवृत्ति उसका रास्ता रोके हुए, हमेशा ही खड़ी रहती है और वह अपना हर लक्ष्य पाने के बाद भी उसका मन सदैव ही बेचैन ही रहता था। जीवन में ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए एक व्यक्ति प्रयास भी करता रहता है। वह धन और वैभव से परिपूर्ण व्यक्ति अपने मन के अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए एक संत महात्मा के यहां पहुंचा। लेकिन वह अबोध व्यक्ति,संत की कुटिया के बाहर लिखे गए,एक अजीब गणित को देखकर आश्चर्यचकित हो गया। उस गणित के प्रश्न में लिखा हुआ था : - 9 + 9 = 0 और 9 - 9 = 81, और वह धनाढ्य व्यक्ति उस गणित की भाषा को देखकर आश्चर्य चकित रह गया और उसके मन में गणित के इन प्रश्नों के उत्तर जानने की उत्कट जिजीविषा हिलौरें लेने लगी।

उस धनाढ्य व्यक्ति ने संत महात्मा को हृदय के अन्तःकरण से प्रणाम किया और विनम्रता पूर्वक उस संत से अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए पूछा, महात्मा जी , यह कैसा उल्टा गणित है? संत बोले - हे, जिज्ञासु भक्त, यह संत- महात्माओं का गणित है अर्थात् जो बुद्धिजीवी लोग, जीवन भर धन का संग्रह करते रहते हैं और और अनेक सुख-सुविधाओं के वशीभूत रहते हैं, लेकिन जीवन के अन्तिम क्षण, यानि मृत्यु के निकट आने पर, वह अन्त में, शून्य ही रह जाते हैं। लेकिन जिस उदारमना व्यक्ति के मन में, जो कुछ है सो तोर वह भावना प्रज्ज्वलित हो उठती है और जो अपना संग्रह घटाते रहते हैं अर्थात् उस धन को परोपकार के उद्देश्य से बांटते रहते हैं, ऐसे महापुरुषों के जीवन में आध्यात्मिकता के साथ -साथ खुशियाँ भी कई गुणा बढ़ जाती हैं।

महात्मा ने पूछा कि इस दुनिया में आपका अस्तित्व ही कहां पर है, हम सभी किरदार हैं, जिस समय समय पूरा हो जाएगा तो,यह शरीर रूपी मकान खाली करना पड़ेगा। उस धनाढ्य व्यक्ति के मन में यह बात गहराई से उतर गई और उसे अहसास हुआ कि जो धन और वैभव की वस्तुएं हम जोड़ने में लगे रहते हैं, मृत्यु वह सब छीन लेती है और एक व्यक्ति खाली हाथ ही आया था और खाली हाथ ही जाएगा, साथ में केवल कर्मों का लेखा जोखा भी जाएगा। लेकिन एक व्यक्ति परहित की भावना को ध्यान में रखते हुए ही, अपनी जोड़े हुए धन में से यथाशक्ति और सामर्थ्य के अनुसार बांटता रहता हैं, तो आत्मा शुद्ध होकर जीवन में आध्यात्मिकता का आधिक्य होना शुरू हो जाता है।

जैसे नदी में से चिड़िया चोंच भर कर लें जाती है तो, इससे नदी का जल कम नहीं होता है, इसी प्रकार जाकि रही भावना जैसी भावना से धन बांटने वाले के पास कभी भी कम नहीं पड़ता है। लेकिन कई लोगों की व्यवहारिक जीवन में सोच संकुचित होती है और उनको ऐसा आभास होता है कि दूसरों को अपनी चीज देने से संभवतः, मैं कंगाल न हो जाऊं और यही सोच उसको दान -धर्म करने से रोकती है। लेकिन फिर यह प्रश्न उठता है कि सच्चा त्याग क्या है?। वास्तव में सच्चा त्याग, वस्तुओं को त्यागने से नही है, अपितु उस वस्तु के प्रति आसक्ति को त्याग करने में ही सच्चा त्याग निहित है।

जीवन में आवश्यकता से अधिक संग्रह, सदा ही दुखदायी होता है। यह बात हमेशा ही याद रखना कि हम किसी की भी भूख-प्यास मिटाते हैं तो उसे ही सच्चा त्याग कहते हैं। हमारे वेदों और शास्त्रों में उल्लेख है कि त्याग से ही भाग्य बनता है इसलिए जीवन में त्याग का अर्थ केवल वस्तुओं को भौतिक रूप से छोड़ना या घर बार छोड़ना नहीं है, बल्कि यह एक सूक्ष्म आंतरिक परिवर्तन है अर्थात् अपनी चिंताओं, कर्मों के फल को या मन-बुद्धि को परमात्मा को सौंप देना ही, सच्चा त्याग और समर्पण कहलाता है। कहा जाता है - त्याग से ही भाग्य बनता है तो व्यक्ति त्यागी से तपस्वी बनता है।

जीवन में मानसिक शांति हासिल करने के लिए अपने भीतर के अहम और विषय विकारों का परित्याग करना होगा। इस जीवन में एक समझदार व्यक्ति अपने अहंकार का त्याग तभी कर सकता है, जिस समय वह व्यक्ति सेवा के क्षेत्र में नि:स्वार्थ भाव से अपनी इच्छाओं और अपने अहम का परित्याग करके मैं-पन का त्याग कर, विनम्रता और सौम्यता के भाव को आत्मसात कर लेता है। इसलिए जीवन में यह जरूरी है कि परमात्म-मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह सबसे पहले वह अपने भीतर काम, क्रोध,लोभ, मोह,अहंकार आदि विकारों का परित्याग करें और स्वयं को शरीर की अपेक्षा आत्मा समझें। शरीर से जुड़े सभी संबंध, वैभव, साधनों का त्याग करना ही, इस जीवन का वास्तविक त्याग माना गया है।

इस जीवन में परमात्मा के प्रति समर्पण, सांसारिक वस्तुओं में आसक्ति न रखना और प्राप्त वस्तुओं को परमात्मा की अमानत समझकर कर्मयोगी की तरह जीवनयापन करना ही, आध्यात्मिक जीवन कहलाता है। इस जीवन में जितना अधिक त्याग करेंगे, उतना ही आगे बढ़ेंगे। जैसा कि एक तैराक पानी को पीछे धकेलता जाता है और आगे बढ़ता जाता है, ठीक उसी प्रकार ही, हमें जीवन में जो कुछ भी प्राप्त हुआ है, उसको पकड़कर न बैठ जाएं , अन्यथा वहीं जाम हो जाएंगे और आगे बढ़ने की संभावना धूमिल हो जाएगी। जिस प्रकार से छत पर पहुंचने के लिए, पहली पौड़ी पर पैर रखते हुए, आगे बढ़ने के लिए पहली पौड़ी का त्याग करके ही, अगली पौड़ी तक पहुंच पाएंगे। अन्त में, मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि अपने त्याग की भावना का दीपक हमेशा ही प्रज्ज्वलित रखें और अपने अहम का परित्याग करदे तथा यही त्याग सर्वश्रेष्ठ त्याग माना जाता है। सबसे पहले त्याग, अपने आप ही करना पड़ता है और यही त्याग सर्वश्रेष्ठ त्याग माना जाता है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर, त्याग के बिना कुछ भी हासिल कर पाना संभव नहीं है ,क्योंकि यहां पर, ताजा सांस लेने के लिए भी, पुरानी सांस छोड़नी ही पड़ती है। इसलिए त्याग की भावना के साथ ही अपने अहम का भी परित्याग करें, जिससे आपका जीवन सफल और सार्थक हो जाएगा। विपुल धन्यवाद।

सूबेदार मेजर बी.के.रामसिंह, जांगिड रेवाड़ी।

भगवान शिव की आराधना का प्रमुख दिन है शिवरात्रि...

हमारा देश त्यौहारों का देश है। यहां **होली, दिवाली, दशहरा, पोंगल, महाशिवरात्रि** आदि अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं। हम लोग यह सारे त्यौहार धूम-धाम से मनाते हैं। हमारे देश का हर त्यौहार हमें एकत्रित होने, खुशियां बाटने और समाज के हित में कुछ करने का मौका देता है। महाशिवरात्रि के दिन भी हम समाज के हित के लिए अपनी क्षमता अनुसार कुछ न कुछ अवश्य करें क्योंकि परहित में किये गये कार्य हमें भगवान के ज्यादा करीब ले जाते हैं। **महाशिवरात्रि हिन्दुओ का एक धार्मिक त्यौहार है।** महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस दिन शिवभक्त एवं शिव में श्रद्धा रखने वाले श्रद्धालु व्रत-उपवास रखते हैं और विशेष रूप से भगवान शिव की आराधना करते हैं।

महाशिवरात्रि को लेकर भगवान शिव से जुड़ी अनेक मान्यताएं प्रचलित है-ऐसा माना जाता है कि इस विशेष दिन ही ब्रह्मा के रूद्र रूप में मध्यरात्रि को भगवान शंकर का अवतरण हुआ था। वहीं यह भी मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव ने ताण्डव कर अपना तीसरा नेत्र खोला था और ब्रह्मांड को इस नेत्र की ज्वाला से समाप्त किया था। इसके अलावा कई स्थानों पर इस दिन को भगवान शिव के विवाह से भी जोड़ा जाता है और माना जाता है कि इस पावन दिन भगवान शिव और माँ पार्वती का विवाह हुआ था। वैसे तो प्रत्येक माह में एक शिवरात्रि होती है, परन्तु फाल्गुन माह की कृष्ण चतुर्दशी को आने वाली शिवरात्रि का अत्यन्त महत्व है, इसलिए इसे महाशिवरात्रि कहा जाता है। **महाशिवरात्रि भगवान भोलेनाथ की आराधना का पर्व है।** इस दिन श्रद्धालु जप-तप और व्रत रखते हैं और भगवान के शिवलिंग रूप के दर्शन करते हैं। इस पवित्र दिन देश भर के **शिवालयों में बेलपत्र, धतूरा, दूध, दही, शर्करा आदि से शिव जी का अभिषेक किया जाता है तथा महाशिवरात्रि को एक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।**

शिव-लिंग परमात्मा शिव के ज्योति रूप को दर्शाता है। भगवान शिव एक सूक्ष्म पवित्र और स्व दीप्तिमान दिव्य ज्योति पुंज हैं। इसलिए उन्हें **ज्योतिर्लिंग** के रूप में दिखाया गया है। **"ज्योति का प्रतीक"** सत्य है, कल्याणकारी है और सबसे खूबसूरत है। इसलिए उन्हें **सत्यम शिवम सुन्दरम** कहा जाता है। ईशान संहिता में बताया गया है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात आदि देव भगवान शिव करोड़ों सूर्य के समान प्रभा वाले लिंग रूप में प्रकट हुए। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि में चंद्रमा सूर्य के नजदीक होता है। उसी समय जीवन रूपी चंद्रमा का शिव रूपी सूर्य के साथ योग मिलन होता है। इसीलिए इस चतुर्दशी को शिव पूजा करने का विधान है। अन्य देवों का पूजन-अर्चन दिन में होता है लेकिन भगवान शंकर को रात्रि प्रिय है। **भगवान शिव संहार शक्ति और तमोगुण के अधिष्ठाता है।** रात्रि संहारकाल की प्रतिनिधि मानी जाती है। अतः तमोमयी रात्रि से उनका स्नेह स्वाभाविक है। शास्त्रों में इस दिन रखे जाने वाले व्रत को महाव्रत कहा गया है।

भगवान शिव और उनका नाम समस्त मंगलों का मूल है। ज्ञान-बल और इच्छा तथा क्रियाशक्ति में भगवान शिव के जैसा कोई नहीं है। वे सभी के मूल कारण, रक्षक, पालक तथा नियंता होने के कारण महेश्वर कहे जाते हैं। उनका आदि और अंत नही होने से वे अनन्त हैं। सभी पुराणों में भगवान के शिव के दिव्य और रमणीय चरित्रों का चित्रण किया गया है। यही कारण है कि भगवान शिव की पूजा सर्वाधिक की जाती है। **शिव जी के शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पो का हार, कण्ठ में विष, जटाओं में जगत-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयंकर ज्वाला है।** बैल को सवारी के रूप में स्वीकार करने वाले शिव सदैव भक्तों का मंगल करते हैं और श्री संपत्ति प्रदान करते है। **भगवान शंकर ज्ञान, वैराग्य्य तथा साधुता के परम आदर्श हैं। वे भयंकर रूद्र रूप है तो भोलेनाथ भी है। दुष्ट दैत्यों के संहार में कालरूप हैं तो दीन दुखियों की सहायता करने में दयालुता के सागर हैं, इनकी दया का कोई पार नहीं है।** पारिवारिक परिस्थितियों के लोग महाशिवरात्रि को शिव के विवाह के उत्सव की तरह मनाते है। सांसारिक महत्वाकांक्षाओं के लोग महाशिवरात्रि को, शिव के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय पाने के दिवस के रूप में मनाते हैं। यौगिक परंपरा में भगवान शिव को किसी देवता की तरह नहीं, वरन आदि गुरू के रूप में पूजा जाता है। ध्यान की अनेक सहस्त्राब्दियों के पश्चात, भगवान शिव एक दिन पूर्ण रूप से स्थिर हो गए। वह दिन महाशिवरात्रि का था। उनके भीतर की सारी गतिविधियां शांत हुई और वे पूरी तरह से स्थिर हुए, इसलिए साधक महाशिवरात्रि को स्थिरता की रात्रि के रूप में मनाते हैं।

हमारे धर्मशास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि महाशिवरात्रि का व्रत करने वाले साधक को मोक्ष की प्राप्ति होती है। जगत में रहते हुए **मनुष्य का कल्याण करने वाला व्रत है महाशिवरात्रि।** इस व्रत को रखने से साधक के सभी दुखों और पीड़ाओं का अंत होता ही है साथ ही मनोकामनाएं भी पूर्ण होती है। वे अनजाने में की गई पूजा का भी फल प्रदान करते हैं।

महाशिवरात्रि का त्यौहार प्राणी मात्र के प्रति दया और करूणा का संदेश भी देता है। भगवान शिव की आराधना से धन-धान्य, सुख-सौभाग्य और समृद्धि की कभी कमी नहीं होती। मनसा... वाचा... कर्मणा से हमें भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए।-----

प्रवीण शर्मा, नीमच

जीवन में भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा और विश्वास होगा तो, फिर मन से डर, हमेशा के लिए विलुप्त हो जाएगा।

श्रीमती कृष्णा, रामपाल शर्मा, बैंगलुरू।

जो व्यक्ति जीवन में, अपने लक्ष्य को हासिल करना चाहता है, उसका पहला लक्षण यह है कि, उसमें अपने लक्ष्य के प्रति सच्ची श्रद्धा और आत्मविश्वास होना चाहिए और उस आत्मविश्वास और श्रद्धा की सीढ़ी पर चढ़ कर ही, उस असंभव कार्य को संभव बनाया जा सकता है। अब यक्ष प्रश्न यह है कि एक सच्चा श्रद्धालु भक्त, जो अपनी आस्था और श्रद्धा के साथ, हर रोज भगवान की पूजा अर्चना करता है और ईश्वर के नाम की माला भी जपता रहता है। लेकिन इस ईश्वरीय प्रेम में डूबे रहने के बाद भी, वह अपने मन में, कहीं न कहीं, उस परमपिता परमात्मा के प्रति सूक्ष्म संदेह को अपने अन्तर्मन में छिपाए हुए रहता है। ईश्वर के प्रति इस प्रकार का संशय रखने वाले व्यक्ति का मन अविश्वास, भविष्य की अनिश्चितताओं, चिंताओं और शंकाओं में डूब कर सदैव ही बेचैन बना रहता है और ऐसा भक्त अपने वास्तविक कर्म में लीन होने की अपेक्षा सदैव ही उसके परिणाम की चिंता में ही खोया हुआ रहता हैं।

लेकिन इसके विपरित **अगर हमारे मन में, ईश्वर के प्रति मन में सच्ची आस्था, विश्वास, श्रद्धा और भक्ति अपनी जगह बना ले, तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में, जो कुछ भी घटित होता है, उस घटनाक्रम को वह भगवान का प्रसाद समझकर सहज रूप में ही स्वीकार कर लेता है,** क्योंकि ऐसे व्यक्ति के अन्त:करण में परमात्मा की स्वीकार्यता ने अपना स्थान बना लिया है और **ऐसा श्रद्धालु भक्त, अपने आपको प्रभु के प्रति समर्पण की भावना होने के कारण ही परिणाम की कोई भी चिंता नहीं करता है, उस आस्थावान भक्त को न, कोई भी परिस्थिति या परिणाम बुरा लगता है और न कोई परिणाम अच्छा लगता है। वह सब कुछ ही, ईश्वर की व्यवस्था समझकर ही , उस सुख दुःख को धूप-छांव की तरह ही समझता है।**

मैं एक बात निश्चित रूप से आत्मविश्वास के साथ कह सकती हूँ कि, जिस साधक ने अपने मन मंदिर में , परमपिता परमेश्वर भगवान के रहने का स्थान बना लिया है, ऐसे साधक के जीवन में सुख-दुःख, हानि-लाभ, यश और अपयश कोई महत्त्व नहीं रखते हैं , क्योंकि उसका भगवान में बसा हुआ साधक मन, हर समय उस परमपिता परमात्मा की सृष्टि में विचरण करता रहता है और आत्मिक सुख भी बना रहता है। ऐसे श्रद्धा से परिपूर्ण एक भक्त को, जीवन रुपी यात्रा एक बोझ नहीं लगती है, अपितु यह जीवन की यात्रा, एक असीम आनन्द और मानसिक शांति प्रदान करती है। **इसके लिए बस एक ही शर्त है कि, एक मनुष्य को अपने भगवान पर अगाध विश्वास, आस्था और भरोसा होना चाहिए।** इसलिए कहा गया है कि विश्वास वह दीवार है, जिसपर एक पंगु व्यक्ति भी चढ़ जाता है, ***पंगु गिरी लंघे*** एक लंगड़ा व्यक्ति भी हिमालय पर्वत को लांघ सकता है।

मैं आपके साथ, भगवान पर अगाध विश्वास की एक बहुत अच्छी कहानी का उल्लेख करना चाहती हूँ। **एक बार एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के विश्वास की परीक्षा लेने का मन बनाया और धार्मिक यात्रा पर जाने का संकल्प लिया और वह दंपति रामेश्वर में भगवान राम द्वारा स्थापित किए ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के पश्चात् समुद्री क्रुज पर सैर करने के लिए निकल पड़े** और तूफान के कारण, मृत्यु के भय से वह पत्नी अपने पति से लिपट कर रोने लगी, लेकिन उसका पति बिल्कुल विचलित नहीं हुआ, क्योंकि उसको अपने पालनहार, भगवान पर अगाध आस्था और विश्वास था और भगवान पर यही विश्वास ही उसकी ढाल बनकर उसकी रक्षा करता रहा।

इस बीच **उसने अपनी पत्नी की परीक्षा लेने के लिए उसकी गर्दन पर तलवार रखकर कहा कि आपके पास 5 मिनट का समय है जो, मांगना है मांगों, तो पत्नी ने बड़े आत्मविश्वास के साथ जबाब दिया कि , जब आप मेरे आस-पास हैं और मेरा आप पर विश्वास भी है तो , आप मेरा बाल भी बांका नहीं होने दोगे ,** तो इस तलवार की तो औकात ही क्या है, तब उसके पति ने मुस्कुराते हुए कहा कि मेरा भगवान श्री राम के प्रति समर्पण और दृढ़ विश्वास ही था, जिसने तूफान आने पर भी मुझे विचलित नहीं किया और **उसकी पत्नी का भी अपने पति पर पूरा भरोसा और विश्वास ही था, जिसके कारण वह दोनों ही अपनी-अपनी परीक्षा में पास हुए।** उसने कहा कि अगर भगवान कि यही इच्छा होगी कि हम उसकी बाहों में चले जाएं , तो उसमें भी अपार आनंद की अनुभूति प्राप्त होगी। अब उसकी पत्नी का भी भगवान पर अगाध श्रद्धा और भक्ति का भाव पैदा हो गया था।

इसलिए जब आपके जीवन की नैया डगमगाने लगे तो, प्रेम से उस प्रभु को पुकारने से ही **वह गिरधर गोपाल मेरे प्रभु चले आएंगे, बस सिर्फ बात इतनी सी है कि उसको तो कोई बुलाने वाला चाहिए, भगवान को मीरा ने बुलाया, उसको द्रौपदी ने बुलाया, उसको सन्त रैदास ने बुलाया और गोपियों ने बुलाया तो वह दौड़े चले आए।** इस कलियुग के लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं कि उनको साधना के बल पर भगवान मिल सकते हैं। यह सौभाग्य तो देवताओं को भी नहीं मिला है। **जो भी भक्त श्रद्धा और भक्ति के साथ राम नाम का सत्संग और सुमिरन करता है वह इस भव सागर रुपी बैतरणी से पार हो जाता है।**

हम आज , क्यों ऐसे आस्थावान साधु-संत और महात्माओं तथा ऋषियों को याद करते हैं, **क्योंकि उन्होंने , हमें हमारी आस्था और विश्वास पर चलकर ही, उस प्रभु को हासिल करने का सरल रास्ता दिखलाया है। भगवान पर विश्वास और भरोसे के आधार पर ही, मन का डर भाग जाता है और समदर्शी भाव रखने वाला मनुष्य भव सागर से पार हो जाता है।**

****

13 फरवरी को राष्ट्रीय महिला दिवस पर अन्त:करण से बधाई।

भारत की सांस्कृतिक विरासत महान है और मातृशक्ति नारी को, शक्ति, सृजन और संस्कार का द्योतक माना गया है। हमारे वेदों और शास्त्रों में कहा गया है— ***"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:"***

जहां पर नारी का मान-सम्मान होता है, वहां पर देवताओं का वास होता है। **13 फरवरी को, राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया और यह दिन मनाने का एक मात्र उद्देश्य केवल शुभकामनाएं देना नहीं है, बल्कि यह दिन हमें नारी के अधिकारों, उसके आत्मसम्मान, कर्तव्य, योगदान और परिवार के दायित्वों के निर्वहन के साथ ही, समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए दिए जा रहे, अमूल्य योगदान के बारे में भी स्मरण करवाता है।**

राष्ट्रीय महिला दिवस भारत की पहली राज्यपाल, महान स्वतंत्रता सेनानी, कवियत्री और प्रखर वक्ता, सरोजिनी नायडू के सम्मान में समर्पित है, क्योंकि सरोजिनी नायडू का जन्म, इसी दिन 13 फरवरी सन् 1879 में हैदराबाद में हुआ था। सरोजिनी नायडू का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि **आज की आधुनिक नारी, केवल घर की, चारदीवारी तक सीमित नहीं है, अपितु उसने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम भी लहराया है। नारी शक्ति ने अपने कला कौशल से यह सिद्ध कर दिया है कि वह केवल घर की परिधि तक सीमित नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र निर्माण, विज्ञान, चिकित्सा, प्रशासन, व्यापार और उद्योग, समाज सुधार, शिक्षा, राजनीति, खेल, रक्षा, संस्कृति, सामाजिक सेवा और राजनीति के क्षेत्र में भी आज अग्रणीय भूमिका निभा सकती है।**

आज की महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि उनकी भागीदारी, केवल एक "उपस्थिति" मात्र नहीं है, बल्कि एक सकारात्मक नेतृत्व की पहचान भी है। इसके साथ नारी,बच्चों में संस्कारों, उदात्त जीवन-मूल्य, अनुशासन और देशभक्ति का बीजारोपण भी करती है। इसके साथ ही अंधविश्वास उन्मूलन, तथा समाज में परिव्यापत बाल-विवाह जैसी अनेक कुरीतियों के निवारण और उन्मूलन में भी महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिला को, परिवार की पहली शिक्षिका माना जाता है। वह बच्चों को संस्कारों के साथ ही वैज्ञानिक सोच और विवेक सिखाती है और इसके साथ ही वह स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता जैसे विषयों पर सही निर्णय लेकर घर को मजबूत बना सकती है। जब एक महिला जागरूक है तो पूरा परिवार जागरूक होता है। नारी के भीतर करुणा, धैर्य, त्याग, अनुशासन और सेवा जैसे गुण स्वाभाविक रूप से होते हैं। लेकिन वर्तमान समय में बढ़ते भौतिकवाद, दिखावे, सोशल मीडिया प्रभाव के कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट भी देखने को मिलती है। आध्यात्मिकता के इस युग में एक महिला का दायित्व है कि वह मान मर्यादा को बनाए रखते हुए अपने परिवार में संवाद बनाए रखते हुए, बच्चों को सोशल मीडिया की आदतों से दूर रखें और अपने उदात्त चरित्र, नैतिक मूल्यों और संस्कारों के मूल्यों के उन्नयन के साथ ही समरसता और संवेदनशीलता को बनाए रखते हुए अपने कर्तव्य का पालन करें। **महिला का सम्मान, केवल एक "दिन विशेष" पर नहीं होना चाहिए, बल्कि यह हमारे व्यवहार और संस्कृति में दिखाई देना चाहिए। महिला का सम्मान आवश्यक है उससे परिवार मजबूत होगा और परिवार मजबूत होगा तो, राष्ट्र मजबूत होगा।**

क्योंकि यह विकास का युग है, इसलिए देश में भविष्य में महिलाओं के गौरव और दायित्व में और अधिक अभिवृद्धि होने की सम्भावना है। ऐसे समय में महिलाओं का योगदान और दायित्व और भी बढ़ जाता है। **भविष्य में महिलाओं को समाज सुधार में नेतृत्व करना होगा तथा संस्कार और संस्कृति की रक्षा करनी होगी।** आज जन्म-दर में कमी के कारण जनसंख्या सिमटती जा रही है, कम बच्चे, करियर की दौड़, आर्थिक चिंता, जिम्मेदारियों से भागना और आधुनिकता के नाम पर परिवार से दूरी बनाने के साथ ही, मातृत्व को बोझ समझना आदि कारणों की वजह से आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और इसका असर बच्चों की मानसिकता और संस्कारों पर भी पड़ रहा है।

ऐसी विकट परिस्थितियों में, एक **महिला को परिवार और बच्चों में सन्तुलन बनाए रखते हुए अहम भूमिका निभानी होती है। इसलिए रिश्तों में अहंकार नहीं, समर्पण का भाव होना चाहिए। एक महिला अगर परिवार को जोड़कर रखती है तो, वह केवल एक घर ही नहीं बचाती, बल्कि समाज की सुदृढ़ नींव भी रखती है। इसलिए राष्ट्रीय महिला दिवस हमें यह संदेश देता है कि महिला केवल "अधिकार" की नहीं, बल्कि कर्तव्य, सम्मान, नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण की भी प्रतीक है। राष्ट्रीय महिला दिवस की पुनः बधाई।**

सह सम्पादक, प्रहलादराय जांगिड

असीम प्रतिभा का धनी निखिल जांगिड ने अपने जज्बे और दृढ़ संकल्प के साथ स्वर्ण पदक जीता

जीवन में दृढ़ संकल्प, धैर्य तथा अदम्य साहस और आत्मविश्वास तथा जीवन में आगे बढ़ने की उत्कंठ जिजीविषा हो तो, रास्ते में आने वाली सभी विघ्न-बाधाएं भी उसके लिए एक अवसर बन जाती हैं। पारिवारिक दृष्टि से अनुवांशिक रूप से दृष्टि बाधित होने की समस्या भी, उसके दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति को कमजोर नहीं कर सकी और निखिल जांगिड ने, इन सभी बाधाओं और संघर्षो को पार करके, जो अविश्वसनीय और अकल्पनीय उपलब्धि हासिल की है, उसके लिए, उसके जज्बे और संकल्प को सलाम है। रोहतक जिले और महम तहसील के एक छोटे से गांव, अजायब में 23 नवम्बर 2001 को पिता सज्जन सिंह जांगिड और माता श्रीमती अनिता देवी के घर पैदा हुए। **एक छोटे से गांव में पैदा होकर भी उन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और विशाल दृष्टिकोण के द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि दृष्टि आंखों की मोहताज नहीं है।**

दृष्टि बाधित निखिल जांगिड ने स्वर्ण पदक हासिल किया

निखिल जांगिड में, दृष्टि बाधित होने के बावजूद भी, जीवन में आगे बढ़ने की उत्कट जिजीविषा हिलौरें ले रही थी और उन्होंने पहले रेसलिंग और फिर जूडो के खेल में हिस्सा लेना शुरू किया और अपनी असीम प्रतिभा और दक्षता के बल पर, खेल की दुनिया में न केवल माता-पिता का, अपितु समाज और देश का नाम भी गौरवान्वित किया है। **उन्होंने यह सिद्ध करके दिखलाया है कि कोई भी उपलब्धि हासिल करने के लिए, दृष्टिबाधित होना कोई बाधा नहीं है बल्कि उसका दृष्टिकोण और नकारात्मक सोच ही, इसमें सबसे बड़ी बाधा का कारण बनता है** और अपने तीव्र संकल्प और आत्मविश्वास के बल पर उसने, न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जूडो में अपना, जांगिड समाज और देश का नाम गौरवान्वित किया है। **उसने राष्ट्रीय स्तर पर 10 स्वर्ण पदक हासिल किए हैं और इसके साथ ही राष्ट्र मंडल खेलों में भी स्वर्ण पदक हासिल करके अपना लोहा मनवाया है।**

एक गरीब और साधारण किसान परिवार में पैदा हुए, **निखिल जांगिड का जीवन परिचय, उन खिलाड़ियों के लिए एक अद्भुत प्रेरणा और संघर्ष की ज्वलंत और अद्वितीय मिसाल है, जो पहले ही हिम्मत हार जाते हैं। बचपन से ही, दृष्टि बाधित होने के बावजूद भी, निखिल ने, परमात्मा पर आस्था और अगाध विश्वास रखते हुए, खेलों में अपना भाग्य आजमाना शुरू किया।** हालांकि घर की आर्थिक हालत बहुत ही दयनीय थी और पिता जी खेती का कार्य करते हैं और इससे घर का गुजारा बड़ी ही मुश्किल से होता है,लेकिन **अपने माता-पिता के आशीर्वाद और सहयोग तथा समर्थन ने, उसके जज्बे और हौसले को कभी भी कम नहीं होने दिया और गरीबी की मजबूत दीवार को तोड़कर, उसको आगे बढ़ने के लिए सदैव ही अभिप्रेरित किया। उस मेहनत और पुरुषार्थ तथा समर्पण की भावना का प्रतिफल यह मिला कि उनको मार्च 2026 में होने वाले जूडो वर्ल्ड कप प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।**

निखिल जांगिड ने कहा कि हालांकि मैंने, सबसे पहले सन 2013 में केवल 12 वर्ष की आयु में ही, कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लेना शुरू किया था, **लेकिन मेरे कोच संजय डांगी ने, मेरी जिंदगी ही बदल दी, जिस प्रकार से सोने की परख एक जौहरी को होती है, उसी प्रकार मेरे कोच ने मेरी प्रतिभा की पहचान करके, मुझे जूडो खेल खेलने के लिए अभिप्रेरित किया और मैं आज अपने परिश्रम और मेहनत के बल और मेरे कोच संजय डांगी तथा गांव कैन्हली जिला रोहतक के रहने वाले दोनों भाइयों सोमवीर पावरिया और अजय पावरिया दोनों कोचों के आदेशों को शिरोधार्य करते हुए ही, आज यहां तक पहुंचा हूँ। उन्होंने बताया कि श्री गंगानगर राजस्थान में 19 से 23 दिसम्बर 2025 में हुई 14 वीं सीनियर नेशनल जूडो चैंपियनशिप में भी, मैंने, स्वर्ण पदक हासिल किया था और इसी के आधार पर राष्ट्र मंडल खेलों के लिए उनका चयन किया गया है, जिसमें 19 मार्च से 2026 मार्च तक तिब्लिसी जार्जिया में अन्तरराष्ट्रीय ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन जूडो वर्ल्ड कप तिब्लिसी 2026 का आयोजन किया जा रहा है और यह प्रतियोगिता जूडो वर्ल्ड रैंकिंग के लिए अंक प्रदान करेगी और यह वर्ष 2026 का पहला वर्ल्ड कप है और यह प्रतियोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जापान में होने वाली आगामी एशियन पैराल्मपिक खेलों की तैयारी का एक हिस्सा है। उसका चयन 81 किलो भार वर्ग में हुआ है और वह आईबीएसए जूडो वर्ल्ड कप में खेलेंगे।**

निखिल के पिता सज्जन सिंह जांगिड ने कहा कि मुझे अपने बेटे पर गर्व है और मुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि हमारे पास इतनी जमीन नहीं है, लेकिन हमने अपने बेटे की जरूरतों को पूरा करने के लिए, **अपनी जरूरतों को कम किया, ताकि निखिल के लिए उसकी ड्रैस खरीदी जा सके, जो एक ड्रैस ही 25-30 हजार रुपए की आती है और खुराक का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता था, क्योंकि घर में रुपया पैसे की तंगी थी, लेकिन बेटे को कभी महसूस नहीं होने दिया** और उसने, निरन्तर आगे बढ़ने का काम किया

और अपनी प्रतिभा के दम पर ही न केवल देश में अपितु विदेशों में भी अपनी पहचान बनाई है और जांगिड समाज का नाम गौरवान्वित किया है। उन्होंने कहा कि अब तो **हरियाणा सरकार से, निखिल की उपलब्धि के आधार पर, उसे लगभग 28 लाख रुपए मिल चुके हैं, इसलिए अब वह अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में भी भाग ले सकता है।**

उनकी माँ श्रीमती अनिता देवी जांगिड ने भावुक होते हुए कहा कि, बचपन से ही **वह दृष्टि बाधित था, हालांकि एक माँ की भावना होती है कि उसका लड़का भी दूसरों की तरह ही हो, लेकिन भगवान का आशीर्वाद समझ कर, उसका पालन किया और आज मुझे अपने बेटे पर गर्व है और आज लोग मुझे अखिल की माँ के नाम से ही जानते हैं,** जिसने न केवल समाज का अपितु देश का नाम भी गौरवान्वित किया है और उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ब्लाइंड प्रतियोगिताओं में 30 से अधिक मेडल जीते हैं। ब्लाइड जूडो में, की स्वर्ण पदक जीते है। **उन्होंने हरियाणा सरकार से मांग की है कि उसके बेटे में जूडो खेल में उपलब्धि के आधार पर अन्य खिलाड़ियों की तरह ही सरकारी नौकरी दी जाए।**

निखिल जांगिड से, अपनी प्रेरणा के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि, मेरी सबसे बड़ी पहले, मेरे माता-पिता हैं, जिन्होंने खुद अभाव में रहकर मेरी सभी जरुरतों को पूरा किया है और उसके बाद अगर मेरा उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए किसी ने मुझे प्रोत्साहित किया और मेरा सही मार्ग दर्शन किया और समय-समय पर उचित सलाह दी है, तो उसका नाम है, मेरे कोच संजय डांगी, **जिन्होंने सन् 2013 में मुझ से कहा था कि आप कुश्ती की अपेक्षा जूडो के खेल में भी अपना भाग्य आजमा सकते हो और किसी भी खेल में विजय हासिल करने के लिए पहले अपने आप से जीतना पड़ता है, क्योंकि हमारी लडाई हमेशा अपने आप से ही है, अगर खुद से जीत जाओगे तो, सब जीत जाओगे, इस फार्मूले को आत्मसात करते हुए ही मैंने जूडो के खेल की तरफ रुख किया और आज इस मुकाम तक पहुंचा हूँ।** निखिल जांगिड ने कुश्ती और जूडो में अपनी उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि सबसे पहले मैंने कुश्ती लड़ना शुरू किया था और सन् 2013 से 2018 तक राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार हासिल किए और फिर अपने कोच संजय डांगी के सुझाव पर जूडो के खेल में सन् 2018 में अपना भाग्य आजमाना शुरू किया था और राष्ट्रीय स्तर की पहली प्रतियोगिता, जो उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में आयोजित की गई थी **उसमें पहला स्वर्ण पदक जीता और उसके पश्चात कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा और उसके बाद लगातार राष्ट्रीय नैशनल ब्लाईड जूडो प्रतियोगिता में लगातार 10 स्वर्ण पदक हासिल किए हैं और इसके साथ ही, वह इण्डियन ब्लाइंड एसोसिएशन द्वारा आयोजित इन जूडो प्रतियोगिताओं में, चार बार सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का भी पुरस्कार हासिल कर चुके हैं।** इसके साथ ही सन् 2019 में भी बर्मिंघम यूके में आयोजित किए गए राष्ट्र मण्डल खेलों मे भी स्वर्ण पदक हासिल किया था। **इसके साथ ही सन् 2023 में फिनलैंड में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ब्लाइंड जूडो कंट्री चेंलैज और इंटरनेशनल कैंप में ओलम्पिक 2024 के लिए क्वालीफाई किया था और इसमें कांस्य पदक हासिल किया था।** इसके अतिरिक्त 19 से 23 दिसंबर 2025 तक राजस्थान के **श्रीगंगानगर में आयोजित 14 वीं सीनियर प्रतियोगिता में भी स्वर्ण पदक जीता था और इसके आधार पर ही वह 19 से 26 मार्च तक जार्जिया में आयोजित होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में 81 किलोग्राम भार वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।**

निखिल जांगिड ने कहा कि जीवन में सफलता हासिल करने में खेलों के साथ-साथ पढ़ाई भी जरूरी है और दोनों में सामंजस्य बनाए रखना जरूरी है। भविष्य में अपने सपनों के बारे में, उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि मेरा सपना भविष्य में एशियन और ओलंपिक खेलों में देश के लिए मेडल हासिल करना है और मुझे विश्वास है कि भगवान की अनुकम्पा और माता-पिता के आशीर्वाद से यह स्वप्न भी पूरा होगा।

राज्य सभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने, निखिल जांगिड को उसकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि, वह हमारे परिवार से ही ताल्लुक रखता है और, जिन विकट और कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए वह अपनी प्रतिभा के आधार पर ही, यहां तक पहुंचा है और मुझे उम्मीद है कि वह राष्ट्र मंडल पैरालंपिक और मार्च 2026 में, जॉर्जिया में आयोजित होने वाले, वर्ल्ड कप और राष्ट्र मंडल पैरालंपिक खेलों में भी जूडो में, स्वर्ण पदक हासिल करके एक नया इतिहास रचने काम करेगा।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, भी निखिल जांगिड को उसकी बेहतरीन उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि 7 साल के दौरान ही उसने पैरा खेलों में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने खाते में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक स्वर्ण पदक हासिल करके यह साबित कर दिया कि, संकल्प और आत्मविश्वास के आगे सभी बाधाएं बोनी पड़ जाती है और, जिस बुद्धिमता और धैर्य के साथ वह, अपने जूडो खेल को आगे बढ़ा रहे हैं, उससे उसका भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल और देदीप्यमान है। **वह भविष्य में मार्च 2026 में होने वाले वर्ल्ड जूडो कप में भी स्वर्ण पदक हासिल करेगा तथा भविष्य में होने वाले एशियन और पैराओलंपिक खेलों में भी विजय पताका का परचम लहराने कार्य करते हुए देश व समाज का नाम गौरवान्वित करेगा।**

सम्पादक, राम भगत शर्मा।

एक कारपेंटर की बेटी मन्नु जांगिड ने, स्कूल प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर रजत पदक हासिल किया है।

जो युवा, अपने जज्बे जुनून, चुनौतियों, अदम्य साहस और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने की दिशा की ओर अग्रसर रहता है, वह न केवल धैर्य और समर्पण की भावना से कार्य करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करने में कामयाब होता है **अपितु सफलता भी उसका वरन करती है। जीवन में सफलता का यह मूल मंत्र है कि, मनुष्य को अपने मन से, नहीं शब्द निकाल देना चाहिए और विशेषकर खेल के क्षेत्र में जिद्द का होना बहुत जरूरी है, यदि खिलाड़ी जिद्दी है तो उसकी सफलता निश्चित है। यह सिद्ध करके दिखलाया है हजवाना जिला कैथल की रहने वाली मन्नु जांगिड ने, स्कूल स्तर की, राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की गई प्रतियोगिता में, 36 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक हासिल करके जांगिड समाज का नाम गौरवान्वित किया है।**

मन्नु जांगिड के पिता सतबीर जांगिड और माता श्रीमती सुमन देवी जांगिड ने भावुक होते हुए कहा कि दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में 30 जनवरी से 4 फरवरी तक आयोजित 69 वीं राष्ट्रीय स्कूली जूडो प्रतियोगिता आयोजित की गई थी और इस प्रतियोगिता का आयोजन डायरेक्ट आफ एजुकेशन एण्ड स्पोर्ट्स गोवर्नमैन्ट आफ एन सी, दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित की गई थी। उन्होंने कहा कि हमारे पास पैसे का अभाव है, लेकिन बेटी को कोई कमी नहीं होने दी। बेटी मन्नु गांव के ही, राजकीय स्कूल में 10वीं कक्षा की विद्यार्थी है और **मन्नु ने दिल्ली में स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित 69वीं राष्ट्रीय स्कूल प्रतियोगिता 2025-26 में 36 किलोग्राम कैटेगरी में अण्डर 19 कैटेगरी में, जूडो प्रतियोगिता में भाग लिया था और इसमें रजत पदक हासिल करके अपनी बहुआयामी प्रतिभा और दक्षता का परिचय दिया है।** उनके पिता ने कहा कि मैं विरासत में मिले हुए, लकड़ी का कार्य करता हूँ और मुझे खुशी है कि 25 जुलाई 2010 को हमारे घर बेटी के रूप में लक्ष्मी आई है, जिसने हमारे समाज का गौरव बढ़ाया है।

मन्नु जांगिड ने, अपनी इस शानदार उपलब्धि का उल्लेख करते हुए कहा कि **जूडो खेल मेरे लिए एक प्रकार से बिल्कुल नया था और सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि आज से एक दो साल पहले मुझे जूडो के बारे में कोई भी जानकारी नहीं थी। लेकिन गांव में खेल नर्सरी खुलने से, गांव के प्रतिभावान खिलाड़ियों को अपना भाग्य आजमाने का स्वर्ण अवसर मिला, लेकिन प्रतिभा की पहचान करने और उसे तराशने तथा मेरी कामयाबी के पीछे, स्कूल में कार्यरत पी टी आई मनोज कुमार और कोच हरजीत सिंह का बहुत बड़ा महत्वपूर्ण पूर्ण योगदान रहा है।**

उन्होंने कहा कि पहले हमारे स्कूल में खेल से संबंधित कोई भी सुविधा उपलब्ध नहीं थी, लेकिन पी टी आई मनोज कुमार के प्रयासों के कारण ही हरियाणा सरकार द्वारा हमारे स्कूल में, नर्सरी खोली गई, जिसके कारण मुझे और मेरे अन्य साथियों को, खेल में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन मिला है और हमने निरंतर मेहनत करके, बहुत से पदक हासिल करके हमारे गांव एवं स्कूल का नाम रोशन किया है। **मैंने इससे पहले, ब्लाक, जिला और राज्य स्तर पर भी जूडो प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक हासिल किया है।**

अंत में, मैं यही कहना चाहती हूँ कि खेल हमारे जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग हैं। खेल जीवन की एक प्रयोगशाला है। खेलों से जीवन को महत्वपूर्ण संस्कार मिलेंगे, क्योंकि खेल के माध्यम से ही एक प्रतिभागी को, हार को स्वीकार करने और विजय में विनम्र बने रहने की शिक्षा और शक्ति मिलती है। खेलों से, टीम भावना विकसित होने के साथ ही, इससे मन का अंहकार दूर होता है और यह सभी गुण भविष्य की आधारशिला रखेंगे। इसलिए जो भी प्रतिभागी, किसी भी खेल को आत्मसात करे, उसको धैर्य और संयम तो बनाए रखना ही होगा। मेरी कामयाबी के इस सफर में मेरे माता-पिता ने मेरा पूरा समर्थन दिया और यही कारण है कि 2 वर्ष के दौरान ही यह उपलब्धि हासिल हुई है। **इससे पहले भी मैंने वर्ष 2024-25 में कुराश प्रतियोगिता में, जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश में पुरुष चैंपियनशिप में भी रजत पदक हासिल किया था।**

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, मनु जांगिड के उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए, राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल करने पर बधाई देते हुए कहा है कि यह पदक, उनकी उत्कट जिजिविषा और दृढ़ संकल्प तथा समर्पण की भावना से ओत-प्रोत होकर अपने लक्ष्य की ओर उन्मुख होने के कारण ही हासिल हुआ है। **इससे पहले उसने जिला और राज्य स्तर पर भी स्वर्ण पदक हासिल किया है। मुझे विश्वास है कि वह भविष्य में भी इसी प्रकार से अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए न केवल कालेज, विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय स्तर पर भी पुरस्कार हासिल करके, समाज और देश को गौरवान्वित करेगी।**

मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ। ☆☆☆ **शास्त्री, बलबीर जांगिड, कैथल।**

झज्झर के रक्षित जांगिड, पहले प्रयास में ही लेफ़्टिनेंट बने।

इस जीवन में, जिसने निश्चय करके अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया और आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ उस पर रास्ते पर बढ़ना सीख लिया तो, उसको सफलता मिलना अवश्यम्भावी है और सफलता उसके कदम चूमेगी और अपने पहले प्रयास में ही, **नैशनल डिफेंस एकेडमी** के माध्यम से, भारतीय थल सेना में, लेफ़्टिनेंट बनकर, यह सिद्ध किया है, 17 साल की छोटी सी आयु में, झज्जर जिले के रहने वाले रक्षित जांगिड ने, अपने पहले प्रयास में ही राष्ट्रीय सुरक्षा एकेडमी की परीक्षा पास कर ली है और उनका साक्षात्कार 22 जनवरी को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद मे एस एस बी के, माध्यम से हुआ था। इस साक्षात्कार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही, कि इसके लिए 135 कैंडिडेट्स पहुंचे थे और उनमें से केवल 20 उम्मीदवारों का ही इसके लिए चयन हुआ है।

रक्षित के पिता, विकास शर्मा, विक्की हरियाणवी के नाम से विख्यात पत्रकार हैं और माता श्रीमती आशा रानी शर्मा, शिक्षा जगत से जुड़ी हुई है और एक कालेज में कार्यरत है, रक्षित जांगिड का जन्म 5 सितंबर 2008 को हुआ और आजकल, झज्जर जिले के गांव खातीवास के संस्कारम पब्लिक स्कूल से नॉन-मेडिकल स्ट्रीम में 12वीं कक्षा में रहे पढ़ रहे हैं और रक्षित, के साथ ही, स्कूल के 20 स्टूडेंट्स ने भी एन डी ए की परीक्षा पास की थी, लेकिन सौभाग्यवश कर्मचारी चयन बोर्ड के साक्षात्कार के बाद, अकेले रक्षित जांगिड का ही चयन हुआ है और जिससे यह सिद्ध होता है कि वह असीम प्रतिभा के धनी हैं। वह अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद,जून 2026 में, लेफ़्टिनेंट की ट्रेनिंग के लिए जाएंगे। रक्षित जांगिड के पिता, विकास शर्मा, फ्रीलांसर और सोशल मीडिया के माध्यम से पत्रकारिता जगत से जुड़े हुए हैं। उन्होंने बड़े गर्व के साथ कहा कि रक्षित बचपन से ही पढ़ाई में, हमेशा ही सर्वोत्कृष्ट स्थान हासिल करता रहा है और उसने10 वीं कक्षा, झज्जर जिले के ब्रिगेडियर रणसिंह पब्लिक स्कूल दूजाना से 96 प्रतिशत अंकों के साथ पास की थी और 10वीं कक्षा में दूसरा स्थान हासिल किया। उन्होंने कहा कि रक्षित ने अपने दादा के सपनों को साकार किया है। क्योंकि इनके दादा बलवान सिंह जांगिड, भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हुए हैं और वह चाहते थे कि उनका बेटा उनके सपनों को साकार करें, लेकिन बेटे ने तो, उनका सपना साकार नहीं किया, लेकिन उनके पोते ने उनका सपना अवश्य ही साकार कर दिया है। रक्षित ने अपना लक्ष्य निर्धारित किया हुआ था और पिछले तीन वर्षों से वह निरंतर पढ़ाई के साथ-साथ शारीरिक मानदंडों पर विशेष ध्यान देते हुए प्रतिदिन कम से कम 1 घंटे व्यायाम जरूर करते थे। रक्षित की माँ आशा रानी शर्मा ने,भावुक होते हुए कहा कि, मुझे अपने बेटे पर गर्व है, उनको हमने बेहतर संस्कार दिए और अब वह आफिसर बनकर भारत माँ और देश की सेवा करेगा और भारत माता से बढ़कर कोई सेवा नहीं है। उन्होंने याद दिलाया कि रक्षित स्कूल के अलावा घर पर भी प्रतिदिन 8 घण्टे पढ़ाई करता था और इस दौरान, उसकी दादी मीना शर्मा, रात भर जागकर, रक्षित की पढ़ाई के समय उसकी आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखती थी।

अपनी सफलता की प्रेरणा और मार्गदर्शन का उल्लेख करते हुए रक्षित जांगिड ने कहा कि, मैंने अपनी तैयारी के दौरान सोशल मीडिया से पूरी तरह से दूरी बनाए रखी। इसके साथ ही अपने पिता के अथक परिश्रम की आदत से, मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ, वह पत्रकारिता और सोशल मीडिया के माध्यम से समाज को भी जागरूक कर रहे हैं और मेरी माँ आशा रानी शर्मा तो, साक्षात एक देवी के समान है, जिसने अपनी जरूरतों को, कम करते हुए, मेरी सभी जरूरतों को पूरा किया तथा मेरी सभी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा। मेरी खेलों में भी विशेष अभिरुचि है और खास तौर पर माइंड गेम शतरंज खेलना, मुझे बहुत पसंद है। इसके साथ ही म्यूजिक से भी मेरा गहरा लगाव है और गिटार बजाने का शौक भी रखता हूँ यह सभी गतिविधियां मानसिक संतुलन और व्यक्तित्व के विकास में विशेष रूप से सहायक रही हैं। एन डी ए की परीक्षा की तैयारी कर रहे, युवाओं को सफलता का मूल मंत्र बताते हुए उन्होंने कहा कि, सबसे पहले तो जीवन में अपना निर्धारित, लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए और फिर उस निश्चय की और बढ़ने के लिए सतत् प्रयास करने चाहिए, क्योंकि जीवन में जिसका निश्चय अटल है, उसके सामने परिस्थितियां भी हार मान लेती हैं। इसलिए कहा गया है कि लक्ष्य कभी दूरी नहीं देखता है अपितु वह दृढ निश्चय और संकल्प ही देखता है। स्कूल के अलावा मैं, घर पर भी प्रतिदिन करीब 8 घंटे पढ़ाई करता था और मेरा मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मेरे पिता विकास शर्मा और फूफा ऋषभ शर्मा ने विशेष रूप से आगे बढ़ने के लिए किया, इसके साथ दादी मीना शर्मा एवं माँ आशा रानी शर्मा का, स्नेह और आशीर्वाद भी उनके सिर पर सदैव ही बना रहा है।

राज्यसभा सांसद रामचन्द्र जांगड़ा ने, रक्षित जांगिड को भारतीय थल सेना में, लेफ़्टिनेंट के पद पर चयनित होने पर बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि, रक्षित जांगिड ने 11 वीं कक्षा पास करने के उपरांत अपने पहले प्रयास में ही, आशातीत सफलता हासिल करके, यह सिद्ध कर दिया कि, मेहनत, पुरूषार्थ और आत्मविश्वास के साथ कठिन से कठिन लक्ष्य को भी आसानी से हासिल किया जा सकता है और यह करिश्मा रक्षित जांगिड ने केवल 17 साल की आयु में करके दिखलाया है और इसके लिए, उसके माता-पिता ने, उसे जो बेहतर संस्कार दिए हैं, उसका परिणाम सामने आया है। मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने भी, इस होनहार युवा रक्षित जांगिड के भारतीय सेना में, लेफ़्टिनेंट के पद पर चयन होने पर बधाई देते हुए कहा कि, भगवान विश्वकर्मा की अनुकम्पा से आज समाज में प्रत्येक बच्चा जन्म जात ही, इंजीनियर पैदा होता है और अगर बच्चे को समय पर, सही मार्गदर्शन मिल जाए तो, उसको सफल होने से कोई भी नहीं रोक सकता है। रक्षित जांगिड ने यह सिद्ध करके दिखलाया है।मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ कि वह जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति के नए आयाम स्थापित कर सके।

सम्पादक,राम भगत शर्मा।

राजकोट की नव्या जांगिड ने कार्ड मेकिंग व स्केचिंग में प्रथम स्थान प्राप्त कर बढ़ाया जांगिड समाज का गौरव।

अपनी कल्पनाओं को तुलिका के माध्यम से साकार रूप देते हुए, रंगों में जान फूँककर उन्हें सजीव और जीवंत बनाने वाली राजकोट की होनहार छात्रा नव्या जांगिड ने कार्ड मेकिंग एवं स्केचिंग में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर जांगिड समाज का नाम, गौरवान्वित किया है।

राजकोट (गुजरात) स्थित जी. के. जी. ढोलकिया स्कूल की 10वीं कक्षा की छात्रा, नव्या जांगिड ने **"रंगोत्सव सेलिब्रेशन"** द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की कला प्रतियोगिता में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान हासिल करके यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। रंगोत्सव समारोह के अंतर्गत आयोजित कार्ड मेकिंग, स्केचिंग एवं हस्तलेखन प्रतियोगिता में, नव्या जांगिड ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रभावशाली प्रदर्शन किया और सम्मान प्राप्त किया। नव्या, पवन जांगिड एवं डॉ. शीना जांगिड की सुपुत्री तथा सत्यवीर जांगिड की सुपौत्री हैं तथा मूल रूप से राजस्थान के झुंझुनू ज़िले की चिड़ावा तहसील से संबंधित परिवार से हैं। नव्या के नाना, महेन्द्रगढ़ के महेंद्र कुमार आर्य लम्बे समय से महासभा से जुड़े हुए हैं और वह महासभा संरक्षक सदस्य हैं। नव्या जांगिड ने कम उम्र में, यह सफलता ,अपने सतत परिश्रम, अनुशासन एवं समर्पण की भावना से प्राप्त की है और जिसका प्रतिफल उन्हें पुरस्कार के रूप में मिला है।

नव्या के पिता पवन जांगिड ने बताया कि इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता का आयोजन 20 अगस्त 2025 को राजकोट में किया गया था, जबकि इसके परिणाम जनवरी माह में घोषित किए गए हैं। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य बच्चों की कार्ड मेकिंग, स्केचिंग एवं हस्तलेखन के माध्यम से उनकी रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करने के साथ ही उनमें आत्मविश्वास की भावना विकसित करना था। इस प्रतियोगिता का आयोजन देश के विभिन्न विद्यालयों में किया गया था, जिसमें नव्या जांगिड ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह उपलब्धि युवा, प्रतिभावान एवं उदीयमान कलाकारों और लेखकों के लिए एक प्रेरणास्रोत है।

नव्या जांगिड की माँ, डॉ. शीना जांगिड, जोकि विश्वविद्यालय में कामर्स एंड मैनेजमेंट विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं, ने बताया कि नव्या पढ़ाई में अव्वल होने के साथ-साथ ही, उसने हस्तलेखन, कार्ड मेकिंग और स्केचिंग सहित अनेक प्रतियोगिताओं में भी इससे पहले पुरस्कार हासिल किए हैं। यह उनकी सृजनात्मक शक्ति का द्योतक है और मुझे विश्वास है कि वह भविष्य में भी अपनी उत्कृष्ट और अद्वितीय प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी समाज का नाम गौरवान्वित करेगी।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, नव्या जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय देते हुए, अपनी कला के माध्यम से अपने भीतर छिपे चित्रकार को उजागर करके ,यह सिद्ध कर दिया है कि प्रतिभा की कोई आयु सीमा नहीं होती है। यह प्रतिभा, परमात्मा का दिया हुआ अमूल्य उपहार है। नव्या के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभ मंगल कामनाएं।

इसके साथ ही, गुजरात सभा प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा, विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों एवं अभिभावकों ने भी नव्या की इस उल्लेखनीय सफलता पर उन्हें अन्त:करण से हार्दिक बधाई दी है तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की मनस्कामना कामना की है।

नव्या जांगिड की यह विशेष उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत है।

पूर्व अधीक्षक अभियंता, सोहनलाल शर्मा गुरुग्राम।

जांगिड समाज क्रिकेट प्रतियोगिता में बाड़मेर की टीम विजेता रही।

युवाओं की प्रतिभा को निखारने के लिए 24 जनवरी से 29 जनवरी तक, जयपुर के भवानी निकेतन क्रिकेट ग्राउंड में, राजस्थान प्रदेश सभा के युवा प्रकोष्ठ द्वारा,जांगिड-सुथार प्रीमियर क्रिकेट लीग सीजन 2 का भव्य तरीके से आयोजन किया गया और इस प्रतियोगिता में जांगिड समाज, बाड़मेर की टीम प्रथम विजेता रही और राजस्थान युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष धर्मवीर जांगिड, प्रदेश प्रभारी योगेश जांगिड, प्रदेश महामंत्री विक्रम जांगिड एवं कैलाश जांगिड के मार्गदर्शन में जांगिड-सुथार प्रीमीयर लीग सीजन 2 का भव्य समापन समारोह आयोजित किया गया। इस समापन समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए मुख्य अतिथि विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार, विशिष्ट अतिथि प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पवार, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच और प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष गजानंद जांगिड थे और इन सभी का स्वागत आयोजन कमेटी द्वारा, स्मृति चिह्न देकर और साफा बांध कर और दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त युवा प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष ने, पधारे हुए सभी अतिथियों का स्मृति चिह्न, साफा एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत गया।

राजस्थान प्रदेश, युवा प्रकोष्ठ के महामंत्री विक्रम जांगिड ने, इस मैच के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए बताया कि इस क्रिकेट प्रतियोगिता में राजस्थान प्रदेश से कुल 16 टीमों ने भाग लिया था और अन्तिम मुकाबला विश्वकर्मा बिंदायका 11 जयपुर और जांगिड समाज बाड़मेर के बीच हुआ, जिसमें बाड़मेर टीम विजयी रही और दर्शकों ने इन खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

उन्होंने कहा कि बाड़मेर टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 15 ओवर के मैच में 4 विकेट खोकर कुल 232 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया और जिसका पीछा करते हुए विश्वकर्मा बिंदायका 11 जयपुर की टीम 11.4 ओवर में सिर्फ 78 रन के स्कोर पर आउट हो गई और यह मैच बाड़मेर की टीम ने 154 रन से जीता लिया।

विजेता टीम का उत्साह वर्धन करने के लिए आयोजनकर्ताओं एवं प्रदेशाध्यक्ष धर्मवीर जांगिड के साथ मिलकर रामगोपाल सुथार, मुकेश दाधीच और राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम पंवार की ओर से, प्रथम विजेता टीम को 51000 हजार रुपए का नकद पुरस्कार एवं उपविजेता टीम को 310000 रुपए का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही मैन ऑफ़ दी सीरीज का पुरस्कार हर्षित जांगिड को दिया गया है, और जिसके लिए स्मृति चिह्न और आनंद इक्ट्रिकल की ओर से 10 ग्राम चांदी का सिक्का देकर सम्मानित किया गया। इस प्रतियोगिता में मंयक जांगिड को , मैन ऑफ़ दी मैच का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

मंयक जांगिड ने 30 बॉल पर 75 रनों की एक शानदार पारी खेली और इसके अतिरिक्त उन्होंने एक ओवर में कुल 6 रन देकर 2 विकेट भी लिए। प्रदेश महिला प्रकोष्ठ के द्वारा भी प्रदेशाध्यक्ष डॉ रेनू जांगिड एवं कार्यकारी महिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष कंचन जांगिड की तरफ से भी, सभी महिलाओं द्वारा मिलकर भी मैच खेला गया, जिसमें महिला प्रकोष्ठ की बी टीम विजयी रही। मैच को देखने के लिए महिलाओं द्वारा बड़ी संख्या में भागीदारी रही और उन्होंने सभी ने मिलकर उनका उत्साह वर्धन किया।

राजस्थान प्रदेश सभा के महामंत्री कैलाश शर्मा ने बताया कि जांगिड -सुथार प्रीमियर लीग सीजन 2 को सफल और भव्य बनाने के लिए समस्त जांगिड-सुथार समाज एवं इसके प्रयोजको का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिनमें मारुति कास्टिंग के राजन जांगिड, श्री पंचमुखी विश्वकर्मा के पूनाराम बरनेला, फीनाजोन के सत्यनारायण जांगिड, आनंद इलेक्ट्रिक के अमित जांगिड, जनेसम रीयलिटी के दोलत जांगिड, जय श्री ज्वैलर्स,जीनमाता प्लाइवुड, ग्रीन प्लाइ, रॉयल गोल्ड, फैलकोफीक्स, राणा बाई इंट्रा देकोर, अद्भूत इंटीरियर शामिल हैं, जिनका इसके आयोजन में अमूल्य योगदान रहा।

युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष ने, विश्वकर्मा टूडे यूट्यूब चैनल के हैड नरेश शर्मा, जिन्होंने इस मैच का लाइव प्रसारण किया और दीप विश्वकर्मा के सम्पादक हरिराम जांगिड का भी आभार व्यक्त किया और इसके साथ ही आयोजन कमेटी के सदस्य योगेश जांगिड, विक्रम जांगिड, अर्जुन जांगिड, महिपाल जांगिड, दिनेश चिचावा, मुकेश बड़वाल, दिनेश जांगिड, इंद्रचंद्र जांगिड, रामानन्द जांगिड, नीरज जांगिड, तुलसीराम जांगिड का भी आभार व्यक्त किया, सभी ने मिलकर इस मैच की सुव्यवस्थित व्यवस्था की, जिससे यह प्रतियोगिता अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल रही है।

राजस्थान प्रदेश युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष, धर्मवीर जांगिड।

अहमदाबाद में भी भगवान श्री विश्वकर्मा का जन्मोत्सव धूम-धाम के साथ मनाया गया।

अहमदाबाद 31 जनवरी 2026, अहमदाबाद की जांगिड ब्राह्मण समाजवाडी नरोड़ा से 31 जनवरी को, हवन पूजा करने के बाद भगवान श्री विश्वकर्मा भगवान की शोभायात्रा का रथ, बैंड बाजा और डीजे के साथ साबरमती विश्वकर्मा मंदिर के लिये रवाना हुआ, जिसके साथ महिलाओं द्वारा कलश यात्रा और युवकों द्वारा विशाल बाइक रैली निकाली गयी। इस रैली में समाज बंधुओं, मातृशक्ति और युवाओं की सर्वाधिक भागीदारी रही।

समारोह के अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा, इस समारोह के मुख्य अतिथि गुजरात प्रदेश अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा प्रदेश और अध्यक्षता सुरेन्द्र शर्मा ने की। इस समारोह में अहमदाबाद की महापौर, प्रतिभा जैन, डॉक्टर पायल बेन नरोडा विधायक डॉ पायल बेन, अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ श्रीमती रीमा शर्मा, अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ, नीलेश शर्मा, संरक्षक शशिकांत शर्मा, राजस्थान समाज अध्यक्ष भवानी सिंह शेखावत, ए एम टी चेयरमैन, बाबू भाई पटेल, चेयरमेन,अहमदाबाद महानगर निगम कोरपोरेटर, दीपक भाई पंचाल, राजेंद्र भाई सोलंकी, सोमभाई पटेल, ऋषि शर्मा, अमन गुप्ता ने इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर भगवान विश्वकर्मा को नमन करते हुए, अपनी आस्था और प्रतिबद्धता व्यक्त की।

आयोजन समिति ने, सभी अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किया और प्रबुद्ध जनों, मातृशक्ति और युवा वर्ग ने कार्यक्रम में पधारकर इस कार्यक्रम की भव्यता को द्विगुणित किया।

पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान मालचंद जांगिड ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मंच का संचालन किया। अंत में, जिला अध्यक्ष अहमदाबाद, रविदत्त शर्मा और शोभायात्रा परिवार के अध्यक्ष राजपाल शर्मा द्वारा पधारे हुए सभी मेहमानों का आभार एवम् धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

जिला अध्यक्ष अहमदाबाद, रविदत्त शर्मा।

रेवाड़ी में भगवान श्री विश्वकर्मा जयंती महोत्सव मनाया गया।

जांगिड समाज द्वारा 31 जनवरी को प्राचीन विश्वकर्मा मंदिर, रेलवे रोड में भगवान श्री विश्वकर्मा जयंती महोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का श्रीगणेश करने से पहले हवन और यज्ञ किया गया और इस हवन यज्ञ के यजमान श्रीमती मधु जांगिड और राजेश जांगिड थे। विश्वकर्मा चौक पर भगवान श्री विश्वकर्मा जी की मूर्ति पर माल्यार्पण एवं आरती करने बाद उनको भोग अर्पित किया गया। विश्वकर्मा जयंती पर, विश्वकर्मा चौक पर "विश्वकर्मा मार्ग" के नाम-पट्ट लगाने के लिए रेवाड़ी नगर परिषद की चेयरपर्सन श्रीमती पूनम यादव का समाज के लोगों ने धन्यवाद व्यक्त किया।

इसके लिए नगर पार्षद सुरेश जांगिड, शाखा सभा रेवाड़ी अध्यक्ष सतपाल जांगिड, महासभा संरक्षक नरेश जांगिड, सुरेश जांगिड सहित समाज के बुद्धिजीवियों ने अथक प्रयास किए। इस अवसर पर रेवाड़ी जिला अध्यक्ष कैलाश चंद्र जांगिड, कोषाध्यक्ष जिला सभा अजय शर्मा, सह-सचिव, अश्विनी शर्मा, कृष्ण कुमार, रमेश लुहानिया, सतीश बबेरवाल, अशोक कुमार, राजेश कुमार, शिवदत्त जांगिड, राजेश जांगिड, विनित जांगिड समेत भारी संख्या मात्रा में समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अश्वनी, जांगिड रेवाड़ी

दुर्ग में विश्वकर्मा जयंती का उत्सव मनाया गया।

दुर्ग, छत्तीसगढ़ में भगवान विश्वकर्मा जयंती का उत्सव, बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक तरीके के साथ मनाया गया है। "विश्वकर्मा जयंती के इस पावन अवसर पर, कलात्मक सर्जन ,निर्माण और विज्ञान के देवता भगवान विश्वकर्मा के आदर्शों और सिद्धान्तों को आत्मसात संकल्प लेने की प्रेरणा दी गई ताकि जीवन सार्थक बन सके। बालोतरा जिले की। तहसीलों, जसोल कल्याणपुर, समदड़ी, पाटोदी, काणोट, बायतु, गुड़ामालानी, सिवाना और धोरीमना में भी भगवान विश्वकर्मा जयंती समारोह बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक तरीके से मनाया गया।

बालतोरा जिला सभा अध्यक्ष, सवाई राम कुलरिया।

श्री विश्वकर्मा मन्दिर मंदिर श्री गंगा नगर में, 31 जनवरी को, भगवान श्री विश्वकर्मा का जयंती महोत्सव, बड़ी श्रद्धा, आस्था व विश्वास के साथ बड़ी ही धूम धाम से मनाया गया। भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना से पहले, प्रातः हवन - यज्ञ किया गया और समाज के कल्याण की मनोकामना की गई। 30 जनवरी को, भगवान श्री विश्वकर्मा की विशाल शोभायात्रा निकाली गई जो, शहर के मुख्य बाजारों से होती हुई, भगवान विश्वकर्मा मंदिर में समाप्त हुई। रास्ते में श्रद्धालुओं द्वारा जगह जगह पुष्प वर्षा की गई।

जय भगवान विश्वकर्मा।

☆☆☆

बाड़मेर के जिलाध्यक्ष हरजीराम सुथार बने।

प्रदेश सभा राजस्थान द्वारा, जारी अधिसूचना के अनुसार 8 फरवरी 2026 को जिलाध्यक्ष बाड़मेर के पद के लिए नामांकन कार्यक्रम जांगिड पंचायत भवन, श्री विश्वकर्मा सर्किल, बाड़मेर में सम्पन्न हुआ। इसमें केवल मात्र एक प्रत्याशी का नामांकन प्राप्त होने पर, गोदारों की ढाणी, बायतु के **हरजीराम सुथार को जिला बाड़मेर के जिलाध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया है।**

चुनाव अधिकारी महेश कुमार जोपालिया ने उनको पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई।

महासभा, प्रधान रामपाल शर्मा ने जिला अध्यक्ष हरजी राम सुथार को बधाई देते हुए, उसके सफल कार्यकाल की मनस्कामना की है।

बसन्त कुमार जांगिड,
मुख्य चुनाव प्रभारी, राजस्थान

राजस्थान के पोकरण में भगवान विश्वकर्मा की जयंती हर्षोल्लास पूर्वक तरीके से मनाई गई।

विश्व के सृजन हार, शिल्प कला और विज्ञान के द्योतक, भगवान श्री विश्वकर्मा की जयंती 31 जनवरी को देशभर में मनाई गई और इस जयंती को मनाने का सौभाग्य राजस्थान के सीमावर्ती जैसलमेर जिले के पोखरण को भी मिला, जहां भवानीपुरा में स्थित भगवान विश्वकर्मा के मन्दिर में बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा और मंदिर को बड़े ही मनोहारी ढंग से सजाया गया था। विश्वकर्मा जयंती का शुभारंभ 30 जनवरी की रात जागरण और 31 जनवरी को भगवान विश्वकर्मा जयंती के पुनीत अवसर पर एक भव्य शोभायात्रा विभिन्न मार्गों से निकाली गई, जिसमें पोकरण एवं आस पास के गांवों से बड़ी संख्या में पुरुषों, मातृशक्ति तथा युवाओं ने भाग लेकर एक और भगवान विश्वकर्मा जी के प्रति अपनी आस्था और विश्वास का परिचय दिया है, वहीं सृष्टि के रचयिता भगवान विश्वकर्मा के बारे में अनेक महानुभावों ने भी अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

राजस्थान के सीमावर्ती जिले पोकरण में भगवान विश्वकर्मा जयंती मनाई गई।

कर्नाटक प्रदेश सभा के पूर्व अध्यक्ष जगत राम भदरेचा ने बताया कि इस धार्मिक उत्सव में भारी संख्या में समाज के लोगों ने भाग लिया, जिनमें महिला, पुरुष, युवा और बच्चे शामिल थे। फूलों से सजी भगवान विश्वकर्मा और अन्य देवी देवताओं की मनोरम झांकी सजाई गई थी और यह भव्य झांकी पोखरण के बाजारों से होती हुई, भवानीपुरा स्थित श्री विश्वकर्मा मंदिर पहुंची और उसके पश्चात समारोह के शुभारंभ से पहले भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना की गई और हवन यज्ञ किया गया, जिसमें समाज की महान विभूतियों ने पूर्णाहुति डाली।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए, कर्नाटक प्रदेश सभा के पूर्व अध्यक्ष **जगत राम भदरेचा ने कहा कि आलौकिक शक्तियों और दिव्य शक्तियों से परिपूर्ण, शिल्प कला कौशल में पारंगत, द्वारकापुरी, हस्तिनापुर, इंद्रपुरी और सोने की लंका के निर्माता, भगवान विश्वकर्मा ने, एक प्रकार से हनुमान की तरह ही भगवान के एक दूत के रूप में कार्य किया हैं। भगवान श्री राम के आदेश पर, भगवान विश्वकर्मा के वंशज नल और नील ने रामेश्वरम से लंका तक तैरते हुए पत्थरों से, पुल बना दिया और इस पुल के द्वारा वानर सेना द्वारा लंका पर चढ़ाई कर, आदिशक्ति माँ सीता को, वापस लाया गया था।**

पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण ने, भगवान विश्वकर्मा को द्वारकापुरी का निर्माण करने का आदेश दिया था, तो उन्होंने द्वारकापुरी का निर्माण कर दिया। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि, सुदामा के लिए एक भव्य महल का निर्माण किया जाए ,तो, उन्होंने सुदामा की पत्नी वसुंधरा के आग्रह पर सुदामा के लौटने से पहले ही, न केवल सुदामा का शाही महल, अपितु सभी गांववासियों के घरों को भी महलों में बदल दिया था।

श्री विश्वकर्मा जांगिड समाज सेवा संस्थान, भवानीपुरा पोकरण के अध्यक्ष अमराराम कुलरिया ने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से समाज में एकता और भाईचारे तथा सांस्कृतिक परम्पराओं को मजबूती मिलती है। उन्होंने कहा कि हमारे आराध्य देव भगवान विश्वकर्मा हैं, जिन्होंने न केवल देवी-देवताओं के लिए अनेक प्रासाद और अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया, अपितु उन्होंने इन्द्र देव के लिए अमरावती और उनके लिए वज्राशस्त्र का निर्माण के साथ अनेक भव्य और अलौकिक इमारतों का निर्माण किया था और मुझे गर्व है कि मैं ऐसे समाज में, पैदा हुआ हूँ, जिसने भगवान विश्वकर्मा के अद्वितीय कला कौशल और ज्ञान को आत्मसात करते हुए ही, अपनी मेहनत और पुरुषार्थ से कार्य करते हुए इस देश का गौरव बढ़ाया है। भगवान विश्वकर्मा के वंशजों ने ही अजन्ता-अलोरा की गुफाओं से लेकर अनेक ऐतिहासिक मंदिरों का निर्माण किया है, जो आज हमारे देश की अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने सभा की तरफ से सभी मेहमानों का यथोचित सम्मान और स्वागत किया।

इस अवसर पर, जोगाराम सुथार, दुर्जन राम भदरेचा अर्जुनदास डॉयल पुखराज सुथार, कस्तूराराम सुथार, पदमाराम सुथार सहित भारी संख्या में मातृशक्ति और युवा पीढ़ी ने शामिल होकर इस समारोह की शोभा को द्विगुणित किया।

☆☆☆

अध्यक्ष, अमरा राम कुलरिया।

नीमच में विश्वकर्मा जन्मोत्सव पर विश्वकर्मा की भक्ति में झूमे समाजजन

जांगिड ब्राह्मण समाज, जवाहर नगर, नीमच के तत्वाधान में 49वां श्री विश्वकर्मा जन्मोत्सव, विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ, 127- जवाहर नगर, नीमच, जांगिड ब्राह्मण समाज भवन में संपन्न हुआ। भगवान विश्वकर्मा मंदिर में प्रतिमा के समक्ष श्री गणपति पूजन, विश्वकर्मा जी की पूजा अर्चना, हवन एवं आरती के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जन्म महोत्सव कार्यक्रम की श्रृंखला मे विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान सहित भगवान विश्वकर्मा जी कथा एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें समाज बंधुओ, बालिकाओं, महिलाओं एवं बच्चों ने अपार उत्साह के साथ सहभागिता निभाई। भगवान के जन्म महोत्सव के अवसर पर नगर के प्रमुख मार्गो से भगवान श्री विश्वकर्मा की शोभायात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में समाज के पुरुष श्वेत वस्त्र एवं महिलाएं लाल साड़ी/चुनरी में सहभागी बने। विभिन्न समाजों एवं संस्थाओं द्वारा भगवान की शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत, अभिनंदन किया गया। अनेक संस्थाओं द्वारा शोभायात्रा के मार्ग में स्वल्पाहार एवं पेयजल की व्यवस्था की गई। समाज बंधुओ ने अपना व्यापार/ व्यवसाय/ संस्थान का अवकाश रखकर कार्यक्रमों में सहभागिता निभाई।

नीमच में विश्वकर्मा जन्मोत्सव की झलकियां

नीमच में विश्वकर्मा जन्मोत्सव की झलकियां

पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह में भारत सरकार के पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सदस्य विनय जांगिड, भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पवन पाटीदार, नीमच विधायक दिलीप सिंह परिहार एवं जिला कांग्रेस अध्यक्ष तरुण बाहेती बतौर अतिथि सम्मिलित हुए। समारोह के अतिथियों ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान विश्वकर्मा ने ही सृष्टि की रचना की, इसी कारण वे सृष्टि रचयिता कहलाते हैं। जांगिड ब्राह्मण समाज सामाजिक समरसता के साथ निरंतर प्रगति कर रहा है जो राष्ट्रीय एकता का परिचायक है।

भगवान विश्वकर्मा की कुशाग्र तकनीकी कौशल कला ही आधुनिक विकसित भारत का प्रमुख आधार है। देश के विकास में जांगिड ब्राह्मण समाज का योगदान भी महत्वपूर्ण है, इनके निरंतर अभ्यास और प्रयास से ही विकसित उद्योगों की स्थापना निरंतर हो रही है। समाज की प्रतिभाएं अब हर क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रही है जो सामाजिक एकता का प्रतीक है। इस समाज के प्रगतिशील उद्योगपतियों से अन्य समाज ही नहीं, पूरे देश के लोगों को प्रेरणा लेकर उद्योगों में आगे बढ़ना चाहिए। विश्वकर्मा समाज में श्रम की पूजा होती है। हर राष्ट्र के विकास में श्रम का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

सभी आयु वर्ग की चित्रकला एवं मेहंदी प्रतियोगिता सहित बालक एवं बालिका वर्ग की दौड़, स्लो साइकिल रेस, स्लो स्कूटी रेस, चेयर रेस, फैंसी ड्रेस, चम्मच रेस, क्रिकेट एवं सामाजिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। खेलकूद और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह में अतिथियों के कर कमलों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समाज में उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने हेतु समाजबंधुओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समाज के जिन विद्यार्थियों ने अध्ययन के क्षेत्र में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए तथा विशिष्ट योग्यताएं प्राप्त की हैं, उन्हें भी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

महाआरती के पश्चात सभी समाज बंधुओं एवं अतिथियों ने भोजन प्रसादी का आनंद लिया।

।। जय श्री विश्वकर्मा ।।

प्रवीण कुमार शर्मा नीमच

जांगिड ब्राह्मण समाज समिति ट्रस्ट गांधीधाम द्वारा विश्वकर्मा जयंती समारोह का आयोजन किया गया।

जांगिड ब्राह्मण समिति गांधीधाम द्वारा, सृष्टि के रचयिता, महान शिल्पी और आराध्य देव भगवान श्री विश्वकर्मा जयंती दिवस बड़े ही भव्य और हर्षोल्लास तरीके से मनाया गया। इस अवसर पर भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना की गई तथा मुख्य अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

इस अवसर पर गुजरात प्रदेश सभा के कार्यकारी अध्यक्ष, प्रमोद कुमार जांगिड ने कहा कि समाज के गरीब और प्रतिभावान बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हमारे परिवार द्वारा **श्रीमती सन्तोष देवी राधेश्याम चैरिटेबल ट्रस्ट बनाया गया है** और इस ट्रस्ट का एक मात्र उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से अक्षम बच्चों की सहायता करना है ताकि वह उच्च शिक्षा ग्रहण करके अपने पंखों को उड़ान दें सकें। अभी पिछले तीन दिनों में ही इस ट्रस्ट के माध्यम से 2 बच्चों को वित्तीय सहायता दी गई है, जिसमें से एक विद्यार्थी को एक लाख 25 हजार और एक विद्यार्थी को 45 हजार 500 रुपए की सहायता दी गई है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि सभी मामलों में ट्रस्ट की तरफ से 48 घंटे में वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

उन्होंने कहा कि **समाज के गरीब और प्रतिभावान बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए सहायता और सहयोग के लिए, ट्रस्ट, सदैव ही तत्पर और वचनबद्ध हैं। हमारी ट्रस्ट के माध्यम से यह पूरी कोशिश रहेगी कि, समाज का कोई भी प्रतिभावान विद्यार्थी पैसे के अभाव में पीछे न रहे।** इस गरिमापूर्ण समारोह में, **भामाशाह सम्मान से सम्मानित करने के लिए** आप सबका धन्यवाद करता हूँ।

कैलाश जांगिड ने कहा कि सबसे पहले मैं, जांगिड ब्राह्मण समाज समिति ट्रस्ट, गांधीधाम और गांधीधाम जांगिड समाज का हृदय की गहराइयों से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ कि, आपने इस सेवक को **जांगिड गौरव पुरस्कार** जैसे प्रतिष्ठित सम्मान के योग्य समझा। यह सम्मान केवल मेरा ही नहीं, बल्कि उन सभी समाज बंधुओं के अटूट विश्वास और आस्था का सम्मान है, जिन्होंने सदैव ही मुझ पर भरोसा जताते हुए, प्रदेश सभा को प्लेटिनम सदस्य बनाने में रिकॉर्ड कायम किया। उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि गुजरात प्रदेशाध्यक्ष रहते हुए आप सभी के सहयोग से महासभा द्वारा दिए गये लक्ष्यों को पूरे मनोयोग के साथ पूर्ण किया है।

गांधी धाम जांगिड समाज समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष, गुरुदत्त शर्मा ने उपस्थित मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि, आज गांधीधाम में, समाज का संगठन एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है। उन्होंने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी के सहयोग की भरपूर सराहना करते हुए कहा कि, गांधी धाम में बनाए जा रहे, समाज के भवन निर्माण में सहयोग देने वाले दानदाताओं का हृदय के अन्तःकरण से आभार व्यक्त करता हूँ। **महिला मण्डल की ममता दिवेष शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।**

विश्वकर्मा जयंती समारोह की अध्यक्षता कर रहे, मोहनलाल जांगिड के नेतृत्व में, गुजरात के गौरव प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष सूरत के कैलाश जांगिड को, गुजरात प्रदेश अध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान किए गए, उल्लेखनीय योगदान के लिए, भगवान दत्त की स्मृति में दिए जाने वाले जांगिड गौरव पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, उसके लिए आभार व्यक्त किया। यह पुरस्कार पिछले 23 वर्षों से समाज की महान विभूतियों को प्रदान किया जा रहा है। इसके साथ ही समाजसेवी एवं भामाशाह, प्रमोद कुमार जांगिड को **भामाशाह सम्मान** देकर सम्मानित किया गया है। वर्ष 2025 के श्रेष्ठ कार्यकर्ता के रूप में राहुल कालूराम को भी प्रशस्ति पत्र देकर और विश्वकर्मा प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता में टूर्नामेंट की विजेता टीम, उप विजेता टीमों के, खिलाड़ियों को भी ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। इस दो दिवसीय उत्सव का शुभारंभ 30 जनवरी की रात्रि को, भजन संध्या और 31 जनवरी को प्रातः वैदिक विधि से पं इन्द्रजीत शास्त्री द्वारा-हवन यज्ञ संपन्न करवाया गया, प्रमोद जांगिड और कैलाश जांगिड ने इसमें आहूति डाली।

इस समारोह की शोभा को द्विगुणित करने वालों में, सूरत के उद्योगपति और महासभा के प्लेटिनम सदस्य, भंवरलाल शर्मा, डॉ रमेश जांगिड, गांधीधाम के प्रशासनिक अधिकारी अरुण एन. शर्मा, एवं आंजणा पटेल, समाज गांधीधाम के अध्यक्ष उद्योगपति महेश चौधरी, कच्छ जिलाध्यक्ष हस्तीमल, पूर्व जिलाध्यक्ष विजयराज एवं खीमचंद, चंद्रप्रकाश, गोमाराम, दुर्गाराम, नारायण, रामेश्वरलाल, ओम प्रकाश, काना राम, सोमा राम, सतीश मनीराम, दलीप जांगिड एवं युवा एवं महिला मंडल से सम्बंधित मातृशक्ति शमिल हैं।

महाप्रसाद का आयोजन ओमप्रकाश-शंकरलाल के परिवार द्वारा किया गया था। जिसमें श्रीमती सायरी देवी का विशेष रूप से आशीर्वाद का लाभ मिला।

जांगिड ब्राह्मण समाज समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष गुरुदत्त शर्मा।

शरीर को जिंदा रखने के लिए भोजन पर ध्यान देना बहुत जरूरी है।

शरीर को जिंदा रखने के लिए भोजन की बहुत आवश्यकता होती है लेकिन यह कितना लेना चाहिए, किस समय लेना चाहिए, कैसा भोजन लेना चाहिए, यह सब जानकारी बहुत जरूरी है। योग गुरु भोजन के बारे में कहते हैं कि......

भोजन :---दिन मे एक बार योगी लेता है, दो बार भोगी लेता है, और तीन बार या ज्यादा रोगी भोजन करता है।

एक समय में भोजन कितना करना चाहिए ? जैसा कि आपने देखा होगा, जब हम हवन करते हैं तो उसमें सामग्री उसी हिसाब से डालनी चाहिए, जितनी उसमें अग्नि प्रज्वलित होने के लिये आवश्यक है। अगर हम उसमें ज्यादा सामग्री डाल देंगे, तो वह आग बुझ जाएगी, और धुंआ देने लगेगी। इसी प्रकार शरीर के अंदर भी एक हवन कुंड है, जिसको हम जठर अग्नि कहते हैं, जैसे ही हम मुंह में निवाला डालते हैं तब जठर अग्नि प्रज्वलित हो जाती है। इसलिये भोजन इतना करें कि जठर अग्नि बुझने ना पाए। अगर ज्यादा भोजन कर लिया तो वह बुझ जाएगी, और ऊपर से फिर पानी भी पी लेते हैं तो जठर अग्नि पूरी तरह बुझ जाती है। फिर वह खाना पेट के अंदर पड़ा रहता है। जिस खाने को हजम होने में 4 से 5 घंटे लगने चाहिए वह सारा दिन हजम नहीं होता, और बदहज़मी, एसिडिटी हो जाती है, खाना अंदर सड़ने लगता है, फिर दुनिया भर की बीमारियां लग जाती हैं। खाने की जरूरत के हिसाब से आदमी को स्वयं यह ज्ञान हो जाता है कि अब मेरा पेट भर गया है लेकिन खाने का अच्छा स्वाद और बढ़िया भोजन देख कर बिना जरुरत के भी आवश्यकता से ज्यादा खाता रहता है, जिसका नुकसान पूरे शरीर को भुगतना पड़ता है। जब आदमी भोजन करता है तो भोजन करने के तुरंत बाद यदि नींद आ जाए तो समझो, उसने भोजन ज्यादा किया है। अधिक भोजन के कारण पूरे शरीर में आलस्य आ जाता है और शरीर की सारी शक्ति, उस भोजन को पचाने में लग जाती है।

शरीर में भी जो जठर अग्नि है, वह एक हवन कुंड के समान है। हम हवन करते हुए उसमें शुद्ध हवन सामग्री डालते हैं उससे पूरा वायुमंडल शुद्ध हो जाता है,और उसका बहुत लाभ होता है। अगर उसमें हम लाल मिर्च या चमड़ा डाल देंगे तो वहां बैठना मुश्किल हो जाएगा। इसका मतलब है कि अग्नि में वही चीज डाली जाती है जिससे वातावरण शुद्ध होता है। इसी प्रकार पेट में भी वही पदार्थ डालें जो उसके अंदर डालने लायक हो। जो शरीर के लिए लाभदायक है, जो शरीर को नुकसान ना पहुचाये, और जो जल्दी हजम हो जाए। ऐसा शुद्ध भोजन ही करना चाहिए। पेट को कभी भी कबाड़ खाना ना बनाएं। जितनी भी बीमारियां हैं, उन सब की शुरुआत शरीर के अंदर पेट से ही होती है। यदि हमने खाने-पीने पर पूरा ध्यान दिया तो शरीर में किसी प्रकार की कोई बीमारी कभी भी नहीं आएगी। **परमात्मा ने हमारे शरीर में हमें पांच डॉक्टर दिए हैं,** जो खाने को चेक करते हैं। अगर हम उन डॉक्टरों की देख रेख में खाने को चेक करके खाएंगे, तो हमे कभी भी किसी बीमारी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

पहला डॉक्टर है आंखें :---- भोजन करने से पहले आंखों द्वारा उसको चेक किया जाता है, वो देखती है कि यह भोजन हमारे शरीर के लिए लाभदायक है या नहीं, बुद्धि उसका निर्णय करती है, अगर बुद्धि ने आंखों की बातों का समर्थन किया तो वह खाने लायक भोजन होगा।

दूसरा डॉक्टर है हाथ:---- परमात्मा ने हाथों के अंदर वह शक्ति दी है कि वह गर्म और ठंडा को बता देते हैं। कुछ लोग चम्मच से, कांटे से खाना खाते हैं तो गर्म ठंडे का पता नहीं लगता और मुंह में गरम-गरम डाल लेते हैं, जिससे मुंह में छाले हो जाते हैं। इसलिए पहले हाथों से चेक करें कि यह खाना कितना गर्म है, कितना ठंडा है, हमारे खाने लायक है कि नहीं। हाथों ने अगर उसको पास कर दिया तो वह शरीर के लिए लाभदायक होगा।

तीसरा डॉक्टर है नासिका:---- जब हम हाथ में भोजन को लेकर नासिका के पास जाते हैं तो वह बता देती है कि भोजन में कितनी सुगंध है या नहीं है। भोजन खाने लायक है कि नहीं है। नासिका के अंदर ऐसा सेंसर लगा हुआ है, जो यह पास करता है कि भोजन शरीर के लिए लाभदायक है कि नहीं है। अगर नासिका ने उसको पास कर दिया तब हम उस भोजन को कर सकते हैं।

चौथा डॉक्टर है जिह्वा :----- परमात्मा ने जिह्वा को इतना सुंदर, इतना बढ़िया, इतना पारखी बनाया है, वह संपर्क मे आते ही बता देगी कि खाना खट्टा है, मीठा है या कसैला है, खाने लायक है कि नहीं है। अगर उस खाने को जिह्वा ने पास कर दिया, तब हम उस खाने को खाएंगे तो वह शरीर के लिए लाभदायक होगा।

पांचवा डॉक्टर है दांत :---- जब हम मुंह में भोजन को डालते हैं तो दांत बता देते हैं कि यह खाने लायक है कि नहीं है। अगर बहुत ज्यादा सख्त होगा तो दांत इसको पास नहीं करेंगे,जो खाने लायक होगा वही दांत पास करेंगे। दांतों से भोजन को इतना चबाएं कि वह लार जैसा बन जाए। दांतों का काम आंतों को ना करना पड़े। अगर दांतों ने भोजन को पास कर दिया वह भोजन भी शरीर के लिए लाभदायक होगा। अगर हम, इन पांच डॉक्टरों की देख रेख में, भोजन करेंगे तो हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा, तंदुरुस्त रहेगा, लंबी आयु वाला होगा। कभी भी भोजन करते समय ना तो बात करें, ना टीवी देखे, ना मोबाइल देखें, पूरा ध्यान भोजन पर दें। पूरे ध्यान से इन पांच डॉक्टरों की देख रेख में भोजन करेंगे तो वह भोजन, अमृत के समान लाभदायक होगा और शरीर के नजदीक कोई बीमारी नहीं फटकेगी। इसे अपनाने से हर व्यक्ति तंदुरुस्त रह सकता है।

अत: हमे आयुर्वेद के इन नियमो को मानना चाहिये।

सत्य पाल वत्स आर्य

आध्यात्मिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष अ. भा.जां. ब्राह्मण महासभा दिल्ली

रामेश्वर ज्योतिर्लिंग और देश के चार धामों में विख्यात तीर्थ के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ

भारत देश ऋषि मुनियों की पावन धरा है और इसके कण **कण में आध्यात्मिकता की धारा प्रवाहित हो रही है। यह पावन धरा, भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं की साक्षी रही है। इस पुण्य धरा पर भगवान शंकर ने, अपनी दिव्य लीलाओं की अनुभूति का अहसास करवाने के लिए ही, देश में, प्रदेश के विभिन्न राज्यों में 12 ज्योतिर्लिंग स्थापित किए गए हैं, जहां पर श्रद्धालु भक्त अपनी श्रद्धा, आस्था और विश्वास के अनुसार करोड़ो लोग, इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करके अपनी आस्था और विश्वास की प्यास बुझाते हैं और** इसी क्रम में **तमिलनाडु में स्थित रामेश्वरम में, भगवान श्री राम द्वारा स्थापित ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने का परिवार सहित पुण्य प्राप्त हुआ और भगवान शंकर के दिव्य मणि दर्शन, करने के बाद भगवान श्री राम द्वारा स्थापित ज्योतिर्लिंग के दर्शन करके, हृदय की आध्यात्मिक प्यास बुझने के साथ ही, भगवान श्री राम की लीलाओं के बारे में भी सुनने का अवसर प्राप्त हुआ।**

धनुषकोडी के संगम पुटाइंट पर हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी के मिलन के अवसर पर मनोहारी दृश्य का आनंद लेते हुए

मैं हमेशा ही इस अकाट्य सत्य का पक्षधर रहा हूँ कि, ऐसे ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करने का सौभाग्य केवल मात्र, उसी सौभाग्यशाली भक्त को प्राप्त होता है, जिस समय,उस पर भगवान शंकर की विशेष अनुकम्पा होती है, अन्यथा तो आप चाहते हुए भी उस ज्योतिर्लिंग के दर्शन नहीं कर सकते हैं और बिना दर्शन किए हुए ही, उसके पास से मस्तक झुकाकर निकल जाते हैं। मैं इसका साक्षी रहा हूँ। रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने की योजना दो तीन महीने पहले बनाई गई थी और सौभाग्यवश, रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए, अपनी जीवन संगिनी ,अर्धांगिनी रुपा रानी और बेटे जलज शर्मा के साथ जाने का कार्यक्रम बनाया गया। रामेश्वरम तीर्थ स्थल की यात्रा के लिए 15 जनवरी को नाशिक से मुम्बई के लिए रवाना हुए और रात्रि में मुम्बई में विश्राम के बाद 16 जनवरी को प्रातः 10 बजे हवाई जहाज में सवार होकर, मधुरई 12 बजे पहुंचे और सड़क के रास्ते तीन घंटे का सफर तय करके रामेश्वर पहुंचे और होटल में सामान रखकर तीर्थ स्थल धनुषकोडी के लिए निकल पड़े, धनुषकोडी रामेश्वरम से 30 किलोमीटर दूर वह स्थल है।

रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने से पहले मन्दिर के बाहर खड़े हो कर नंगे पैर अपनी आस्था व्यक्त करते हुए।

धनुषकोडी वह स्थान है,जहां पर भगवान श्री राम ने लंका पर चढाई करने से पहले पूजा की थी और रामसेतु का निर्माण किया था और भगवान श्री राम के श्री लंका पर विजय के पश्चात् विभीषण के आग्रह पर अपने एक धनुष बाण से रामसेतु को तोड़ दिया था ताकि कोई इस रास्ते से लंका में प्रवेश ना कर सके और नासा ने भी रामसेतु के अवशेष होने की पुष्टि की है और यह रामसेतु 48 किलोमीटर लम्बा बताया जा रहा है हमारे वैज्ञानिकों ने भी यह सिद्ध किया है। धनुषकोडी से **श्रीलंका का फासला समुद्र के रास्ते से सिर्फ 18 किलोमीटर है और धनुषकोडी में ही संगम पुआईंट भी है, जहां पर हिन्द महासागर और पश्चिमी बंगाल खाड़ी समुद्र, दोनों आपस में मिलते हैं।** कहते हैं कि 24 दिसम्बर सन् 1964 में, एक भंयकर चक्रवात के दौरान धनुषकोडी के व्यापारिक केन्द्र और ऐतिहासिक महत्त्व की सभी इमारतें खण्डरों में बदल गई और आज इसके आसपास वह खण्डर इस बात के साक्षी हैं और उसकी गवाही दे रहे हैं।, जिसमें पुरानी रेलवे लाइन की पटरी और लोहे के खम्भे और टूटे हुए मकानों के अवशेष, आज भी उस चक्रवात के साक्षी होने की गवाही दे रहे हैं। श्रद्धालु भक्त, धनुषकोडी में सूर्यास्त होते हुए सूर्य देवता की एक झलक पाने और इस विहंगम दृश्य के दर्शन करने के ,लोभ का संवहरण कोई भी नहीं करना चाहता है। सायंकाल भीड़ का आलम यह होता है , कि पैदल चलना भी मुश्किल होता है, क्योंकि वह इतनी चोड़ी सड़क नहीं है और रात में न हि यहां पर बिजली की व्यवस्था है इसलिए श्रद्धालु , शीघ्र से शीघ्र दर्शन करके जल्दी से जल्दी वापस लौटना चाहते हैं और इस विंहगम दृश्य के दर्शन करने का सौभाग्य हमें भी प्राप्त हुआ और वापस लौटकर रात्रि में , होटल में 16 जनवरी को विश्राम किया।

अगले दिन 17 जनवरी शनिवार को रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने का कार्यक्रम बनाया गया और इसके लिए सुबह 4 बजे उठकर स्नान- ध्यान किया और भगवान की पूजा अर्चना की और **सुबह 5.15 पर प्रातः रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए निकल पड़े और भगवान रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए, सबसे पहले मन्दिर में प्रवेश करते ही इस मंदिर की द्राविड़ शैली में बनाई गई, अनूठी और अद्भुत वास्तुकला को देखकर मन में असीम आनंद की अनुभूति हुई और मन भगवान श्री राम के युग की**

स्मृतियों में खो गया। तमिलनाडु सरकार के सौजन्य से ही, रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के बेहतर और सुव्यवस्थित ढंग से दर्शन करने का साक्षी होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। **सबसे पहले मणि दर्शन, जो शेषनाग की एक मणि है, शिवलिंग के रूप में है, उसके दर्शन किए। यह स्फटिक मणि शिवलिंग के रूप में है एक क्रीस्टल मणी है जो स्वयं ही, शेषनाग ने रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग पर अर्पित की थी और उसके पश्चात पैदल ही साथ में बने हुए अग्नि कुंड में, समुद्र के पानी में स्नान और फिर वापस मंदिर आकर हमने, इसके परिसर में बने हुए 22 कुण्डों में स्नान किया।** ऐसा माना जाता है कि इस दिव्य और अलौकिक रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के लिए यहां पर दर्शन करने के लिए वर्ष भर में लगभग 300 मिलियन लोग हर वर्ष आते हैं और इन 22 कुण्डों में स्नान करके अपनी आध्यात्मिक प्यास बुझाने के साथ ही, विभिन्न रोगों से मुक्ति भी पाते हैं। यह अलग अलग कुए भगवान श्री राम द्वारा तीर मारकर बनाए गए थे और ऐसी मान्यता है कि इन कुओं के जल में स्नान करने से भयानक से भयानक रोग भी ठीक हो जाते हैं। इन 22 कुओं में स्नान करने के उपरांत हमने कपड़े चेंज किए और फिर रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए निकल पड़े।

रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने से पहले अग्नि कुंड में स्नान करने के बाद बाहर आते हुए। इस अग्नि कुंड में भगवान श्री राम और सीता माता ने ज्योतिर्लिंग स्थापना से पहले समुद्र में स्नान किया था।

भगवान श्री राम और भगवान शिव की ऐसी असीम कृपा हुई कि ,मंदिर परिसर में पहुंचते ही, भगवान रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के साथ ही हमें तीनों को दूध से जलाभिषेक करने का सौभाग्य भी मिला और हम कितने सौभाग्यशाली रहे, ऐसा सुवर्ण अवसर जीवन में बहुत ही कम लोगों को ही मिलता है और मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि भगवान श्री राम और भगवान महेश की अनुकम्पा से ही यह पुण्य अर्जित करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बड़े ही आर्त भाव और सत्य निष्ठा तथा समर्पण की भावना से ओत-प्रोत होकर यह पूजा-अर्चना की गई और दिव्य और अलौकिक तथा मनोरम दृश्य की अमिट छाप मेरे दिल में हमेशा ही अंकित रहेगी। मेरे मन मंदिर में, आज भी वह विहंगम दृश्य, प्रकाशमान और देदीप्यमान कोहिनूर की तरह मेरे अन्त:करण में समाहित होकर, मुझे अपनी अलौकिक आभा से बांधे हुए है। उसके पश्चात मन्दिर परिसर में बने आदिशक्ति महालक्ष्मी मंदिर के दर्शन के साथ ही अन्य देवी देवताओं के भी दर्शन किए और जिसके बाद एक सुखद, अलौकिक और आध्यात्मिक अनुभूति का अहसास हुआ ,जो जीवन पर्यन्त एक अनमोल धरोहर के रूप में संजोकर मेरे मन में रखी रहेगी और वह सुखद अनुभूति जीवन का आधार बन गई है।

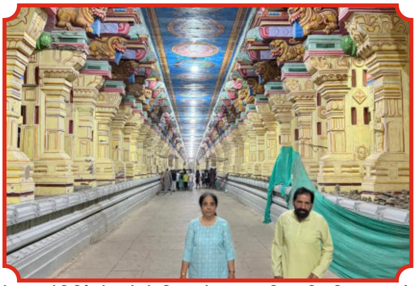
रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के दर्शन के लिए जाते हुए। यह मन्दिर द्राविड़ शिल्प कला शैली में बनाया गया है, यह विश्व प्रसिद्ध धरोहर में तीसरे स्थान पर है।

अब इस विशालकाय और विश्व धरोहर में तीसरे नंबर पर, इस मंदिर के बारे में तमिलनाडु के प्रोटोकॉल अधिकारी से जानकारी हासिल करने का प्रयास किया, लेकिन इस अद्वितीय और अद्भुत तथा चमत्कारिक मंदिर के इतिहास के बारे में समुचित जानकारी तो उपलब्ध नहीं है, क्योंकि भगवान श्री राम, त्रेता युग में भगवान विष्णु के 7 वें अवतार के रूप में अवतरित हुए थे , जिसको 5 हजार साल से अधिक का समय बीत चुका है। इस वर्तमान, रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग के आधुनिक मंदिर के निर्माण का कार्य, लगभग 1206 वर्ष पहले द्राविड़ शैली में पाण्डया राजवंश द्वारा किया गया था और यह वास्तुकला का एक अद्भुत और बेजोड़ नमूना है और इस मंदिर के तीन गलियारे हैं, जिसमें पहले गलियारे में 108 शिवलिंग और गणेश की प्रतिमा स्थापित की हुई है। दूसरे गलियारे में 23 फूट ऊंचे 1212 खम्भे हैं, जो द्राविड शैली की वास्तुकला का अद्वितीय और अनूठा उदाहरण है और तीसरे गलियारे में, **जो ज्योतिर्लिंग है, वह स्वयं भगवान श्री राम ने , लंका से लौटते समय रामेश्वर द्वीप पर स्थापित किया था। यह शिवलिंग आदिशक्ति माता सीता द्वारा रेत से बनाया गया था।**

ऐसा उल्लेख मिलता है ऋषि मुनियों की सलाह पर ही, भगवान श्रीराम को , रावण के मारने के लिए, ब्राह्मण हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए ही, **श्री रामेश्वरम में एक शिवलिंग स्थापित करने का सुझाव दिया था, लेकिन वहां पर कोई शिवलिंग नहीं था, इसलिए भगवान श्रीराम ने हनुमान जी को शिवलिंग लाने के लिए कैलाश पर्वत पर भेजा, लेकिन जब तक हनुमान जी वापिस लौटते, तब तक वह शुभ मुहूर्त का समय निकलता जा रहा था, इसलिए लिए माँ सीता ने रेत का शिवलिंग बना दिया और उसको स्थापित कर दिया गया।** हनुमान के द्वारा शिवलिंग लेकर रामेश्वरम लौटने पर , हनुमान ने कहा कि भगवन, इस शिवलिंग को स्थापित करो , तब भगवान श्री राम ने हनुमान से कहा कि आप सीता द्वारा बनाए गए इस शिवलिंग को उखाड़ दोगे तो, यहां पर आपका लाया गया शिवलिंग स्थापित कर दिया जाएगा। हनुमान जी ने अपनी पूछ से उस शिवलिंग को उखाड़ने का भरसक प्रयास किया, लेकिन हनुमान जी को सफलता नहीं मिली। हनुमान जी द्वारा लाया गया शिवलिंग भी इसी परिसर में रखा गया। इस लिए इस परिसर में दो शिवलिंग हैं। जिनके नाम रामलिंगम और विश्वलिंगम है

रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के बाद, हम रामपादुका पहुंचे, यहां पर भगवान श्री राम के चरणों के पद हैं। इस स्थान पर पर पहुंच कर भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवान श्री राम को, श्रद्धा पूर्वक नतमस्तक होने के लिए आते हैं, इसके साथ ही, पंचमुखी हनुमान मंदिर, गन्धमादन पर्वत , जहां से हनुमान जी ने, कैलाश पर्वत के लिए अपनी उड़ान भरी थी और इसके साथ ही, **लक्ष्मण तीर्थ के भी दर्शन किए, जहां पर लंका विजय के बाद लक्ष्मण ने, भगवान शिव की पूजा की थी।**

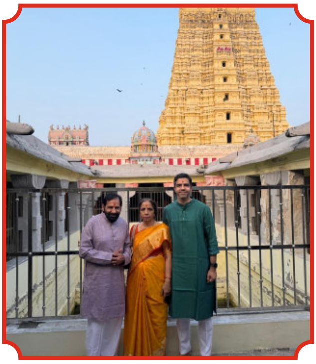

16 जनवरी को, रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग मंदिर में दर्शन करने के बाद परिवार के साथ मंदिर परिसर में फोटो खिंचवाते हुए

इसके साथ ही कुछ भक्त एक और दर्शनीय स्थल गोठड़ा गांव में है, वहां पर भी दर्शन करने के लिए भी जाते हैं, वहां पर भी एक मन्दिर भी है, जहां पर भगवान श्री राम ने , माता सीता को ,प्यास लगने पर, एक तीर मारकर पानी निकाला था और इसमें, सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह है कि यह कुण्ड या कुआं बिल्कुल समुद्र के बीच में है और इस कुएं का पानी बिल्कुल ही मीठा है और यही भगवान श्री राम का चमत्कार है और यहां पर पानी में तैरते हुए पत्थरों के दर्शन भी किए जा सकते हैं। हमें इसके दर्शन करने का सौभाग्य नहीं मिला, उसके पश्चात हम, देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम आजाद म्यूजियम के दर्शन करने के लिए गए , जहां पर अब्दुल कलाम आजाद की मधुर स्मृतियों को संजोकर रखा हुआ है और इस संग्रहालय को देखने के बाद, पूर्व राष्ट्रपति की सभी यादें तरो ताजा हो गई। संयोगवश डॉ अब्दुल कलाम आजाद का पुश्तैनी मकान भी रामेश्वरम में है, हमें उसकी भी बाहर से झलक देखने का अवसर प्राप्त हुआ और उसके पश्चात हम मदुरई पहुंचे।

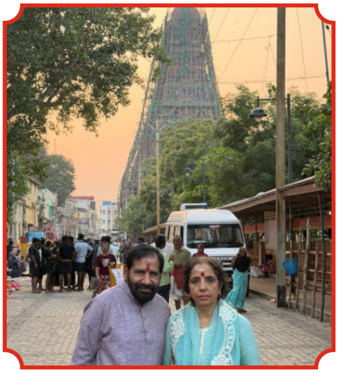

17 जनवरी को, मदुरई में माँ मीनाक्षी (पार्वती) के मंदिर परिसर में, मन्दिर के दर्शन करने के बाद, कैमरे में कैद दृश्य

17 जनवरी को, मधुरई पहुंचने पर होटल में, अपना समान रखा , वैसे तो वहां देखने के लिए काफी जगह है, लेकिन सबसे प्राचीन मीनाक्षी(पार्वती) का मंदिर है और जिला प्रशासन की तरफ से,17 जनवरी को सांय 5 बजें, मीनाक्षी मंदिर देखने का समय निर्धारित किया गया और हम निर्धारित समय पर मन्दिर के प्रवेश द्वार पर पहुंचे और, वहां पर भी प्रोटोकॉल अधिकारी के द्वारा, आदिशक्ति माँ पार्वती के दर्शन करवाए गए, **मीनाक्षी, माँ पार्वती का ही नाम है और माना जाता है कि वैदेही नदी के तट पर बना ,यह मन्दिर लगभग 3000 साल पुराना है और ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव, सुंदरेश्वर रुप में, राजा मल्यध्वज की पुत्री मीनाक्षी यानी पार्वती से विवाह करने के लिए यहां पर आए थे।**

मीनाक्षी का अर्थ है, मछली, यानी मीन के समान। इस मन्दिर की भी, अद्भुत वास्तुकला और आर्किटेक्चर भी देखने लायक है और वैदेही नदी के किनारे पर बने, **इस मंदिर की अनूठी वास्तुकला और आर्किटेक्चर भी देखने लायक है और इस मीनाक्षी मन्दिर को, विश्व के नए 7 अजूबों के लिए नामित किया गया है।इस मन्दिर में 40 फुट ऊंचे 12 प्रवेश द्वार हैं और 14 गौपुरम और 985 स्तंभ हैं।** इस मंदिर में भी लाखों भक्त हर रोज दर्शन करने के लिए आते हैं और हमें, माँ मीनाक्षी की कृपा से, बड़े ही मनोहारी और दिव्य दर्शन करके, असीम आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति हुई।

18 जनवरी को हमारी एक बजे की फ्लाइट थी और सुबह मदुरई से लगभग 10 किलोमीटर दूर भगवान शिव के मन्दिर के दर्शन किए और उसके पश्चात, 1बजे की फ्लाइट से लगभग 4 बजे हम मदुरई से मुम्बई पहुंचे और मुम्बई से कार के द्वारा सीधे 7 बजे नाशिक पहुंचे। **रामेश्वर ज्योतिर्लिंग और रामेश्वर धाम, यात्रा ने, मेरे मन को, आध्यात्मिकता की एक नई ऊर्जा से भर दिया और यह धार्मिक यात्रा मेरे जीवन में एक अमिट छाप छोड़ गई और इसके साथ ही, मुझे देश में स्थित 12 ज्योतिर्लिंगों में से आज तक 6 ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है** और मुझे विश्वास है कि, भगवान शिव की असीम कृपा से बाकी के ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने का सुअवसर भी मिल सकेगा।

रामेश्वर को जोड़ने वाली, रेलवे लाइन और समुद्र का विहंगम दृश्य , 2 किलोमीटर लम्बे पंबन ब्रिज पर को कैमरे में कैद किया गया है

इसी आशा और विश्वास के साथ , भगवान शंकर का, एक अनन्य और निरीह भक्त। विपुल धन्यवाद।

सम्पादक, राम भगत शर्मा।

अनुकरणीय मिसाल - बिना दहेज एवं वैदिक मंत्रोचार के साथ पाणिग्रहण संस्कार

दहेज प्रथा उन्मूलन हेतु महासभा द्वारा चलाये जा रहे अभियान के तहत बिना दहेज एवम वैदिक मंत्रोचार के साथ केवल कन्या और कलश मान्यता पर आधारित शादी का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पलसाना जिला सीकर निवासी सेढ़ुराम पंवार के सुपौत्र एवं सुनील कुमार जांगिड (संगठन मंत्री महासभा) के पुत्र तथा महासभा महामंत्री सांवरमल चोयल के भांजे **चिंरजीवी प्रद्युम्न** का दांतारामगढ़ निवासी स्व. बंशीधर पाटोदिया की सुपौत्री एवं मनोज कुमार पाटोदिया की पुत्री **सौ. का. भारती** का विवाह वैदिक मंत्रोचार के साथ **6 फरवरी 2026** को पलसाना ठाकुर जी मंदिर के महंत एवं निंबार्क रत्न श्री मनोहरशरण शास्त्री के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

शादी पूर्ण रूप से सात्विक, आध्यात्मिक एवं वैदिक परंपराओं को समाहित करते हुये सम्पन्न हुई। शादी का समारोह वर्तमान मे समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, अल्कोहल पार्टी, प्री वेडिंग सेरेमनी एवं दाढ़ी के साथ दूल्हा जैसी बुराइयों के प्रचलन को दूर रखते हुए केवल कन्या व कलश की मान्यता को साकार रूप देते हुए समाज एवं राजनीतिक पार्टियों के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। दिनांक 3 फरवरी 2026 को तिलक महोत्सव, भात एवं प्रीतिभोज का कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें भत्ती (मायरा) के रूप में महासभा महामंत्री सांवरमल चोयल एवं उनका संपूर्ण परिवार उपस्थित रहा। 4 फरवरी 2026 को वैदिक मंत्रो के साथ उपनयन संस्कार संपन्न हुआ।

पर्यावरण के प्रति सजकता दिखाते हुए विवाह निमंत्रण पत्र गाय के गोबर व गौमूत्र से निर्मित कागज पर ही छपवाया गया जिसको देखकर इस नवाचार की सभी ने प्रशंसा की एवं अनुकरणीय उदाहरण बताया। इस अवसर पर राजस्थान विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष रामगोपाल सुथार, संघ परिवार जिला सीकर के पदाधिकारी, भाजपा की पूर्व प्रदेश मंत्री मधु कुमावत, विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय प्रभारी अजयकुमार, दांतारामगढ़ व सीकर विधानसभा क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्तियों, दांतारामगढ़ विधायक प्रत्याशी गजानंद कुमावत और अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली, प्रदेश सभा और जिला सभा के अनेक पदाधिकारियों एवम समाज के वरिष्ठ तथा प्रबुद्ध जनों ने उपस्थित होकर वर वधू को आशीर्वाद प्रदान किया।

सह सम्पादक, प्रहलादराय जांगिड

सादगी की मिसाल: बिना दहेज के परिणय सूत्र में बंधे सौरभ संग मोनिका

आज के चकाचौंध भरे युग में सौरभ पुत्र ओमप्रकाश लदोईया, निवासी दूधवाखारा एवम मोनिका सुपुत्री श्री कृष्णकुमार रोसावा, निवासी खरतवासिया, तारानगर ने दहेज प्रथा जैसी कुरीति को दरकिनार कर एक नई मिसाल पेश की है। यह विवाह बिना किसी लेन-देन के **'दहेज मुक्त विवाह'** संपन्न हुआ। दूल्हे के परिवार ने स्पष्ट किया कि वे समाज को यह संदेश देना चाहते हैं कि बेटियाँ बोझ नहीं, बल्कि वरदान हैं। इस विवाह की पूरे जांगिड समाज ने सराहना की है। आस पास के गांवो मे भी इस कदम की सराहना की जा रही हैं। इस अवसर पर उपस्थित अतिथि, मास्टर मनीराम मोटियार, मास्टर लालचन्द बरवाड़िया, राजेन्द्र प्रसाद बरवाड़िया, मास्टर महावीर प्रसाद देम्मीवाल, भंवरलाल लदोईया, मनफूल लदोईया गौ रक्षक, देवकरण लदोईया, राजेन्द्र, बनवारीलाल, जगदीश प्रसाद, शिशपाल गढवाल दूधवाखारा, प्रेमकुमार रोसावा, लालचन्द, गणपतराम, मालाराम, भानीराम खरतवासिया, झाबरराम धनेरवा लालासर, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, तारानगर के अध्यक्ष, विनोद कुमार देम्मीवाल ने वर वधु को आशीर्वाद दिया एवम सभी ने संकल्प लिया कि वे भविष्य में ऐसी शादियों को बढ़ावा देंगे।

जिला अध्यक्ष जिला सभा चूरू

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली

श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर

श्री पी.एल.शास्त्री, गुड़गांव

श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली

श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली

श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर

श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर

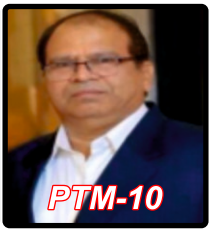

श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली

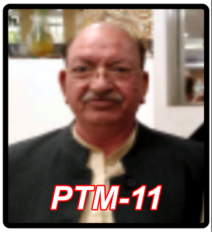

श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली

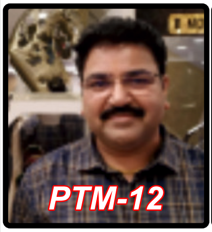

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली

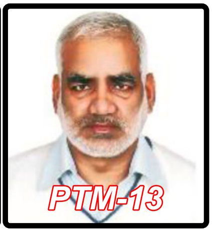

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली

श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई

श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव

श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता

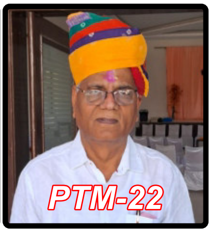

श्री सांवरमल जांगिड, सीकर

श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली

श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर

श्री ललित जड़वाल, अजमेर

श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई

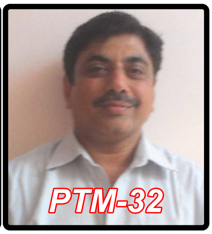

श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन

श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव

श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव

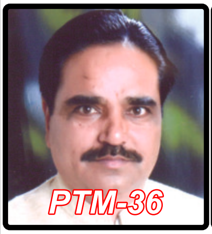

श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव

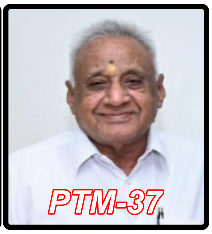

श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर

श्री किशोर जी मोखा, नागपुर

श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद

श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली

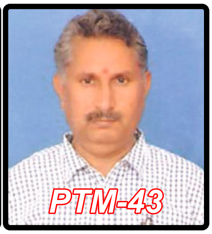

श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली

श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर

श्री सुरेश शर्मा, नीमच

श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत

श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर

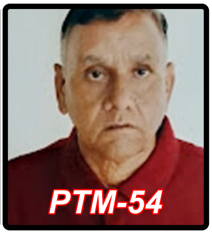

श्री गजानन जांगिड, जालना

श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर

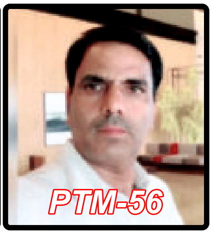

श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू

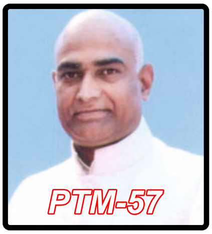

श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली

श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर

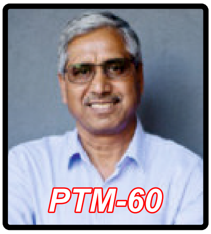

श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर

श्री यादराम जांगिड, दिल्ली

श्री बाबू लाल, बैंगलुरू

श्री अशोक दत्तु राम, अहमदाबाद

श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली

श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर

श्री राधेश्याम शर्मा, वापी

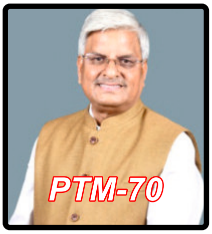

श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू

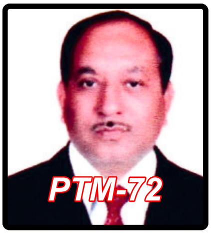

श्री गोपाल शर्मा, कोरबा

श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर

श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू

श्री भीमराज शर्मा, जयपुर

श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू

श्री भंवरलाल सुथार, गोवा

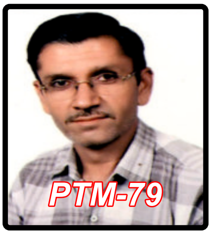

श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई

श्री शुभम शर्मा, कोरबा

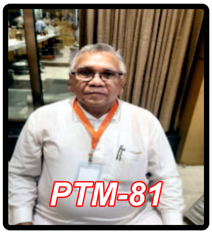

श्री नानूराम जांगिड, धुलिया

श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर

श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.

श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर

श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर

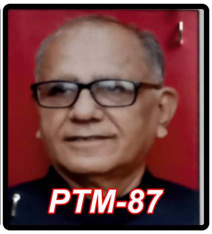

श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर

श्री अनिल शर्मा, इन्दौर

श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद

श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल

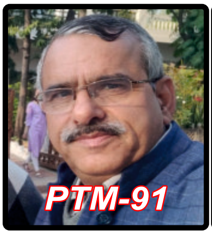

श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद

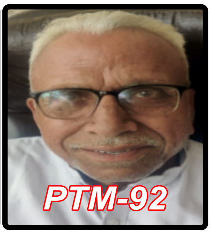

श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

श्री महावीर प्रसाद जांगिड, अहमदाबाद

श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर

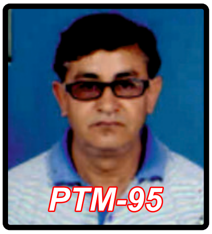

श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़

श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु

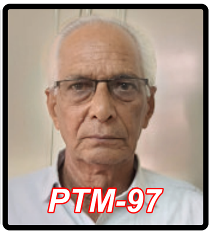

श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर

श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़

श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम

श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत

श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर

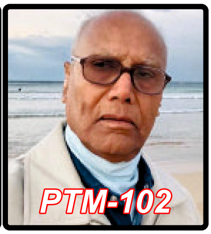

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत

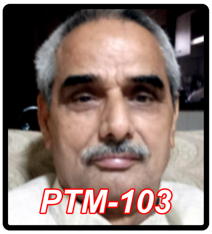

श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़

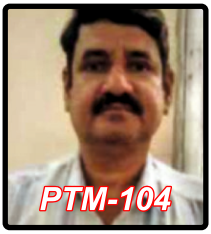

श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ

श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली

श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना

श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना

श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत

श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली

श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बैंगलुरू

श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली,

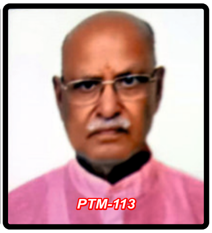

श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री कैलाश जांगिड, सूरत

श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

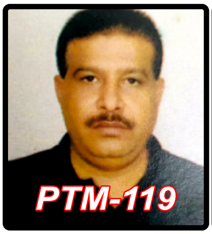

श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम

श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझुनू

श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़

श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली

श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू

श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत

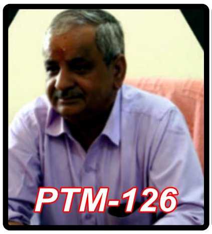

श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0

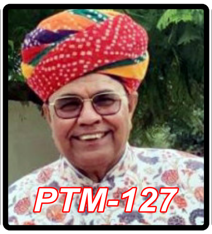

श्री मामराज मिस्त्री, सूरत

श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा

श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र

श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली

श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर

श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत

श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद

श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद

श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडू

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ बास) वलसाड

श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद

श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली

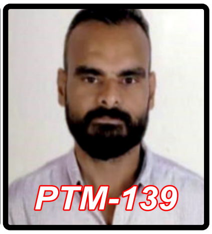

श्री राकेश जांगिड, सूरत

श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

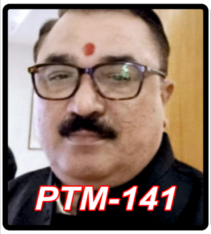

श्री सुभाष शर्मा, भरूच

श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

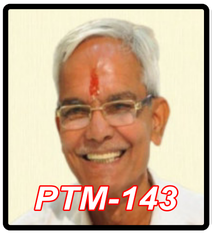

श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ

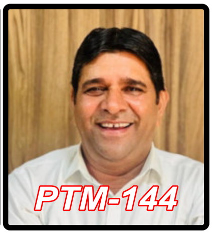

श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू

श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी

श्री पूरनमल जांगिड, सूरत

स्वर्गीय श्री नरेश शर्मा, भरूच

श्री बंशीधर जांगिड, भरूच

श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर

श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर

श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा

श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा

श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा

श्री मदन लाल सुथार, भरूच

श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच

श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू

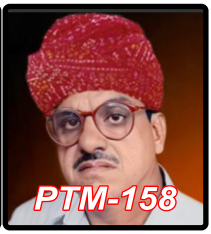

श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझुनूं

श्रीमती उषा बरड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बरड़वा, कोटा राज0

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

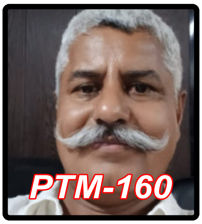

श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान

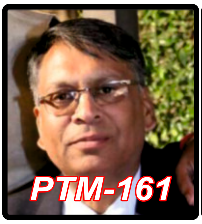

श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा

श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज0

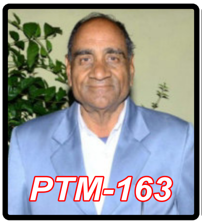

श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज0

श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छ0गढ़

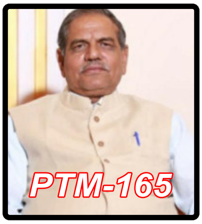

श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

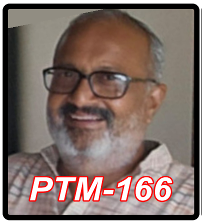

श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

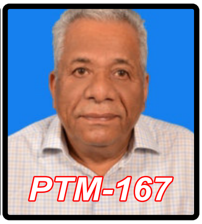

श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़

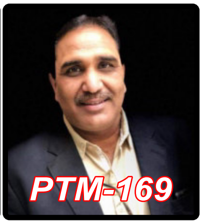

श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक

श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा

श्री राजकुमार जांगिड, सीकर, राज0

श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0

श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0

श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़

श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0

श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश

श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात

श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

श्री अरुण कुमार, आया नगर,दिल्ली

श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली

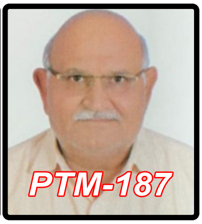

श्री श्रीराम जांगिड, बाजवा, वडोदरा, गुजरात

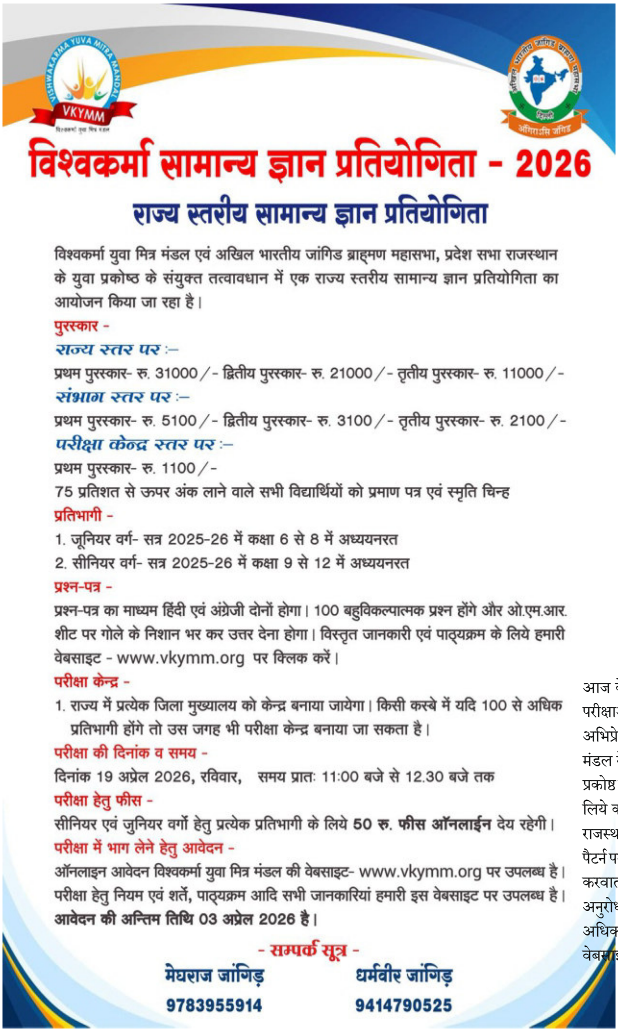

वर चाहिए

1. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin girl in Delhi **D.O.B-** 16/11/1994, Ht-5'3", **Permanent Residence:** Gurgaon, originally from VPO, Chang, Bhiwani, Haryana. **Educational Qualification:-**Graduation: B.A. (Hons.) Political Science – Maharishi Dayanand University (MDU), **Post Graduation:** M.A. Political Science – University of Delhi, Doctorate (Ph.D.): Lovely Professional University, **Job Details:**Profession: Assistant Professor, Organization: Lovely Professional University, Family Details: Father's Occupation: Own Business Mother's Occupation: Homemaker, **Gotra Self**-Krothwal, **Mother's Gotra:** Berwal, **Dadi's Gotra:** Khanderwal, **Nani's Gotra:** Selwal **Contact Details:** Father: 9990248595, Mama: 9312273823

आज के इस डिजिटल युग और प्रतिस्पर्धा के दौर में, बच्चों का शुरू से ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये तैयार करना जरूरी है। जो समाज अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए अभिप्रेरित करता है, वही समाज प्रगति कि ओर अग्रसर होता है। विश्वकर्मा युवा मित्र मंडल ने इसी महत्वपूर्ण उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ही, राजस्थान प्रदेश सभा के युवा प्रकोष्ठ के साथ मिलकर, अपने बच्चों को अभी से प्रतियोगी माहौल के लिये तैयार करने के लिये कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिये एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का पूरे राजस्थान राज्य स्तर पर आयोजन किया जा रहा है जिसमें परीक्षा का आयोजन ठीक उसी पैटर्न पर होगा जिस तरीके से आरपीएससी, यूपीएससी, एसएससी जैसी सरकारी संस्थाएं करवाती है। ओएमआर शीट के माध्यम से परीक्षा होगी। अतः सभी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है अपने समाज के बच्चों को इस परीक्षा में भाग लेने के लिये अभिप्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिये दिया हुआ पोस्टर देखें और विश्वकर्मा युवा मित्र मंडल की वेबसाइट www.vkymm.org देखें। विपुल धन्यवाद।

17 जनवरी को कोटा जिला सभा कार्यकारिणी और प्रतिभा समारोह का विहंगम दृश्य कैमरे की नजर में कैद किया गया है।

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

HYUNDAI
25
YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998

LATE SHREE
KANHAIYALAL SHARMA
(CHOYAL)

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road
Call : 9099978327

Satellite
Call : 9099978334

Parimal Garden
Call : 9099978328

Naroda
Call : 9099938777

TOYOTA

Authorised Toyota Dealer : **NARMADA TOYOTA**
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MG
MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31

Posted at:L.P.C. DELHI
R.M.S., Delhi-06

Registered With The Registrar of News Papers For INDIA, Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26 of Post without prepayment of postage

Mahindra Rise

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.

पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore

Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax" 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com

सेवा में

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 February 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

प्रेषक
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)